॥ श्री ॥

मेवाड़ * विषय सूची *



समरसिंह
महारावल रत्नसिंह
लक्ष्मणसिंह
अरिसिंह (द्वितीय)
अजयसिंह
हमीरसिंह (प्रथम)
क्षेत्रसिंह (खेता)
लक्षसिंह (लाखा)
मोकल
कुंभा (कुँभकर्ण)
उदयकर्ण
रायमल
संग्रामसिंह (सांगा)
रत्नसिंह
विक्रमादित्य
वनवीर
उदयसिंह
प्रतापसिंह (प्रथम)
अमरसिंह (प्रथम)
कर्णसिंह
जगतसिंह (प्रथम)
राजसिंह (प्रथम)



॥ श्री ॥

* चित्र सूची *




जो दृढ राखे धर्म को तिहि राखे करतार।

प्रस्तावना।

मेवाड एक ऐसा देश है कि जहा लगभग १३०० वर्ष से हिन्दूधर्म की रक्षा हो रही है। इस देश के इतिहास में कई ऐसी रोमाचक घटनाए मिलेंगी जिनको जानने की और सुनने की सब कोई इच्छा रखता है। इस देश के राजाओं ने अपने प्राण, धन, माल, देश की परवाह न कर अपना प्रण और धर्म निभाया। और जो इस राज्य का राज्यचिन्ह ही सूचित करता है "जो दृढ राखे धर्म को तिहि राखे करतार।" बापा खुमाण हमीरसिंह लाखा, कुभा, सांगा, प्रतापसिंह राजसिंह जैसे वीर पुरुष हुए जिन्होंने केवल बादशाह, शाहजादे, राजा महा राजाओं को ही शरण नहीं दिया बलिक श्रीनाथजी, द्वारकानाथ जी विट्ठलनाथजी आदि देवताओं को भी अपने राज्य में आश्रय देकर हिन्दुआ सूर्य कहलाये। इस देश में केवल पुरुष ही वीर नहीं हुए परन्तु पद्मनी कर्मावती, आदि स्त्रियों ने अपने सतीत्व धर्म की रक्षा कर जलती हुई आग में प्राणों की आहुति देकर सारे ससार का चकित कर अपना नाम अमर कर दिया। चित्तौडगढ जिसको हिन्दूधर्म का पवित्र तीर्थस्थान कहना चाहिए जहाँ के पत्थर लाखों आदमियों के खून से तर हो रहे हैं। और उसके टूटे, फूटे मन्दिरों, महलों, जलाशयों को देख कर उस भूमि का इतिहास जानने की सबको इच्छा

होती है। इस देश का सबसे प्रथम गत शताब्दी में कर्नल टाड ने इतिहास लिखा। उसके आधार पर बड़े २ विद्वानों ने राजपूत जाति की वीरता के कई इतिहास लिख डाले। परन्तु उसके बाद प्राचीन इतिहास में नवीन शोध अनुसार परिवर्तन होने लगा। तब महाराणा शंभूसिंह ने कविराजा श्यामदास और मेरे पिता पुरोहित पद्मनाथ को मेवाड़ का इतिहास बनाने का हुकुम दिया। थोड़ा कार्य प्रारंभ करने बाद मेरे पिता को अन्य कार्य से फुरसत न मिली। और कविराज श्यामलदास ने "वीर विनोद" मेवाड़ का इतिहास महाराणा सज्जनसिंह के देहान्त होने के समय तक का लिखा। नवीन शोध से उसके प्राचीन इतिहास में परिवर्तन मालूम पड़ा. इस पर महामहोपाध्याय रायबहादुर गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने शिलालेख, ताम्रपत्र, आदि से खोज कर बड़े परिश्रम से राजपूताने का इतिहास लिखा। उसी में से दो भाग में मेवाड़ का इतिहास प्रकाशित किया। परन्तु वह बड़ा और हरेक को अप्राप्य है। इसके अलावा स्कूल के डाइरेक्टर ने भी पढ़ाई के लिये एक छोटे इतिहास की आवश्यक्ता के लिये श्री जी हुजूर महाराणा साहिब से निवेदन किया। इसी अर्से में कपतान फील्ड साहब कमान्डेन्ट स्टेट फौसेंज ने भी पं० रतीलाल अंताणी और मुझको फौज में पढ़ाने के लिये सूक्ष्म इतिहास वीर घटनाओं से पूर्ण लिखने के लिये कहा। तब मैंने श्रीमान् महाराणा साहब के हुकुम से टाड राजस्थान, वीर विनोद, ओझा जी का राज-

पूताने का इतिहास और इम्पीरियल गजेटियर व मेरी जान कारी से यह सूक्ष्म इतिहास लिखकर श्रीमानों के चरणों में अर्पण' किया। आशा करता हूँ अगर इसमें कोई त्रुटि रह गई हो तो पाठक लोग क्षमा कर मुझे सूचना देवें कि नवीन संस्करण में शुद्ध हो जाय।

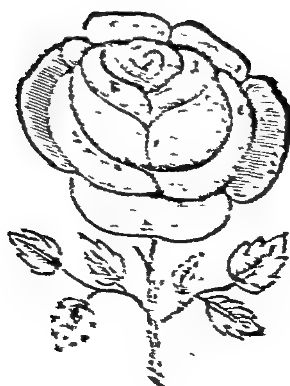
देवनाथ पुरोहित।

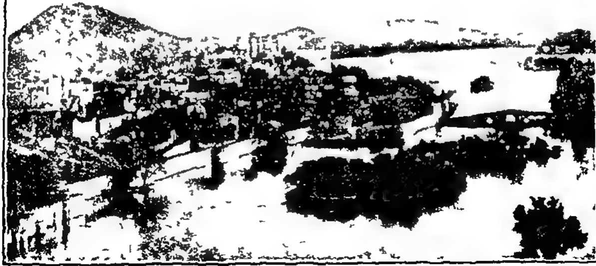
---

१ ग्रन्थकर्त्ता देवनाथ पुरोहित के पूर्व पुरुष दिल्ली अजमेर के प्रसिद्ध सम्राट् पृथ्वीराज चौहान के पुरोहित थे। पृथ्वीराज तूमर की बहिन पृथुबाई का विवाह महारावल सामन्तसिंह के साथ हुआ तब पुरोहित गुरूराम उनके साथ मेवाड़ मे आये तीन तूमर पुरुष जो पृथुबाई के साथ आये वह तो यहीं मेवाड़ में रह गये और पुरोहित गुरूराम पीछे चले गये। और पृथ्वीराज की सन्तान के साथ रहे। वि० सं० १५८४ ई० सन् १५२७ में महाराणा सांगा और बाबर बादशाह के दर्मियान प्रसिद्ध बयाना (फतहपुर सीकरी) की लड़ाई हुई तब पूर्व की तरफ से राजोर का चहुवान रावत माणकचन्द्र आया उसके साथ पुरोहित बागेश्वर भी आया और युद्ध में लड़कर मारा गया। माणकचन्द्र क ान को (कोठारिये की) जागीर मिली। उसके साथ बागेश्वर की सन्तान भी उसकी पुरोहिताई का काम करती रही। वि० सं० १५९४ में कोठारिये के रावतखान ने कुंभलगढ़ पर महाराणा उदयसिंह को गद्दी पर बिठाया। तब राज्य के सब कर्मचारी चित्तोड़ पर बनवीर

के पास थे उस वक्त अपने विश्वासयोग्य पुरुषों को महाराणा की सेवा में रखा। उन में पुरोहित लाडूराम के छोटे भाई राम को भी महाराणा साहब की सेवा में रखा तब से पुरोहिताई का काम छोड़ कर राजकीय सेवा उसके वंशज करने लगे।

इस वंश में पुरोहित जगन्नाथ, हरनाथ: दीनानाथ, रामनाथ, श्यामनाथ, पद्मनाथ अक्षयनाथ आदि प्रतिष्ठित पुरुष हुए। पद्म नाथ के ३ पुत्र शंभूनाथ, मथुरानाथऔर देवनाथ (ग्रंथकर्त्ता) हुए। देवनाथ के दो पुत्र विजयनाथ और शिवनाथ विद्यमान हैं। और अक्षयनाथ के सुन्दरनाथ, स्वरूपनाथ और शोभानाथ हुए इस वंश में राज्य काराह रस्म मर्यादा का कार्य पुश्तों से चला आता है। इसी कारण इतिहास में मेरी कुछ प्रवृत्ति हुई।





GENERAL VIEW U[illegible]

मेवाड़ का संक्षिप्त इतिहास

संक्षिप्त भूगोल

उदयपुर (मेवाड) राज्य राजपूताने के दक्षिणी विभाग में, २३ ४६ से २५ २८ उत्तर अक्षांस और ७३०१ से ७५ ४६ पूर्व देशान्तर के बीच फैला हुआ है। इसका क्षेत्रफल १२६६१ वर्ग मील, आबादी वि० स० १६८७ ईस्वी सन् १६३१ की मनुष्य गणना के अनुसार १५६६६३१ मनुष्यों की है। और राज्य की आमदनी ६६ लाख वार्षिक रुपये की है।

सीमा—मेवाड के उत्तर में अजमेर, मेरवाडा, पश्चिम में जोधपुर और सिरोही, नैऋत्यकोण में ईडर, दक्षिण में डूंगरपुर, बांसवाडा और प्रतापगढ, पूर्व में ग्वालियर, टोंक के जिले और बूंदी कोटा राज्य, ईशान में देवली के निकट जयपुर का इलाका आगया है।

पहाड—अर्वली पहाड (आडावला) की श्रेणियां, अजमेर और मेरवाडे में होती हुई दीवेर के निकट मेवाड में मिली हैं। कुंभलगढ पर इनकी उँचाई ३५६८ और वहां से थोडी दूर

आगे ओडां ग्राम के पास जरगा की चोटी ४३१५ फीट ऊँची है। ये श्रेणियां सारे पश्चिमी तथा दक्षिणी हिस्से में फैल गई हैं। दूसरी पर्वत श्रेणी राज्य के ईशानकोण में देवली के पास से शुरू होकर भीलवाड़े तक चली गई है। तीसरी श्रेणी देवली के पास से निकल कर राज्य के पूर्वी हिस्से में जहाजपुर, मांडलगढ़, बिजोलिया, भैंसरोड़गढ़, और मेनाल में होती हुई चित्तौड़ से दक्षिण तक पहुंची है। इसकी उंचाई २ हजार फुट से कुछ अधिक नहीं है।

नदियां—मेवाड़ में साल भर बहने वाली नदी चंबल के सिवा कोई नहीं है। यह कुवाखेड़े के पास होकर मेवाड़ में आती है। और भैंसरोड़ से आगे कोटा राज्य में घुसी है। थोड़े ही मील तक मेवाड़ में बही है।

बनास कुंभलगढ़ से थोड़ी दूर उदावड़ से निकल कर नाथद्वारे के पास होती हुई मांडल के पास से बही है। वहां डांगोत गांव के पास बेड़च एवं मेनाल नदी इसमें आ मिली हैं। उस स्थान को "त्रिवेणी" कहते हैं।

बेड़च गोगुन्दा से निकल कर उदयसागर में गिरी है। वहां से उदयसागर के नाले के नाम से निकल कर मेवाड़ में आगे जाने से बेड़च कहलाती है। चित्तौड़ के पास गंभीरी नदी भी इसमें आ मिली है। और डींगोत गांव के पास ये दोनों बनास में मिली हैं।

गम्भीरी नदी मालवे की तरफ से बहती हुई चित्तौड के किले के नीचे बेडच में आ मिली है। यह सजल नदी है।

कोठेसरी अर्वली पहाडियों से निकल नदराय गाव से २ मील का दूरी पर बनास में आ मिली है।

खारी नदी दीवेर की पहाडियों से निकल देवगढ के पास होकर हुरडा के पास मेवाड की उत्तरी सरहद में बहती हुई देवली के पास बनास में जा मिली है।

जाखम नदी छोटी सादडी के इलाके से निकल कर प्रतापगढ के इलाके धधरयावद के पास होकर सोम नदी में आ मिली है।

सोम नदी भोमट में बीचावेडा के समीप से निकल कर डूगरपुर की सीमा में बहती हुई मही में मिल गई है। इनके सिवा मेवाड में मेनाल आदि कई छोटी नदिया हैं। यहा पर स्थानाभाव से नहीं लिखी हैं।

तालाब—मेवाड में छोटे-बडे कई तालाब हैं। उनमें मुख्य ये हैं—राजसमुद्र, जयसमुद्र, उदयसागर पिछोला, फतहसागर बडी का तालाब करेडा, माडल, सरदारगढ, कपासन, अगून्या ईंटूँडा, घासा, गागेडा, डीडोली, गलूड, टूँकरवाड, गोवटा, और मदार। इनमें जयसमुद्र, राजसमुद्र, उदयसागर पीछोला, फतहसागर, और करेडा आदि तालाब बडे हैं। इनमें जयसमुद्र ६ मील लम्बा और ६ मील चौडा है।

संसार में मनुष्यों के बनाये हुए तालावों में सब से बड़ा गिना जाता है। इसके बीच में कई टापू हैं। उनपर गाँव बसे हैं तथा खेती भी होती है।

जंगल—मेवाड़ में आम, इमली, महुआ, सागवान, धामण, टीमरू, (आबनूस) बड़, पीपल चंदन. नीम, शीशम, खैर, गूलर, जामुन खजूर, खेजड़ा, जल जामुन, बंबूल, रूजड़ा, आंवला, बहेड़ा, धौ, हलद, हिंगोटा, कचनार, काला सिरस, सालर, मोखा, सेमल गूग्गल, गूँदी, गोदल, कड़ाया, आसा-पाला, आकोल, धवाली, गोगचा ताड़, आंवल, बांस आदि के पेड़ और कई प्रकार की जड़ी बूटी है।

जानवर—जंगली जानवरों में सुनहरी नाहर (बाघ) अदबेसरा (बघेरा) भेड़िया (वरील्याली) सूअर रीछ, सांभर, चीतलरोज (नीलगाय), हिरन, भेड़ला, करू, खरगोश, वनविलाव, लोमड़ी, गीदड़, जरख स्यागोश, बीजू, नोलिया, मुश्कविलाय बूटार और बन्दर आदि होते हैं।

पक्षी—पक्षियों में गीध चील शिकरा बाज तिरमच्छी मोर, तोता. कोयल कव्वा. मुर्गा. तीतर कावर कबूतर, चिड़िया बटेर. लावा. हरियल. गुरगुल फाकता, बुलबुल, धनन्तर. लालमणि, कालचड़ी, रूपारेल, जंगलीमुर्गा पपीहा, गरूड़, आदि कई प्रकार के पक्षी होते हैं।

जल के पक्षी—जल के पक्षियों में ढीच सारस, बगुला, हजा, कुरज, गरुड़ (हवासील) टीटोडी, बतक जल-मुर्गा, ग्राट, मारिया, सरद्धा, जल कागली, डुगार, किलकिला, डुबकी आदि कई प्रकार के होते हैं।

जल जन्तु—जलजन्तु, तालाब एव बडी २ नदियों में मगर, कछुआ, घडियाल जल मानस, सैकडे मच्छलियें, बाम, सावल रोहू आदि होते हैं।

विषेले जन्तु—सर्प सुर्ख, हरे काले, ककरोल्ये, कोडाल्ये ढोंढु, धामण, उडणो, घोडा पिलग, चीती (अजगर) दुमोही आदि सर्प, बिच्छु, नागरनामणी, चोपगा सर्प, गिरगट, छिपकली, कनखूला और हालनबिया आदि विषैले जन्तु होते हैं।

खानें—लोहा, चान्दी, शीशा, ताबा, तावडा भोडल, गेरू और खडी की खानें है। राजनगर में सफेद संगमरमर की व नाले पत्थर की, चित्तोड जिले में मानपुरा, सेतो सागा, मादल देह में काले व भूरे पत्थर और मगरा जिले में तथा ऋषभदेव जी में पलेवे की खे नें हैं। इनके अलावा मेडें तथा खमनार जिले की पहाडियों में जगह २ सफेद, काले, और नीले पत्थर निकलते है।

वर्षा—यहां (उदयपुर में) वर्षा की औसत २४ इंच है। और कुभलगढ-पहाडी इलाके में प्राय अधिक वर्षा होती है।

रेल—उदयपुर से चित्तौड़गढ़ तक ६९ मील "उदयपुर चित्तौड़ रेलवे" (U. C. R.) और मावली स्टेशन से मारवाड़ जंकशन तक जाने वाली रेल कामला तक तो जारी हो चुकी है और आगे भी इसका काम चल रहा है।

सड़कें—उदयपुर से चित्तौड़, नाथद्वारा, खेरवाड़ा, जयसमुद्र, गोगुन्दा होकर सायरा तक, चित्तोड़ जिले में वेगम तक, भीलवाड़े से बीगोत, मांडलगढ तक, उदयपुर से भींडर होकर सादड़ी तक मोटर सर्विस जारी है।

सिक्के—मेवाड़ में प्रचलित नया चित्तोडी रुपया है। और बत्तीस में चांदोड़ी सिक्का है। चित्तोड़ी सोलह आने का, इसकी अठन्नी, चोअन्नी, दुअन्नी और एक आनी ये सब चांदी की नई प्रचलित हैं। और चांदोड़ी बारह आने का राज्य में, और बाजार में चांदी के भाव से चलता है। इसकी भी अठन्नी, चोअन्नी, दुअन्नी, और एक आनी चलती है। उदयपुर में ढींगले तांबे के एक आने के १२, और मेवाड़ में अभी तक विशेषतर भीलाड़ी पैसे तीन ही चलते हैं।

तौल—उदमपुर में मंडी का तोल १०८ रुपये भर का १ एक सेर और मेवाड़ में पक्का तौल इसी हिसाब से और कच्चा ५४ भर का सेर है।

डाक-तार—चिट्ठियें, पारसल; गवर्नमेंट के डाकखाने

द्वारा जाती हैं। और जिलों में अदालतों की व दूसरी सामग्री डाक द्वारा चिट्ठियां एवं रजिस्ट्री भी जाती हैं। तार गवर्नमेंट के तारघर से ही उदयपुर, नाथद्वारा, खेरवाडा, चित्तौडगढ़ भीलवाडा, देवगढ की व सब रेलवे स्टेशनों को जाते हैं।

फौज—कवायद फौज १५५४३ पैदल, और ५०७ सवार बेकवायद ८३३ पैदल, १२ सवार और ५१७ पुलिस है।

किले—मेवाड में छोटे-बडे कई दुर्ग हैं। उनमें मुख्य कुंभलगढ, चित्तौडगढ़ और मांडलगढ है।



उदयपुर (मेवाड़) का संक्षिप्त इतिहास।



उदयपुर के महाराणा अयोध्या के प्रसिद्ध महाराजा रामचन्द्र जी के बड़े पुत्र कुश के वंश में सूर्य्यवंशी शिशोदिया राजपूत हैं। यह (वंश) भारत के राजपूत राजाओं में पद और प्रतिष्ठा में सब से उच्च है। इस वंश के राजाओं ने धन दौलत की परवाह न कर अपने अमूल्य प्राणों की बाजी लगा कर सदैव धर्म की रक्षा की और हिन्दुआ सूर्य्य कहलाये। इनका राज्यचिन्ह इनके मन्तव्य को सूचित करता है कि "जो दृढ राखै धर्म्म को तिहि राखै करतार"। इस वंश का यह अभिमान है कि इन्होंने कितना ही नुकसान उठाया परन्तु किसी भी मुसलमान बादशाह को अपनी बेटी नहीं व्याही। कर्नल टाड़ के अनुसार अयोध्या से उत्तर लाहोर में, और फिर वहां से दूसरी शताब्दी में कनकसैन सौराष्ट्र में गये। और वहां पर वल्लभा के राज्य की स्थापना की। दूसरे इतिहासकारों ने इनका दक्षिण में होकर बाद सौराष्ट्र में जाना लिखा है। कई वर्षों तक इनकी सन्तान ने वल्लभीपुर में राज्य किया वहां पर विदेशी शत्रुओं के आक्रमण हुए। उसमें राजा शिलादित्य आदि सब मारे गये। और शिलादित्य की एक रानी पुष्पावती आबू के पहाड़ों में अंबाभवानी की यात्रा को



महारावल बापा कालभोज

गई। वह गर्भवती थी। वहां पर उसके पुत्र हुआ। उसको छोड़ कर वह सती हो गई। इसका नाम गुहिल (गुहादित्य) था। इसने भीलों को विजय कर ईडर का राज्य कायम किया। यह बड़ा प्रतापी हुआ। इसी के नाम से यह वंश गुहिलोत वंश कहलाया।

१ गुहिल (गुहादित्य)

यही गुहिल मेवाड़ के राज्यवंश के मूल पुरुष हुए। ये बड़े प्रतापी राजा हुए। आगरा तक के देशों पर इनका राज्य था। वि० सं० १६२६ ई० सन् १८६९ में इन्हीं गुहिल के नाम के दो हजार चांदी के सिक्के आगरे के पास मिले हैं।

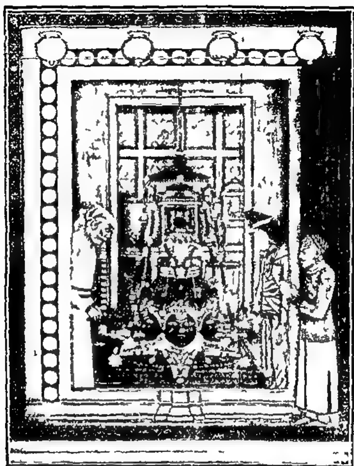
२ भोज ३ महेन्द्र प्रथम ४ नाग (नागदित्य)

५ शील (शिलादित्य)-यह वि० सं० ७०३ ई० सन् ६४६ में मौजूद थे। ६ अपराजित- ये वि० सं० ७१८ ई० सन् ६६१ में विद्यमान थे। ७ महेन्द्र द्वितीय।

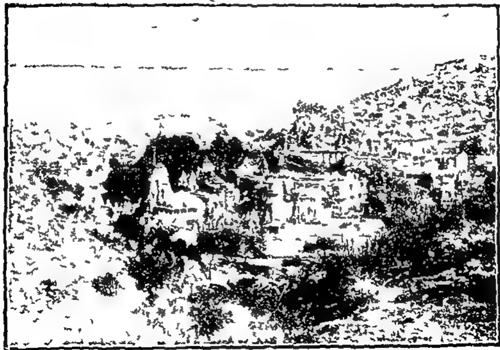
८ कालभोज प्रसिद्ध बापारावल।

ईडर में भीलों ने उपद्रव कर इनके पिता को मार डाला उस वक्त यह कालभोज बापारावल बालक थे। इनकी माता इनको अपने पुरोहित को सौंप कर सती हो गई। और जवान होने तक बापारावल का पालन-पोषण पुरोहित ने किया। जब कुछ होशियार हुए तब पुरोहित ने गाय चराने का कार्य सिपुर्द किया, उन गायों में एक गाय जब हमेशा

शाम को घर आवे तब उसके आंचल से दूध न निकले। और इसका दोष बापारावल पर ही लगाया जावे। तथा उपालंभ भी दिया जावे। ये बड़ी चिंता में पड़े और उसकी तलाश करने लग गये कि इसका दूध कौन निकाल लेता है। वहां नागदे से कुछ दूर पहाड़ी में एक नाला बहता था जिसको कुटिला नदी कहते थे। और वहां एक हारीत नाम का ऋषि तपस्या करता था। बापा भी उनकी सेवा करते थे। एक दिन उन्हों ने अपनी चिन्ता का हाल हारीत से कहा—यह सुन एक दिन हारीत ने कहा कि वह गाय एक बांस के थूंहे में शिव लिंग पर दूध की धारा दे रही है। यह देख बापारावल को आश्चर्य हुआ। यह शिवलिंग साक्षात् एकलिंगजी ही थे फिर बापा ने इनकी सेवा करना शुरू की। धीरे २ बापा को अपने कुल का ज्ञान होने लगा कि मैं ब्राह्मण नहीं राजा का लड़का हूँ। पीछे वे अपने मामा राजा मानमोरी के पास चित्तौड़ को गये। वहां उनको बड़े मान-पान से रखा गया। इन्हीं दिनों में सिंध की तरफ से मुसलमानों का हमला हुआ। राजा मानमोरी ने अपने सरदारों को उनका मुकाबला करने का हुकुम दिया। परन्तु बापा की ईर्ष्या के कारण सब इन्कार हो गये। तब बापा को जाने का हुकुम दिया। बापा ने मुसलमानों को मार भगाया। इससे बापा का प्रभाव बढ गया। और सब बापा से मिल गये। कुछ दिनों बाद बापा ने चित्तौड़ पर अधिकार कर लिया वि० सं० ७९१ ई० सन् ७३४ में चित्तौड़ पर



श्री एकलिंग जी



कैलाशपुरी श्री एकलिंग जी का मन्दिर

अधिकार कर फिर धीरे धीरे अपने पिता के सारे राज्य पर अधिकार किया और खुरासान तक के देश विजय किये सारे हिन्दुस्थान में अपना यश और कीर्त्ति फैलायी। अपने नाम का सोने का सिक्का चलाया। जिसमें सूर्य, छत्र, चमर, गाय, शिवलिंग बापा लिखा हुआ था। टाड साहब बड़वा भाटों की ख्यात के अनुसार इन बापा का खुरासान विजय कर वहीं मरना लिखते हैं। परन्तु यह गलत है, यह खुरासान विजय कर पीछे नागदे में आये और वि० सं० ८१० ई० सन् ७५३ में सन्यस्त ग्रहण कर शरीर छोड़ा और एक लिंगजी के पास कराड़ी में समाधि दी गई, जहां उनका समाधि मंदिर मौजूद है।

ऐकलिंग जी और हारीत ऋषि की कृपा से इनको पीछा राज्य मिला और प्रताप बढ़ा। इसलिये ऐकलिंग जी को मालिक मान आप उनके दीवान बन राज्य करने लगे। इसी कारण से राज्य का प्रत्येक पट्टे परवाने, हुकुम पर सब से ऊपर श्री ऐक लिंग जी लिखा जाता है। और महाराणा दीवान कहलाते हैं। जब महाराणा ऐकलिंग जी के मंदिर में दर्शन करने जाते हैं। तब अहाते में प्रवेश करते ही सोने की छड़ी धारण कर मंदिर के सभामंडप तक जाते हैं। हारीत ऋषि को गुरू मान कर उसके चेले को ऐकलिंग जी का गोस्वामी (पुजारी) नियत किया। उन्हीं के चेले अभी तक यहां के गुसाईं जी कहलाते और वहीं मठ में रहते हैं। कालभोज बापा ने ऐकलिंग जी का मंदिर और भोजोला (इन्द्र सरोवर) तालाब बनवाया। कई इतिहासों में

शिलादित्य को, एवं वीर विनोद में महेन्द्र द्वितीय को वापा माना है। लेकिन वास्तव में यहां कालभोज ही वापा थे। क्योंकि वापा को खुमान का पिता होना लिखा है और खुमान कालभोज के ही पुत्र थे। इसके अतिरिक्त यह बात प्रसिद्ध है कि वापा ने ऐक लिंग जी का मंदिर बनवाया। यही बात टाड़ साहब ने भी लिखी है कि "एकलिंगजी के मंदिर के निर्माता कालभोज थे"। बड़वा भाट लिखते हैं कि "इनके २४ वें पुत्र भीमसिंह दक्षिण में गये थे"। सेंट्रल इंडिया में बरवानी के राणा कहते हैं कि हम वापा के लड़के ढाक के वंश में हैं।

९ खुमाण प्रथम १० मत्तट ११ भर्तृ प्रथम।

१२ सिंह—इन रावल सिंह के छोटे भाई ईशान भट्ट व उनके वंश के चाटसू के आस पास के देश के राजा हुए।

१३ खुमाण द्वितीय—

यह बड़े प्रतापी राजा हुए, उत्तरी हिन्दुस्तान के सब राजा इनको अपना शिरोमणि मानते थे। चित्तोड़ पर बगदाद के खलीफ़ा अलमाम् ने हमला किया था तब सबने मिलकर इनकी सहायता की थी। और खलीफा को पराजित कर भगा दिया।

१४ महायक १५ खुमाण तृतीय १६ भर्तृ भट्ट द्वितीय।

१७ भल्लट—

यह वि० सं० १००८-१० ई० सन् ६५१ ५३ में विद्यमान थे। इन्हों ने अहाडको राजधानी बनायी। अहाडा में रहने से अहाडा कहलाये, डूगरपुर वाले अभी तक अहाडियां कहलाते हैं।

१८ नरवाहन।

यह वि० स० १०२८ ई० सन् ७६१ में विद्यमान थे।

१६ शालिवाहन।

इनके वंश के कितने ही के अधिकार में मारवाड का इलाका था। वहा से कितने ही गुहिलवंशी अन्हिलवाडा गुजरात के सोलखियों की उन्नति के समय वहा जाकर सोलखियों की सेवा में रहे। गुहिलवंशी साहार का पुत्र सहजिग अन्हिलवाडे के चोलुक्य राजा सिद्धराज जयसिंह, का अगरक्षक नियत हुआ। और उसको काठियावाड में, प्रथम ही प्रथम जागीरी मिली। तब ही से मेवाड के गुहिल वंशियों की संतान का यहा प्रवेश हुआ। सहजिग के दो पुत्र थे १ मुलूक २ सोमराज। उन में से मुलूक अपने पिता का उत्तराधिकारी हुआ। उसके वंश में काठियावाड में भावनगर पालीताना, लाठी, वला आदि और रेवाकाठा और गुजरात में राज्य पीपला का राज्य है।

२० शक्तिकुमार।

यह वि० सं० १०३४ ई० सन् ६७७ में विद्यमान थे। २१ अंबाप्रसाद २२ शुचिवर्म २३ नरवर्म २४ कीर्ति वर्म २५ योगराज २६ वैरट २७ हंसपाल २८ वैरीसिंह।

२६ विजयसिंह।

यह वि० सं० ११६४-८४ ई० सन् ११०७-२७ तक विद्यमान थे। इन्हों ने मालवे के राजा उदयादित्य की कन्या से विवाह किया। जिससे एक लड़की हुई। उसका नाम आल्हनदेवी था। उसकी शादी चेदी के गयकर्ण कलचूरी के साथ की गई।

३० अरिसिंह प्रथम ३१ चौंडसिंह ३२ विक्रमसिंह

३३ कर्णसिंह व रणसिंह।

इनके पुत्र क्षेमसिंह, माहप और राहप हुए। क्षेमसिंह चित्तौड़ पर रावल हुए। माहप तथा राहप शिशोदे जाकर राणा हुए। कर्णसिंह ने आहोर (कमलनाथ भोमट) में गढ़ बनवाया।

३४ क्षेमसिंह।

इनके समकालीन शिशोदे में राणा राहप और माहप हुए। राहप ने मंडोवर के मोकल पड़िहार को परास्त कर उसका राणा पद और इलाका छीन लिया। राहप ने शिकार में धोखे से कपिल मुनि को मार डाला। उसकी याद गार में

केलवाड़े के पास-कपिलकुंड बनवाया। इन राहप को कुष्ट रोग हुआ था जिसका इलाज सांखेरान के एक यति ने किया। जिससे आराम हो गया। परन्तु मेवाड़ में राजा शराब नहीं पीते थे किन्तु राहप को औषध में शराब दिया गया। यह मालूम होते ही राहप ने शीशा गर्म कर पी लिया। जिससे उनका देहान्त हो गया। और उसी दिन से उनकी सन्तान शिशोदिया कहलाई। कई लोग शिशोदे में रहने से ही इनको शिशोदिया कहते हैं। इन्हीं राहप के छोटे पुत्र रामसाद के वंशज बम्बई अहाते के सूरत जिले में धरमपुर के राणा हैं।

३५ सामतसिंह।

इन्हीं ने गुजरात के राजा अजयपाल को परास्त किया। इस युद्ध से यह कमजोर होगये। और सरदारों के साथ बुरा बर्ताव भी किया जिससे सब नाराज होगये। यह मौका देख कर नाडोल के कीतू (कीर्तिपाल) चौहान ने हमला कर सब मेवाड़ छीन ली। तब यह निराश होकर बागड़ में गये। और वहाँ डूंगरपुर का राज कायम किया। अजमेर के राजा पृथ्वीराज द्वितीय चौहान की बहिन पृथाबाई का विवाह इन्हीं समतसिंह के साथ हुआ। दूसरे इतिहासों में समरसिंह के साथ होना लिखा यह गलत है। समरसिंह और पृथ्वीराज के समय में प्रायः सौ वर्ष का अन्तर है। इससे समरसिंह का

समय नहीं मिलता है। इनके समकालीन शिशोदे में नरपति राणा हुए।

३६ कुमारसिंह।

यह सामंतसिंह के भाई थे। इन्हों ने अहाड़ व अपना सारा पितृक राज्य वापिस लिया। इनके समकालीन शिशोदे में राणा दिनकर्ण हुए।

३७ मथनसिंह—

इनके समकालीन शिशोदे में राणा यशकर्ण हुए।

३८ पद्मसिंह।

इनके समकालीन शिशोदे में राणा नागपाल हुए।

३६ जैत्रसिं—

रावल जैत्रसिंह वि० सं० १२७० से १३०६ ई० सन् १२१३ से १२५३ तक विद्यमान थे। इनके समय में वि० सं० १२८० ई० सन् १२२३ में सिंध की तरफ से खवास खां की फौज ने हमला किया उसको इन्होंने परास्त किया। इनके समय में दिल्ली सुल्तान शमशुद्दीन अलतमश ने मेवाड़ पर चढ़ाई की। उसको इन्होंने परास्त किया। परन्तु इस लड़ाई में नागदा और अहाड़ दोनों बरबाद हो गये। तब इन्हों ने चित्तौड़ को राजधानी बनाई।

वि० स० १२६६ ई० सन् १२४२ में इन्हों ने गुजरात के राजा त्रिभुवन नारायण को परास्त किया। नाडोल को नष्ट-भ्रष्ट कर सामतसिंह की पराजय का बदला लिया। इस समय ये बड़े पराक्रमी राजा थे। इन्हों ने मालवे के परमार राजा जयसिंह को फतह कर अर्थूणा को वागड में मिलाया।

वि० स० १३०५ ई० सन् १२४८ में दिल्ली के सुल्तान नासिरुद्दीन महमूद के डर से उसका भाई जलालुद्दीन भाग कर मेवाड में आया। सुल्तान ने उसका पीछा किया। परन्तु महारावल ने उसे परास्त कर दिया। इससे वह पीछा दिल्ली लौट गया। इनके समकालीन शिशोदे में राणा पूर्णपाल हुए।

४० तेजसिंह—

यह वि० स० १३१७-३० ई० सन् १२६१-७३ तक विद्यमान थे। इनके समकालीन शिशोदे में राणा पृथ्वीपाल हुए।

४१ समरसिंह—

यह वि० स० १३३०-५६ ई० सन् १२७३-१३०२ तक विद्यमान थे। वि० स० १३५६ ई० सन् १२९९ में दिल्ली के बादशाह अलाउद्दीन खिलजी के भाई उलुग खा ने मेवाड पर चढाई की। उसको इन्हों ने पराजय किया। इनके छोटे पुत्र कुंभकर्ण के वंश में हिमालय में नैपाल का स्वाधीन राज्य है।

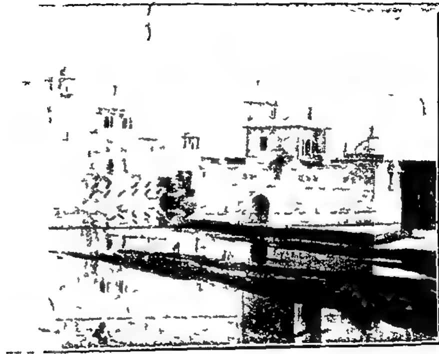
इनके समकालीन शिशोदे में राणा भुवनसिंह, भीमसिंह,

और अयसिंह हुए। भुवनसिंह के छोटे पुत्र चन्द्रा के वंश में रामपुरा के चन्द्रावत (मालवा—इन्दौर) में हैं।

कर्नल टाड ने पृथ्वीराज रासे के आधार पर समरसिंह का पृथ्वीराज के साथ कनार की लड़ाई में शहाबुद्दीन गौरी से लड़ कर मारा जाना लिखा है वह गलत है। पृथ्वीराज और शहाबुद्दीन की लड़ाई हुई उसके १०० वर्ष बाद समरसिंह हुए।

४२ महारावल रतनसिंह—

इनके गद्दी बैठने के थोड़े ही दिन बाद वि० सं० १३६० ई० सन् १३०३ में दिल्ली के बादशाह अल्लाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़ पर हमला किया। इस लड़ाई का कारण ऐसा कहते हैं कि रावल रतनसिंह की रानी पद्मनी बहुत रूपवान थी, उसको अल्लाउद्दीन ने मांगी। यह बात महारावल ने मंजूर नहीं की। और साफ इन्कार कर दिया इस पर वह बड़ी फौज को लेकर चित्तौड़ पर चढ़ आया। किले को चारों ओर से घेर लिया। रावल रत्नसिंह बड़ी बहादुरी से लड़े। परन्तु जब किले में रसद नहीं रही तब अपनी धर्म की रक्षा के लिये रानी पद्मनी ने हजारों स्त्रियों के साथ आग में जल कर जौहर व्रत किया। पीछे रावल रत्नसिंह ने किले के किवाड़ खोल दिये। राजपूत मुसलमनों पर टूट पड़े और लड़कर मारे गये। तीस हजार राजपूतों के मरने-बाद वि० सं० १३६० ई० सन् १३०३ में प्रायः छै महीने बाद किला उसके हाथ लगा।



पद्मिनी के महल चित्तौड़गढ़

उसने किलों की इमारत को गिरवा कर बरबाद करवा दी। और अपने शाहजादे खिजरखां को वहां का सूबेदार नियत कर पीछा लौट गया। खिजरखां ने गंभीरी नदी पर पुल बनवाया। सम्भव है कि पद्मिनी के लिये ही लड़ाई हुई हो। परन्तु मेरे खयाल में तो चित्तोड़ जैसे किले और राज्य लेने के लिये यह लड़ाई हुई हो तो आश्चर्य नहीं। पद्मिनी के लिये लड़ाई होना बडवा भाट ने जायसी के नाटक के आधार मात्र पर लिखा है। और यही बात टाड ने लिखी है कि मुम्मद जायसी के बनाये हुए पद्मावत नाटक में इस लड़ाई का हाल इस तरह लिखा है कि "पद्मिनी की तारीफ सुनकर अलाउद्दीन ने रावल रतनसिंह को लिखा कि पद्मिनी को हमारे पास भेज दो" रावल ने मंजूर नहीं किया। तब उसने चित्तोड़ पर चढ़ाई की, तथा घेर लिया। कई महीनों तक लड़ाई हुई परन्तु बादशाह उसमें सफल नहीं हुआ। तब उसने रावल को कह लाया कि मुझे एक बार दर्पण में पद्मिनी का प्रतिबिम्ब दिखा दो, तो मैं लौट जाऊंगा इस पर बहुत थोड़े आदमियों के साथ बादशाह को किले में आने की आज्ञा दी। फिर थोड़े आदमी लेकर अलाउद्दीन किले में गया। रावल ने दर्पण में पद्मिनी का प्रतिबिम्ब दिखलाया। प्रतिबिम्ब देखकर वह लौट गया महारावल उसको दरवाजे बाहर तक पहुँचाने आया। वहां रावल को धोखे से पकड़ कर लश्कर में ले गया और कहा कि जब तक पद्मिनी नहीं आयगी तब तक तुमको नहीं

छोड़ूंगा जब यह खबर किले में पद्मिनी के पास पहुँची। तब उसने अपने चाचा गोरा और उसके लड़के बादल के साथ सलाह कर बादशाह को कहलाया कि "पद्मिनी आप के पास आने को तैयार है जब तुम रवाने हो ओगे तब वह दासियों सहित तुम्हारे साथ आवेगी। फिर गोरा बादल ने ७ सौ डोलियां तैयार कराईं उनमें हथियार भर कर छै छै राजपूतों ने हरेक डोली को उठाई। इस तरह सवारी कर बादशाह के कैम्प में पहुँचे। जब यह सवारी वहां पहुँची तो यह खबर उसको लगी कि पद्मिनी आगई है। तब बादशाह ने आधे घंटे का समय रावल रतनसिंह को पद्मिनी से मिलने का दिया। ज्यों ही रावल वहां आया कि राजपूतों ने उसको घोड़े पर सवार कर किले में भेज दिया। और राजपूत डोलियों में से शस्त्र लेकर शाही सेना पर टूट पड़े। ऐसी गड़बड़ मची कि बादशाह भी भाग निकला। परन्तु बादशाह फिर जर्रार फौज लेकर आगया। राजपूत भी खूब लड़े। परन्तु जब रसद न रही तब पद्मिनी अपने सतीत्व धर्म की रक्षा के लिये आग में जल मरी। और रावल रतनसिंह ने किले के किवाड़ खोल दिये। और बड़ी बहादुरी से लड़कर मारे गये, ३० हजार राजपूतों के मरने बाद किला उनके हाथ लगा। ऐसा कहते हैं कि उस वक्त देवी ने रावल को स्वप्न में कहा था कि "मैं भूखी हूँ मुझे राजा का बलिदान दो अगर नहीं दोगे तो किला तुम्हारा नहीं रहेगा" रावल रतनसिंह के बाद शिशोदे के

राजा लक्ष्मणसिंह अपने सात लड़कों के साथ लड़कर मारे गये। सिर्फ १ पुत्र अजयसिंह घायल होकर बचकर केलवाड़े गया। यह लड़ाई चित्तौड़ का प्रसिद्ध प्रथम शाका हुआ। जिसको पद्मिनी का शाका भी कहते हैं। रतनसिंह के साथ ही चित्तौड़ पर महारावल शाखा का अन्त हुआ।

४३ लक्ष्मण सिंह—

यह शिशोदे के राणा थे। अलाउद्दीन के हमले के समय चित्तौड़ के रावल रतनसिंह की मदद पर आये। और रतनसिंह के बाद अपने सात पुत्रों सहित लड़कर मारे गये।

बड़वा भाटों की ख्याति में लिखा है कि यह लक्ष्मण सिंह जिनको गढ़ लक्ष्मणसिंह भी कहते हैं। द्वारकानाथ की यात्रा को गये और वापिस आते हुए पुरपाटण में सोलंकी राजा भीम की राणी भट्याणी को साथ लाये। उनके साथ कड़वे में बाणमाता आये जिनकी यहां पूजा होती है। इन्होंने मालवा के गोगादेव को विजय किया।

४४ अरि सिंह द्वितीय।

ये महाराणा लक्ष्मण सिंह के बड़े पुत्र थे। अलाउद्दीन के हमले में चित्तौड़ पर लड़कर मारे गये थे। और हमीर सिंह इन्हीं के लड़के थे। जो अजय सिंह के बाद केलवाड़े में गद्दी पर बैठे और चित्तौड़ को फतह किया।

४५ अजय सिंह—

ये राणा लक्ष्मण सिंह के छोटे पुत्र थे। जिनको वंशरक्षा के लिये चित्तौड़ से निकाल कर केलवाड़े के पहाड़ों में भेज दिया था। गोड़वाड़ का मूंजावालेच्छा उपद्रव कर इनको बड़ा तंग करता था। उसको सज़ा देने के लिये इन्होंने अपने पुत्र सजन सिंह और क्षेम सिंह को हुकुम दिया। परन्तु दोनों असफल हुए। इतने में उनको खबर मिली कि इनके बड़े भाई अरि सिंह का लड़का हमीर सिंह पास ही अपनी ननिहाल उनवा गांव में है। उसको वहां से बुला कर मूंजावालेच्छा को सजा देने की आज्ञा दी। उस समय उसकी उमर १४ वर्ष की थी। फिर भी उसने उस आज्ञा को मंजूर करली। इनको खबर मिली कि सेमारी गांव (गोड़वाड़) में मूंजा एक जलसे में गया हुआ है। वह तुरन्त वहां पहुंचा। और हमला कर उसका शिर काट लाये वह महारणा के सामने रख दिया। इस पर महाराणा अजय सिंह बहुत खुश हुए। और मूंजा के खून से ही उसी वक्त मेवाड़ का राज्यतिलक हमीर सिंह को कर दिया। कहा कि तुम हमारे बड़े भाई के लड़के हो इससे तुम्हारा ही हक है। तुम राज्य करने लायक हो। इस लिये मेवाड़ का राज्यतिलक तुमको किया है। इससे सज्जन सिंह और क्षेम सिंह नाराज होकर दक्षिण में चले गये। वहां सज्जन सिंह के वंश में प्रसिद्ध महाराष्ट्र केशरी शिवाजी हुए।

जिनके वंश में सतारा, कोल्हापुर, नागपुर, मुधोल सावंतवाड़ी और तंजावर आदि राज्य हुए।

४६ हमीर सिंह प्रथम—

महाराणा हमीर सिंह केलवाड़े में अजय सिंह के मरने के बाद राजगद्दी पर बैठे। इनके पिता कुंवर अरि सिंह शिशोदे में रहते थे। जब वे एक दिन सुअर की शिकार को गये सुअर के पीछे घोड़ा दौड़ाया। वह सुअर एक ज्वार के खेत में घुस गया। कुंवर भी उसी खेत में घुसने वाले थे कि एक लड़की ने रोका कि आप ज्वार मत बिगाड़िए मैं सुअर को निकाल देती हूं। यह कहती हुई वह खेत में घुसी। और गोफण फेंक कर सुअर को बाहर निकाल दिया। एक गोफन का पत्थर कुंवर के घोड़े को लगा जिससे घोड़े का पैर टूट गया। वह सुअर को निकाल कर सिर पर दूध की गगरी और दोनों बगल में दो पाडिये दबा कर घर को जा रही थी उसकी इस ताकत को देख कर कुंवर ने उससे पूछा-तू कौन है? उसने कहा मैं राजपूत की लड़की हूं। यह सुन कुंवर ने सोचा कि इससे जो सन्तान होगी वह बड़ी बलवान होगी। यह विचार अपने पिता से यह बात गुप्त रख चन्दाणा राजपूत को कहलाया कि तुम अपनी लड़की की शादी मेरे साथ करदो। यह बात स्वीकार कर राजपूत ने शादी करदी। शादी होने के बाद भी वह अपने पीहर ही रहती थी। कभी २ कुंवर शिकार के बहाने वहां जाते थे जिससे हमीर सिंह पैदा

हुए। जिन्होंने चित्तौड़ को जीत कर मेवाड़ का राज्य बढ़ाया।

अलाउद्दीन ने वि० सं० १५६० ई० सन् १३०३ में चित्तौड़ का किला फतह कर अपने लड़के खिजरखां को शाही लवाजमें देकर वहां का सुवेदार वनाया। उसने चित्तौड़ का नाम खिजरावाद रखा। गंभीरी नदी का पुल भी वनवाया। इधर हमीर सिंह भी केलवाड़े में रह कर उसको तंग करने लगे। इससे वह घवड़ा कर दिल्ली चला गया। और जालोर के राव मालदेव को चित्तौड़ का हाकिम वनाया। परन्तु हमीर सिंह उसको भी तंग करने लगे तव मालदेव ने घवड़ा कर हमीर सिंह को खुश करने के लिये अपनी लड़की की शादी उनके साथ करदी। और मेवाड़ के पहाड़ी इलाके मगरा, सेरानाल, गिरवा, गोड़वाड़, वाराठ, श्यालपट्टी, मेरवाड़ा और घाटे का चोखला आदि ८ जिले दहेज में देदिये। शादी होते ही हमीर सिंह जालोर में थे तो उनकी रानी सोनगरी ने कहा यदि चित्तौड़ लेना हो तो मालदेव से उसके कामदार महता मोजीराम को मांगलो। फिर महाराणा शेर की शिकार के वहाने मोजीराम को लेकर चित्तौड़ पहुंच गये। किले के दरवाजे वंद थे। परन्तु मोजीराम को वहां वाले पहचानते थे। उसके आवाज देने पर किवाड़ खोल दिये। हमीरसिंह ने किले में घुसते ही कब्जा कर लिया। इस तरह वि० सं० १३८३ ई० सन् १३२६ के लगभग चित्तौड़ पीछा इनके अधिकार में आया। यह खवर मिलते ही मालदेव ने हमले किये परन्तु

पराजय हुआ। तब लाचार होकर उसका लड़का दिल्ली बादशाह मह्मद तुगलग के पास गया। वह उसको मदद के लिये फौज लेकर आया। सींगोली के पास लड़ाई हुई। महाराणा ने परास्त कर बादशाह को कैद कर लिया। और तीन महीने कैद में रखने बाद अजमेर, रणथंभोर, नागोर और शिवपुर के इलाके तथा १०० हाथी ५० लाख रुपये लेकर छोड दिया। इन महाराणा ने बूंदी को मीणों से लेकर हाड़ा देवी सिंह को दी। हाडोती, पालनपुर ईडर को फतह किया। गिरी हुई मेवाड़ की उन्नति की। मारवाड, ढुंढाड़, बूंदी, ग्वालियर, चंदेरी, रायसेन, सीकरी, ईडर, आबू, कालपी आदि सभी राजा इनको अपना शिरमौर मानते थे।

जालोर के राव मालदेव का बेटा बनवीर इनकी सेवा में आया। और बहरी जोगन का दिया हुआ खांडा, खप्पर, कुमरे की माला महाराणा के नजर की। यह उनके यहा पर नायाब थी। महाराणा ने उसको नीमच, रतनपुर, और खेराड जागीर में दिये उसने मैंसरोड जीत कर मेवाड में मिलाया। इस बहरी जोगन के खड्ग की आश्विनी नवरात्री में स्थापना होती है तथा पूजा होती है। इन महाराणा का ६० वर्ष के लगभग राज्य करने के बाद, वि० स० १४२१ ई० सन् १३६४ में देहान्त हुआ। इनके चार पुत्र थे १ खेता (क्षेत्र सिंह) २ लूणा, ३ खगार, और ४ बरसल। लूणा के वंशज लूणावत हैं। इन महाराणा ने चित्तोड़ पर अन्नपूर्णा का मंदिर, खेवत्री में

रूप नारायण का मंदिर और देलवाड़े के पास हमीर तालाव बनाया। एकलिंग जी का मंदिर बनवा कर चतुर्मुख मूर्त्ति स्थापन कर गांव भेट किये।

४७ क्षेत्र सिंह-(खेता)

यह वि० सं० १४२१ ई० सन् १३६४ में गद्दी पर बैठे। इन्होंने हाड़ों को सजा देकर मांडलगढ़ ले लिया। मेवाड़ का दक्षिण प्रदेश छुपन (गगरा) विजय किया। और माडू के सुल्तान अमीशाह (दिलावर खां) और ईडर के राव रणमल को कैद किया।

टाड साहव लिखते हैं कि इन्होंने वाकरोल[1] में दिल्ली के वादशाह हुमायूं को परास्त किया। परन्तु हुमायूं उस समय वादशाह नहीं था। संभव है कि हुमायूं नाम का कोई दिल्ली फौज का अफसर हो। या अमीशाह हो।

बूंदी का इतिहास वंशभास्कर में लिखा है कि ये बूंदी पर मारे गये परन्तु इसमें संदेह है। इनका वि० सं० १४३९ ई० सन् १३८२ में देहान्त हुआ।

४८ लक्ष सिंह (लाखा)

यह वि० सं० १४३९ ई० सन् १३८३ में गद्दी पर बैठे। इन्होंने मेरवाड़े के मेरों को सजा देकर वैराटगढ़ को वरबाद

१ हमीरगढ़।

कर बदनौर को आबाद किया। नागर चाल (शेखावाटी) के सांखला राजपूतों को कैद कर लिया। दिल्ली के बादशाह गयासुद्दीन तुगलक को बदनौर के पास परास्त किया। काशी, प्रयाग और गया के हिन्दुओं के ऊपर का कर छुड़ाया।

इनकी राजमाता सोलखनी द्वारिका की यात्रा को गई। रास्त में काबों ने मेवाड़ी लश्कर को घेर लिया। उस समय शार्दूलगढ़ के रायसिंह डोडिया ने मेवाड़ी लश्कर की मदद की। जिससे वह तो मारा गया उसके लड़के कालु और धवल ने काबों पर विजय प्राप्त की। राजमाता को धवलगढ़ में महमान कर घायलों का इलाज कराया। फिर उनको मेवाड़ की सरहद तक पहुँचाया। इस सेवा से प्रसन्न होकर महाराणा ने धवल को बुलाकर ५ लाख की जागीर दी। उसके वंश में सिरदारगढ़ के ठाकुर मेवाड़ के प्रथम श्रेणी के सरदारों में हैं।

मंडोवर के राव चूंडा का पुत्र रणमल घरू बखेड़े के कारण चित्तौड़ आया। उसको ४० गांव जागीरी में दिये। इनके समय में जावर में चांदी और शीशे की खानें निकलीं। जिसकी आमदनी से चित्तौड़ की इमारतें ठीक कराई गईं। बड़े राजकुमार चूँडा के आग्रह करने पर वृद्धावस्था में मंडोवर राव चूँडा की पुत्री हंसाबाई से महाराणा ने इस शर्त पर विवाह किया कि यदि इस शादी से लड़का होवे तो वह राज्य का अधिकारी होगा फिर इस शादी से मोकल पैदा हुए। वह इनके

बाद गद्दी पर बैठे। इनके लड़के चूँडा (के वंश में चूँडावत सलूंबर, देवगढ़, बेगम, मेजा, आमेट, भैंसरोड़ और कुरावड़ के ठिकाने सर्व प्रथम श्रेणी में हैं) २ राघवदेव (धोके से मारा गया और पितृ पूर्वजों के नाम से शिशोदियों में पूजा जाता है) ३ अज्ज (कानोड़ के सारंग देवात अव्वल दर्जे में) ४ दुल्हा (दुलावत) ५ डूंगरसिंह (भांडावत) ६ गजसिंह (गजसिंहोत) ७ लूण के लूणावत, ८ मोकल और ९ बाघसिंह हुए। गया आदि तीर्थों में मुसलमानों के अत्याचार–हिन्दुओं पर कर लगाना–को छुड़ाने के लिये गये थे। वहीं पर इनका देहान्त वि० स० १४७६-७८ और ई० सन् १४१९–२१ के लगभग हुआ ऐसा टाड साहब ने लिखा है।

४९ मोकल—

यह वि०सं० १४७६-७८ ई० सन् १४१९-२१ के लगभग गद्दी पर बैठे। गद्दी पर बैठने के कुछ दिन बाद इन्हों ने चूंड़ा को मेवाड़ से निकाल दिया। वह मांडू के बादशाह के पास गया वहां उसको बड़ी भारी जागीर मिली। मंडोवर के राव चूंड़ा के मरने पर इन्हों ने रड़मल को मंडोवर का राज्य दिलाया।

नागोर का हाकिम फिरोजखां मेवाड़ पर फौज लेकर चढ़ आया। जोताई मुकाम पर लड़ाई हुई। जिसमें महाराणा की हार हुई। फीरोजखां मेवाड़ लूटता हुआ मालवे की तरफ



गया। महाराणा भी अपनी फौज तैयार कर उधर गये। फिरोजखां, यह बात सुनकर सादड़ी व देवलये की पहाड़ियों की तरफ, झुका। उदयपुर से १० कोस दक्षिण में जावर मुकाम पर फिर लड़ाई हुई। जिसमें फिरोजखा की, हार हुई। इसी फिरोजखा को इन्होंने जहाजपुर के पास परास्त किया। वि० स० १४६० ई० सन् १४३३ में गुजरात का, बादशाह अहमद शाह मुलकगिरि के लिये मेवाड व नागौर की तरफ निकला। डूगरपुर से पेशकश लेकर देलवाड़ा व केलवाडे को लूटता हुआ, मारवाड़ की तरफ निकला यह खबर सुनकर महाराणा भी चित्तौड़ से चले। रास्ते में यागौर मुकाम पर महाराणा जनाने में बैठे थे। वहा पर राणा, खेता के पास वातिया लडके चाचा मेराव महपापुवार ने इनको अचानक मार डाला।

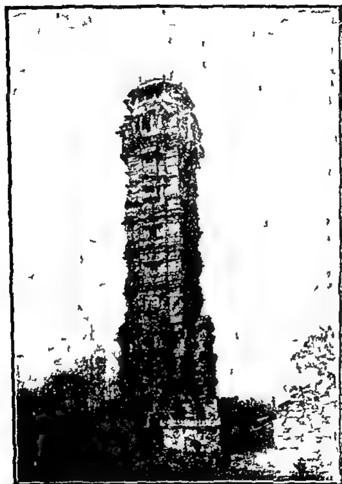
इन्हों ने गढबोर में, श्री चारभुजा का, मंदिर यनवाया येक लिंगजी के मंदिर के चारों तरफ कोट और बघेला तालाब अपने भाई बाघसिंह के नाम पर बनवाया।

इनके ७ पुत्र हुए। १ कुमा, २ खेमकर्ण, ३ शिवा, ४ सत्ता, ५ नायसिंह, ६ वीरमदेव और ७ राजधर ।

५० कुमा (कुमकर्ण)

यह वि० स० १४६० ई० सन् १४३३ में गद्दी पर बैठे। गद्दी पर बैठते ही अपने पिता के मारने वाले चाचा मेरा का सजा

ड़ने के लिये मंडोवर के राव रणमल को पई कोटडा के पहाड़ों में भेजा। रणमल वहां गया लेकिन वह पहाड़ों से वाकिफ नहीं था। इसलिये पता लगाने के हेतु एक गमेती के घर गया। वहां एक वुढ़िया वैठी हुई थी उसके लड़के बाहर गये हुए थे। रणमल को देख कर वुढ़िया ने कहा कि "तूने मेरे पति को मरवाया है परन्तु क्या करूं तू मेरे घर आगया है पर अब भी तू भीतर छिप जा, अगर मेरे लड़के आजावेंगे और तुझे देख लेंगे तो अपने बाप का वैर लिये विना न छोड़ेगें।" यह कह कर रणमल को भीतर छिपा दिया। इतने में लड़के आये उनसे वुढ़िया ने पूछा "यदि रणमल इस वक्त तुम्हारे घर आजाय तो क्या करोगे?" उनने कहा-घर आजाय तो आदर-सत्कार करेंगे। यह सुन रणमल को भीतर से बुलाया और उनसे मिलाया। फिर रणमल ने अपना कुल मतलब सुनाया। तब भीलों ने कहा कि जहां चाचा मेरा रहते हैं वहां के रास्ते में शेरनी व्यायी है। इसलिये थोड़े दिन ठहरो। इसकी परवाह न कर रणमल ने चलने को कहा रास्ते में शेरनी ने मुकाबिला किया। उसको रणमल के लड़के ने मार डाली। आगे वढ़ कर चाचा मेरा पर हमला किया जिससे वे मारे गये। और चाचा का लड़का इक्का भाग गया। और महपा पुंवार एक डोमनी के घर में घुस गया। और उसके साड़ी घाघरे पहिन कर भाग निकला। रणमल ने चाचा मेरा के यहां से मेवाड़ी राजपूतों की लड़कियों को लेकर राठोड़ों



जयस्तंभ चित्तौड़गढ़

के घर में डालना चाहा। परन्तु उस समय वहा पर राघव देव आ पहुँचा। और सब लडकियों को अपने पास ले गया। यह बात रणमल को चुभ गई। इसलिये उसने महाराणा के सामने अस्तीनों के मुह बद की हुई पोशाक उसको दिलाई। और वहाँ पहनाई। ज्योंही उसके दोनों हाथ बेकाबू हुए कि दोनों तरफ से दो आदमियों ने कटार के वार कर उसको मार डाला। यह पितृ पूर्वज हुआ। उसकी छत्री अन्नपूर्णा के मंदिर के पास चित्तौडगढ पर है।

इका और महपा भाग कर माडू बादशाह के पास गये। और वहा रहने लगे। यह सुन महाराणा ने इन दोनों को बादशाह से मागे पर उसने नहीं दिये। तब वि० स० १४६४ ई० सन् १४३७ में महाराणा ने १ लाख सवार १४०० हाथी लेकर माडू पर चढाई कर दी। सारंगपुर के पास लड़ाई हुई। सुलतान महमूद हार कर माडू चला गया। महाराणा ने वहा जाकर किला घेर लिया। और उसको कैद कर चित्तौड लाये। छै महीना कैद रख कर पीछे उसको छोडा। और इस विजय की यादगार में किले पर बडा विशाल कीर्त्तिस्तम-जयस्तभ बनवाया। जिसकी प्रतिष्ठा वि० स० १५०५ ई० सन् १४४८ में हुई। सिरोही के राव सहसमल ने मेवाड के कुछ गाव दबा लिये, इस पर महाराणा ने डालिया नरसिंह को फौज लेकर भेजा। उसने आबू और आस पास के इलाके जीत मेवाड में मिला लिये।

वि० सं० १४९६ ई० सन् १४३९ में बूंदी और मागरण तक रहाडोती का सारा देश विजय किया। चूंडा को तो निकाल दिया और राघवदेव को मरवा डाला। अब महाराणा को बालक देख कर रणमल ने मेवाड़ पर कब्जा करना चाहा। यह बात महपा पंवार ने महाराणा से कहा कि रणमल आप से मेवाड़ छीन लेगा। इस बात का महाराणा को विश्वास न हुआ। परन्तु महाराणा की माता सौभाग्य देवी की दासी भारमली के साथ रणमल का प्रेम था। उसने भी रणमल का यह विचार माता से कहा—तब तो मांडू से चूंडा को बुलाया। फिर उसके आने पर रणमल को शराब पिला कर बेहोश कर खाट पर बंधवा कर वि० सं० १४७५ ई० सन् १४३८ में मरवा डाला। उसका लड़का भाग कर मंडोवर गया। चूंड़ा ने पीछा कर उस पर अधिकार कर लिया। जोधा थलियों में मारा २ इधर–उधर फिरने लगा। आखिर महाराणा ने अपनी माता के विशेष कहने पर कहा कि "मैं जाहिराती तो चूंड़ा के विरुद्ध कुछ नहीं कह सकता। यदि वह मंडोवर ले लेवे तो मैं उसके विरुद्ध सेना नहीं भेजूंगा। और न उसे रोकूँगा।" माता ने यह संदेशा आस्या के साथ थलियों के पड़ाव तथा जंगलों में जोधा के पास भेज दिया। यह संदेशा पाते ही जोधा सेवत्रा के रावत लूणत के पास गया वहाँ से घोड़े मांग कर उसने वि० सं० १५१० ई० सन् १४५३ में मंडोवर पर हमला, कर अधिकार कर लिया महाराणा के खानगी हुकुम से उसने यह

कार्य्य किया तोभी जाहिरा वैर मिटाने के लिये अपनी लडकी श्रृङ्गार देवी का विवाह महाराणा के छोटे पुत्र रायमल के साथ कर दिया।

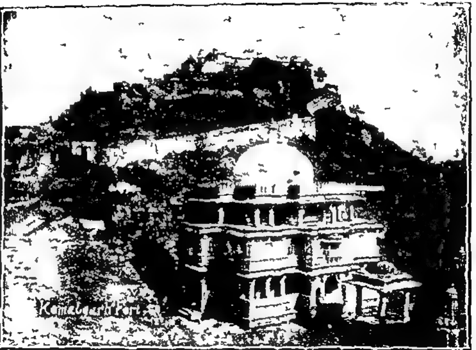
वि० स० १४९९ ई० सन् १४४२ में जब महाराणा हाडोती विजय कर रहे थे तब मालवा के बादशाह महमूद ने कुंभलगढ पर हमला किया। गढ तो मजबूत था इससे न टूटा और उसने केलवाड़ा लेकर बाण माता का मंदिर तोड़ा जब यह खबर महाराणा को मिली तो वे इधर आये। माडलगढ के पास मुठभेड हो गई। महमूद हार कर मंदसोर की तरफ भाग गया। वहा भी महाराणा ने हमला किया तो भाग कर माडू चला गया। फिर वि० स० १५०३ ई० सन् १४४६ में महमूद ने माडलगढ पर हमला किया परन्तु हार कर लौटना पडा।

इन्हीं दिनों में मालवे का शाहजादा उमरखा घरू बखेडे के कारण महाराणा की शरण में आया। वि० स० १५११ ई० सन् १४५४ में सुल्तान महमूद मालवी ने शाहजादा गयासुद्दीन को रणथंभोर पर भेजा और आप खुद चित्तौड की ओर आया। परन्तु पराजित होकर लौट गया। फिर वि० स १५१२ ई० सन् १४५५ में मंदसौर पर अधिकार कर माडलगढ पर हमला किया। बनास नदी पर लडाई हुई महमूद की पराजय और महाराणा की विजय हुई।

वि० स० १५१२ ई० सन् १४५५ में नागौर के फिरोजखा के मरने पर उसके बेटे शमसखा को निकाल कर उसके भाई

मुजाहिदखां ने नागौर पर कब्जा कर लिया। इससे शम्सखां महाराणा के पास आया। महाराणा ने नागौर पर हमला कर शम्सखां को वहां की गद्दी पर बैठाया। परन्तु शम्सखां को महाराणा पर संदेह होने से भाग कर अहमदाबाद चला गया। उसने अपनी लड़की वहां के बादशाह कुतुद्दीन को ब्याह दी। वह वहां से फौज लाया। महाराणा की फौज ने उसे नागौर में ही शिकस्त देकर भगा दिया। इस पर वि० सं० १५१३ ई० सन् १४५६ में स्वयं कुतुबुद्दीन कुंभलगढ़ पर चढ़ आया, तथा आबू पर अपनी फौज भेजी। उन दोनों जगह पर उसको हार खाना पड़ी। वि० सं० १५१३ ई० सन् १४५६ में मालवे के सुलतान महमूद ने मांडलगढ़ पर हमला कर अधिकार कर लिया। इन्हीं दिनों में आबू के देवड़ा बागी हो गये। महाराणा ने उनको दबाने के लिये नरसिंह डोडिए को फौज देकर भेजा। उसने उनको तावे कर आबू पर महल एवं तालाब बनवाये।

वि० सं० १५१४ ई० सन् १४५७ में गुजरात और मालवा के बादशाहों ने अपना आपसी झगड़ा छोड़ कर एक नया अहदनामा किया कि दोनों मिल कर मेवाड़ पर हमला करें। फिर गुजरात की तरफ से तो कुतुबुद्दीन ने कुंभलगढ़ पर और दक्षिण में मालवे की तरफ से महमूद ने मेवाड़ पर हमला किया। कुंभलगढ़ की तलहटी गोड़वाड़ में गुजरात की फौज से मुकाबला होने पर मेवाड़ की फौज को कुंभलगढ़



कुम्भलगढ़

में लौटना पड़ा। फिर फौज को तैयार कर युद्ध किया। जिसमें महाराणा की विजय हुई। यह सुन कर महमूद माडू लौट गया।

वि० सं० १५१५ पौष वदी २ तारीख २३ नवम्बर सन् १४५८ में महमूद खुद चित्तौड़ आया। अपने शाहजादे गयासुद्दीन को मगरा और भीलवाड़ा लूटने को भेजा। लेकिन वह केलुदी का किला फतह कर अपने पिता के पास माडू चला गया।

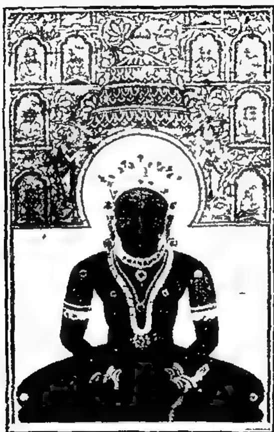
वि० सं० १५१८ ई० सन् १४६१ में महमूद मेवाड़ में आया। अपना डेरा आहड़ में किया। शाहजादे गयासुद्दीन को मुल्क लूटने भेजा। आप स्वयं कुमलगढ़ पर चढ़ा। परन्तु किले को मजबूत देख कर डूगरपुर से २ लाख रुपया लेकर लौट गया।

बूदी के हाडा भाडा और साडा ने अमरगढ तक लूट मार कर उस पर अपना आधिपत्य जमा लिया। इस पर महाराणा ने चढ़ाई कर बूदी छीन ली। और हाडों को सजा दी। उनके माफी मागने पर फौज का खर्च लेकर चित्तौड़ आये।

वि० सं० १५२४ ई० सन् १४६७ में नागौर के मुसलमानों ने गोवध करना शुरू किया। इस पर महाराणा ने ५० हजार फौज लेकर नागौर पर चढ़ाई कर विजय

किले को नष्ट-भ्रष्ट कर मसजिदें जलवाईं, हजारों मुसलमान मारे गये। गायें छुड़ाईं और वहां से हनुमान की बड़ी भारी मूर्त्ति लाये। उसको कुम्भलगढ़ हनुमान पोल पर स्थापित की। यह खबर सुन कर गुजरात के सुलतान अहमदशाह ने लगढ़ पर हमला किया। लेकिन उसको परास्त कर पीछे लौटा दिया।

महाराणा कुंभा ने निम्न इमारतें, मन्दिर बनाये हैं—एक लिंग जी के मंदिर की मरम्मत कराकर नया मंदिर बनवाया। चित्तौड़गढ़ पर नये दरवाजे, रामपोल से पाडनपोल तक रथ जाने-की सड़क, कुंभ श्याम का मंदिर आदि वराह का मंदिर, रामकुंड कीर्त्तिस्तंभ (जयस्तंभ) (वि० सं० १५०५) कुंभलगढ़, कटारगढ़, कुम्भस्वामी का मंदिर, नीलकंठ महादेव का मंदिर, वेदी, मामा देव का कुंड, सात तालाब, आरास की अंबा के पास (दांता) के पास कोलाना का गढ़, वेराट का गढ़, देवगढ़, मचीदगढ़, जहाजपुर का गढ़, आबू पर अचलगढ़ और वसंतगढ़ आदि ३२ गढ़ बनवाये आहोर के गढ़ का जीर्णोद्धार कराया। डीडवाड़े की नमक की खान पर कर लगा, आबू के जैन यात्रियों पर का कर माफ किया। गोडवाड़ के सादड़ी गांव में जगत्प्रसिद्ध राणपुरे का मंदिर की सहायता कर बनवाया। ऋषभदेव के मंदिर धुलेव में भी इसी वक्त बना। प्रशस्तियों के अनुसार रणथंभोर, सीहोर, आमेर, विशाल नगर, खंडेला



श्रीऋषभदेव जी

डूंगरपुर, टोडा, चाटू, चाटसू, सांभर, गागरुण, सारंगपुर, नरवर, योगिनीपुर और जहाजपुर आदि कई शहर और गढ फतह किये।

यह वि० सं० १६२५ ई० सन् १४६८ में कुम्भलगढ में मामदेव के कुण्ड पर बैठे थे। उस समय इनके ज्येष्ठकुंवर उदयकर्ण ने इनको मारडाला। इनके ११ पुत्र एवं १ पुत्री थी—१ उदयकर्ण २ रायमल ३ जगराज ४ गोपालसिंह ५ आसकर्ण ६ अमरसिंह ७ गोविन्ददास ८ जैतसिंह ९ महरावण १० छेत्रसिंह ११ अचलदास हुए। पुत्री का नाम रमाबाई था। वह गिरनार के राजा मण्डलीक को व्याही गई।

यह बडे विद्वान थे। इन्हों ने बहुत से ग्रन्थ बनाये, टीकाएं लिखीं, संशोधन किये। कुछ ग्रन्थ ये हैं—संगीतराज संगीत मीमांसा, एकलिंग महालय।

इनका पराक्रम बडा चढा बढा था। इससे इन्होंने दिल्ली, गुजरात मालवा के बादशाहों को जीतकर उनका कितना ही देश अपने अधीन किया। उन बादशाहों ने इनको एक छत्र भेंटकर हिन्दुसुरत्राण अर्थात् हिन्दू बादशाह स्वीकार किया।

५१ उदयकर्ण

यह वि० सं० १५२५ ई० सन् १४६८ में गद्दी पर बैठे। पितृघाती होने से सब लोग इनसे नाराज–विरुद्ध होगये। इसलिये

इन्होंने अपना पत बढ़ाने के लिये आबू, देवड़ो को दिया और भी राज्य का बहुतसा हिस्सा दूसरे राजाओं कोदे दिया। आखिर सरदारों ने सलाह कर ईडर से इनके छोटे भाई रायमल को बुलाया। वह ईडर (सुसराल) से अपनी सेना लेकर आया जावर मुकाम पर लड़ाई हुई। रायमल की विजय हुई। इन्हीं की दूसरी लड़ाई दाड़िमपुर में हुई यहांपर उदयकर्ण का सहायक खेमकर्ण[1] मारागया और उदयकर्ण के हाथी, घोड़े, नक्कारे रायमल के हाथ लगे। वहां से वह (रायमल) चित्तौड़ पहुँचे। किला के चारों तरफ घेरा डाल बड़ी जोरों की लड़ाई हुई जिससे उदयकर्ण कुम्भलगढ़ भागगया। वहां भी जयमल ने पीछा किया। यहां से भागकर वह सोजत चला गया। इसतरह वि० सं० १५३० ई० सन् १४७३ में रायमल ने सारे मेवाड़ पर कब्जा कर लिया। उदयकर्ण सोजत से बीकानेर और बीकानेर मांडू के बादशाह गयासुद्दीन के पास गया। और मेवाड़ दिलवाने की सहायता मांगी और कहा यदि मेवाड़ दिला देवें तो अपनी लड़की से शादी कर दूंगा। उदयकर्ण इसपर राजी होगये। पर देव का गति विचित्र है यह बात करके उदयकर्ण लौट रहे थे कि बीचही में बिजली के गिरने से उनकी मृत्यु होगई। क्योंकि इस कुल में दाग लगाना ईश्वर को मंजूर नहीं था।

---

१ देवलया प्रताप का पूर्वज।

५२ रायमल—

यह वि० स० १५३० ई० सन् १४७३ में गद्दी पर बैठे। उदयकर्ण के लडके सहसमल और सूरजमल को मेवाड दिलाने के लिये गयासुद्दीन चित्तौड पर चढ आया। भारी लडाई होने के बाद वह हार कर माडू चला गया। इस पराजय से लज्जित होकर गयासुद्दीन ने अपने सेनापति जफरखा के साथ बडी सेना मवाड पर भेजी। वह पूर्वी इलाके को लूटने लगी। यह खबर सुनते ही महाराणा उधर को रवाना हुए। उस समय उनके साथ आसेर, रायसेन, चदेरी, नरवर, बूदी, आमेर, साभर, चाटसु लालसोट, मारोट, थोडा आदि के कइ राजा थे। माडलगढ के पास बडी भीषण लडाई हुई। जफरखा हार कर मालवे को लौट गया। महाराणा ने भी मालवे पर चढाई की। खेराबाद में भी लडाई हुई। महाराणा ने मुसलमानों को हराकर मालवे को लूटा और दड दिया।

वि० स० १५६० ई० सन् १५०३ में मालवे के सुलतान नासीर शाह ने चित्तौड पर हमला किया। गभोरी नदी पर लडाई हुई। महाराणा के २२ घाव लगे। और हार होने वाली थी पर कुभलगढ से कुवर पृथ्वीराज आ पहुँचे। इसीसे महाराणा की विजय हुई। बादशाह हार कर माडू लौट गय इसमें पृथ्वीराज, सूरजमल और सारगदेव घायल हुए। लडते २ शाम हो गई तब लडाई बन्द हुई। पृथ्वीराज

महाराणा के ५ घावों पर पट्टी बांध कर सूरजमल के डेरे पर पहुँचे वह भी पट्टी बांध रहा था, दोनों को युद्ध में घाव लगे जिसकी बातें हुईं व कल होने वाले युद्ध की बात कर पृथ्वीराज लौट आये। दूसरे दिन की लड़ाई में पृथ्वीराज को ७ घाव और सारंगदेव को ३५ घाव लगे। युद्ध समान होने पर सूरजमल सादड़ी और सारंगदेव बाठरड़े में रहने लगे।

महाराणा के ३ कुंवर थे- १ पृथ्वीराज २ जयमल ३ संग्रामसिंह। इनके बीच में राज्य के लिये लड़ाई होने लगी उन्हों ने अपनी २ जन्म पत्री ज्योतिषी को बतलाई। उसने कहा ग्रह तो तीनों के समान हैं परन्तु राज्य योग्य तो संग्रामसिंह ही मालूम होते हैं। इस बात से भी उनको सन्तोष नहीं हुआ तब नाहर मगरे के पास भीमल गांव में एक देवी के मन्दिर गये। वहां भी यही उत्तर मिला कि पृथ्वीराज और जयमल तो योंही घूमते रहेंगे और सांगा मेवाड़ का राणा होगा। सूरजमल एक कोने पर राज्य करेगा। यह सुनते ही आपस में तलवारें निकलीं सांगा को बचाने में संगर देव मारा गया और सांगा की एक आंख जाती रही। सांगा वहां से जान बचाकर भागा। जयमल ने उसका पीछा किया, सेवत्री ग्राम में पहुंच गया। वहा पर राठौड़ बीदा, रायमल, रूपनारायण के दर्शन करने आये थे। उन्हों ने सांगा को खून से भींगा देखकर घोड़े से उतार कर घावों की मरहम पट्टी की। इतने में जयमल आ पहुँचा और सांगा को मांगा उस वक्त सांगा को

तुरत रवाना कर दिया। और सागा को बचाने की एवज में खुद लडकर वि० स० १५६१ जेठ वदी ७ रविवार को मारा गया। उसकी छत्री रूपनारायण के मंदिर में है। केलवे के जागीरदार उसी वश में हैं। सागा घूमता हुआ प्रसिद्ध लुटेरा श्रीनगर के करमचद पुवार के पास पहुँचा। और जयमल, पृथ्वीराज दोनों चित्तोड में महाराणा के पास गये। वहा पर दोनों ने पूर्व का समस्त वृत्तान्त सुनाया जिसका सुन कर महाराणा ने खूब फटकारा। जिससे वे दोनों कुमलगढ चले गये। सूरजमल सादडी में रहने लगा एक दिन पृथ्वीराज सादडी में सूरजमल के पास पहुँचा। वहा किले में रात के वक्त सूरज मल धूनी पर ताप रहा था। पृथ्वीराज एक दम भीतर घुसा वहां वाले उस पर वार करने ही को थे, परन्तु सूरजमल ने आवाज़ पहिचान कर उसको बचाया और कहा-तुम बेपरवाह यहा पर कैसे आये? पृथ्वीराज ने कहा-तुम मेरे होते हुए बेपरावह कैसे बैठे हो? फिर पृथ्वीराज भीतर गया। और सूरजमल की स्त्री से कहा—मुझे भूख लगी है? उसने थाल परोस दिया वह रोटी खाने लगा। फिर सूरजमल भी आकर उसीके साथ खाना खाने लगा। लेकिन उस वक्त उसकी स्त्री ने ज़हर मिश्रित कटोरा थाली में से उठा लिया। यह देख कर सूरजमल ने पृथ्वीराज से कहा कि तेरी काकी को तेरी क्या फिकर है कि उसने यह विष का प्याला रखा। परन्तु मैं अपने फर्जंद की मृत्यु नहीं देख सकता हूँ। यह सुन

कर पृथ्वीराज ने कहा-अब आप निष्फिकर रहो यह मेवाड़ आपके लिये तैयार है मैं आपको तकलीफ न दूंगा। सूरजमल ने कहा-मैं मेवाड़ की भूमि में नहीं रहूँगा। यह कह कर चल दिये। और काटल में जाकर देवल्ये में नया राज्य स्थापित किया। और सारंगदेव के पुत्र जोगा को सांगा ने गद्दी बैठने पर बाठरड़ा की जागीरी दी और उसकी खांप को "सारंगदेवोत" कहलाने की इज्जत दी।

काठियावाड़ में हलवद के झाला राजसिंह (राजधर) के पुत्र के अज्जा और सज्जा भाइयों के कलह से वि० सं० १५६३ ई० सन् १५०६ में मेवाड़ में आये। महाराणा ने इनकी बहिन रतनकुँवर के साथ विवाह किया था। इससे इन दोनों को यहां पर रखा। अज्जा के वंशज सादड़ी में और सज्जा के वंशज देलवाड़ा तथा गोगुदा में राजराणा प्रथम श्रेणी के सरदारों में हैं।

सिरोही राज्य के लाचगांव के सोलंखी रायमल, शंकरसिंह और सामन्तसिंह महाराणा के पास आये। उनको १४० गांव देकर रायमल के बेटे शंकरसिंह को जीलवाड़ा और सावंतसिंह को रूप नगर की जागीर दी।

महाराणा कुम्भा की राजकुमारी रमाबाई को गिरनार के राजा मंडलीक को ब्याही थी। वह रमाबाई को बड़ा कष्ट

देता था। यह बात सुन कर पृथ्वीराज वहा पहुँचे और मडलीक का एकदम जा दबाया जिससे वह प्राणभिक्षा मागने लगे। पृथ्वीराज ने निशानी स्वरूप कान का कोना काट कर छोड दिया। और रमाबाई को यहा पर लाया। महाराणा ने रमाबाई को जावर खर्च के लिये दिया। रमाबाई ने अपनी जिन्दगी यहीं पर समाप्त की। और वहा रमानाथ का मदिर और रामकुण्ड बनाया।

टोडा के राव सोलजी सुरतान का राज्य लीला पठान ने छीन लिया। तब सुरतान महाराणा के पास आया। महाराणा ने उसे बदनोर की जागीर दी। राव सुरतान की लडकी ताराबाई बडी रूपवती थी। उसके साथ विवाह करने के लिये अनेक लोग आये। पर उसने कहा कि "जो कोई मेरा राज्य पीछे दिलायगा वही मेरी पुत्री का पति होगा।" यह सुनकर कुवर जयमल ने कहलाया कि "पहले तारा को दिखलाओ पीछे शादी कर देना।' इस पर उसने कहा कि "हम राजपूत हैं कन्या को नहीं दिखला सकते हैं किन्तु हम आपके आश्रय हैं इससे कन्या हाजिर है" यह सुनकर कुवर ने कन्या देखने पर ही जोर दिया। सुरतान को लडना अच्छा न समझ स्वय सामान लेकर चल दिया। कुवर पीछा करके आक्डसादे पहुँचे। वहा राव सुरतान के साले रतन सिंह के हाथ से मारा गया। उसने इस कुसूर की माफी की अर्जी लिखी। महाराणा ने उत्तर दिया कि "इसमें तुम्हारा कुसूर नहीं है कुवर ने अपने किये का फल पाया"।

कुंवर जयमल के मारे जाने के बाद पृथ्वीराज ने ताराबाई के लिये राव सुरतान को कहलाया जिससे उसने शादी करदी। फिर एकदम रोड़े पर आक्रमण कर लल्लाखां पठान को मार कर रोड़ा राव सुरतान को दिलाया।

उदयकर्ण के समय में एकलिंगजी का मंदिर गिर गया था उसको बनवा कर वर्तमान मूर्ति की स्थापना की।

दोनों पुत्रों के मारे जाने के बाद महाराणा को बड़ी चिन्ता हुई इससे सांगा का पता लगाना चाहते थे। पर सांगा श्रीनगर के कर्मचन्द पुंवार के पास जा कर सिपाहियों में भर्ती हुआ।। एक दिन वे कहीं से लूट कर वापिस आये। तथा वृक्षों की छाया में सो रहे थे। सांगा भी एक वृक्ष के नीचे सो रहा था। उस पर धूप की चलक पड़ती थी इससे एक सांप ने फन फैला कर धूप को रोक दी। यह देख कर सबको आश्चर्य हुआ। और सांगा से पूछा कि तुम कौन हो? बहुत आग्रह करने पर उसने अपना भेद बता दिया। तब तो कर्म्मचन्द ने सांगा के साथ अपनी कन्या की शादी करदी। और उसको साथ लेकर महाराणा के पास गया। इस पर प्रसन्न होकर महाराणा ने जागीर देदी। इसके वंशज बंबोरी के जागीरदार हैं। उनकी गिन्ती दूसरे नम्बर के सिरदारों में है।

इनका देहान्त वि० सं १५६५ ई० सन् १५०८ में हुआ पृथ्वीराज, जयमल, संग्रामसिंह (सांगा) पत्ता, रामसिंह,

भवानीदास, कृष्णदास, शंकरदास, सुन्दरदास, देवीदास, ईश्वरदास और वेणीदास नाम के १० पुत्र हुए।

पृथ्वीराज की रखैल स्त्री से वनवीर हुआ था इसका हाल आगे लिखेंगे।

पृथ्वीराज की बहिन आनन्दा बाई का विवाह सिरोही के राव जगमल के साथ हुआ था। वह आनन्दा बाई को बडा कष्ट देता था यह सुनकर वह पृथ्वीराज अचानक पहुँचे। और एकदम महलों पर चढ़ गया। वहा पर देखता क्या है कि राव आनन्दा बाई के हाथ पर खाट का पाया रखे दूसरी स्त्री के साथ सो रहा है। यह देख कर पृथ्वीराज ने राव को ललकारा। और तलवार खींच कर कहा कि रे दुष्ट! तू मेरी बहिन को इस तरह कष्ट देता है। कह कर तलवार का वार करने ही वाले थे कि आनन्दा बाई ने अचला बिछा कर कहा—हे भाई! "तुम मुझे सौभाग्य दो और इसे प्राणदान दो" पृथ्वीराज ने राव को प्राणदान दिया और उसने प्रतिज्ञा की "आज से मैं कभी दुःख न दूँगा" राव ने पृथ्वीराज को भोजन कराया। और चलते समय उनको तीन गोलियें यढार की दीं। पृथ्वीराज ने उन पर विश्वास कर तीनों ही खालीं। वह विष बहुत तेज था। इससे वह कुम्भलगढ पहुँचते ही रास्ते में किले के नीचे टीडावारी के पास थकने लग गये। इससे उन्हों ने ताराबाई को कहलाया कि यदि तुमको मिलना

हो तो शीघ्र आजाओ फिर आगे न बढ़ सके। किन्तु वहीं पर प्राण त्याग दिये। ये पृथ्वीराज बड़े बहादुर और तेजी से हमला करने वाले थे इससे इनको "उड़णा पृथ्वीराज" कहते हैं।

५२ संग्रामसिंह (सांगा)

यह वि० सं० १५६६ जेठ सुदी ५ ई० सन् १५०९ को २४ मई को गद्दी पर बैठे। इनका जन्म वैशाख वदी ९ संवत् १५३९ ई० सन् १२ अप्रेल १४८२ का हुआ। इन्हों ने गद्दी पर बैठते ही कर्मचन्द पुवार (श्रीनगर) को उनकी सेवा के योग्य अजमेर, परवतसर, मांडल, फुलिया, बनेड़ा आदि १५ लाख की जागीरी तथा रावत की पदवी दी।

वि० सं० १५७४ ई० सन् १५१७ में दिल्ली का बादशाह इब्राहीम लोदी महाराणा पर चढ़ आया। यह सुन कर महाराणा भी लड़ने को रवाना हुए। हाड़ाती की सरहद पर खातोली के पास लड़ाई हुई। इब्राहीम लोदी भाग निकला। पर उसका एक शाहजादा कैद हुआ। उसको कुछ काल कैद रख कर दंड लेकर छोड़ दिया। इस लड़ाई में महाराणा का बायां हाथ तलवार से कट गया और घुटने पर तीर लगने से लंगड़े भी हो गये थे।

इस पराजय की शर्मिन्दगी से दूसरे ही साल इब्राहीम लोदी ने फिर महाराणा पर फौज भेजी। धौलपुर के पास



महाराणा सांगा संग्रामसिंह १

लड़ाई हुई। मुसलमानी फौज भागनिकली महाराणा ने उसकी फौज का बयाने तक पीछा किया। और मालवे का कुछ भाग महाराणा ने अपने अधिकार में कर लिया।

इन्हीं दिनों में चदेरी के गौड़ राजा ने सिर उठाया। महाराणा ने कर्मचन्द्र के बेटे जगमाल को फौज देकर भेजा। वह राजा को जीत कर कैद कर लाया। महाराणा ने उसको मातहत बनाया। और जगमाल को "राव" का पद दिया।

इन्हों ने वि० स० १५७२ चैत्र बदी ई० सन् १५१५ मार्च में ईडर के राव रायमल को ईडर पर बिठाया। इसपर भारमल सुल्तान मुजफ्फर गुजराती के पास गया। सुलतान ने अपने दीवान निजाम मुल्मुल्क को ईडर का राज्य भारमल को दिलाने का हुकम दिया। और स्वय भी अहमदनगर आया। रायमल विजयनगर के पहाड़ों में गया। निजाम मुल्मुल्क ने भारमल को ईडर का राज्य दिलाया। परन्तु रायमल ने पहाड़ों से हमला कर जहरू मुल्मुल्क को परास्त किया। और वह मारा गया।

वि० स० १५७६ ई० सन् १५१९ में सुल्तान महमूद ने महाराणा के सरदार मेंदनीराय पर चढाई की। महाराणा ५० हजार फौज लेकर उसको मदद के लिये गये। गागरून के पास लड़ाई हुई। गुजरात की फौज भी मालवे की फौज की मदद पर थी। महमूद घायल होकर गिर पड़ा। महाराणा उसे उठा लाये। चित्तौड़ लाकर उसका इलाज करा कर ३

साह कैद रखा। एक दिन महाराणा उसको १ गुलदस्ता देने लगे। इस पर उसने कहा कि देने की दो रीतियां होती हैं। एक तो अपना हाथ ऊंचा कर अपने से छोटे को देना दूसरा अपना हाथ नीचा कर दूसरे को भेंट देना। मैं तो आपका कैदी हूँ इसलिये भेंट का तो प्रश्न नहीं हो सकता परन्तु आपको सोचना चाहिए कि एक भिखारी की तरह गुलदस्ते के लिये हाथ पसार कर लेना शोभा नहीं देता। यह सुन कर महाराणा बड़े प्रसन्न हुए और गुलदस्ते के साथ मालवे का आधा राज्य देने को कहा। महाराणा की उदारता से खुश होकर सुल्तान महमूह ने हाथ लम्बा कर गुलदस्ता ले लिया। फिर तीसरे दिन फौज-खर्च लेकर एक हजार सवार साथ देकर उसको मांडू पहुंचाया। सुल्तान के अधीनता के चिन्ह स्वरूप महाराणा को अपना रत्न जड़ित मुकुट और सोने का कमर पेटा भेंट किया। और थोड़े दिन तक उसके एक शहजादे को चित्तौड़ ओल (Hostage) में रखा।

वि० सं० १५७७ ई० सन् १५२० में गुजरात पर चढ़ाई कर महाराणा ने रायमल को ईडर की गद्दी पर बैठाया। अहमद नगर को लूटा, जब वड़नगर पहुँचे तो वहां पर ब्राह्मणों की दया प्रार्थना को स्वीकार कर विशलनेगर गये। वहां लूट पाट करके गुजरात को लूटते हुए चित्तौड़ आये। यह खबर सुनकर सुल्तान मुजफ्फर ने १ लाख सवार १०० हाथी देकर अय्याज को मेवाड़ की ओर रवाना किया। पीछे

से २० हजार सवार देकर ताजखां का मदद के लिये और भेजा यह डूंगरपुर, बांसवाड़े को बरबाद करता हुआ मन्दसोर पहुँचा। यहा के किले पर घेरा डाल दिया। किलेदार अशोकमल ने लड़ाई का तैयारी की। इधर माडू का बादशाह महमूद भी मदद के लिये आया। जब यह खबर महाराणा को मिला तब वे शीघ्र हा उधर का रवाना हो गये। मन्दसोर मे १८ कोस नाहन पहुँचे। इसी बीच मालवे और गुजरात की फोज में अनबन हो गई। सेनापति अयाज ने महमूद को वापिस लौटाया। आप महाराणा से सुलह कर चम्पानेर चला गया। सुल्तान मुजफ्फर उससे बड़ा नाराज हुआ। बाबर के दिल्ली लेने पर महाराणा ने भी कंधार और रणथंभोर का किला बड़े

उस समय बादशाह के लाल डेरे भी छीने थे उसी वक्त से महाराणा के भी लाल रंग के शाही डेरे रहने लगे। इनके सिवा और कोई लाल रंग के डेरे नहीं लगा सकता था) इस पराजय से बाबर की फौज घबड़ा गई और सन्धी की चर्चा होने लगी। महाराणा की तरफ से रायसेन का सलहदी तंवर सुलह की बात चीत कर रहा था। यह अन्दरूनी बाबर से मिल गया। और बात चीत में इतना समय लगाया कि बाबर ने तो पखाने की मोर्चाबंदी मजबूत करली। और फिर सुलह में बखेड़ा डाल कर फिर लड़ाई शुरू करी और ऐन लड़ाई के समय यह सलहदी २० हजार फौज के साथ बाबर से मिल गया। वि० स० १५८४ चैत्र सुदी १४. १७ मार्च १५२७ ई० को लड़ाई पूरी जोर शोर से हो रही थी। उस समय ३० हजार फौज क साथ सलहदी तंवर के दुश्मन से मिल और ऐसे वक्त में महाराणा के शिर में तीर लगने से वह बेहोश हो गये। तब उनको लड़ाई के मैदान में से पालकी में बिठा कर उनके सरदार बसवे ले गये। उस समय फौज में गडबड मचगई। फौज को मालूम न पड़े इसलिये महाराणा के हाथी पर झाला अज्जा को बिठा कर लड़ाई जारी रखी। परन्तु मालिक के चले जाने से सबका साहस टूट गया। और बहुत खून खराबी के बाद बाबर को फतह प्राप्त हुई। सादड़ी के झाला अज्जा को महाराणा के राज्य चिन्ह देकर उनके हाथी पर बैठाया। उसी दिन से उसकी सन्तान को यह इज्जत प्राप्त

हुई वह अब तक चली आती है। इस लड़ाई में महाराणा की फौज में हसनखां मेवाती, बादशाह इब्राहीम लोधी का पुत्र महमूद शाह लोदी, मारवाड़ का राव गंगा, आमेर का राजा पृथ्वीराज, ईडर का राजा भारमल, वीरमदेव मेड़तिया, नरसिंगदेव महाराणा का भतीजा, डूंगरपुर का रावल उदयसिंह, चन्द्रभाण चौहान, माणिकचन्द्र चौहान, (ये दोनों पूर्व से आये इन वंश में बेदला और कोठारया, पारसोली के राव प्रथम श्रेणी में है) दिलीप रावत रतनसिंह (सलूंबर) रावत जोगा (कानोड़) हाडा नरबद बूँदी, मेदनीराय चंदेरी, वीरसिंह देव, झाला अज्जा (बड़ी सादड़ी) सोनगरा रामदास, परमार गोकलदास (बिजोल्या) खेतसी, राजमल राठोर-जोधपुर का सेनापति, देवल्या (प्रतापगढ) का रावत बाघसिंह बीकानेर का कुँवर कल्याणमल साथ थे। इनमें डूंगरपुर का उदयसिंह हसनखां मेवाती माणिक और चन्द्रभान चौहान रावत रतनसिंह, चुंडावत रावत जोगा, झाला अज्जा, रामदास सोनगरा परमार गोकलदास, रायमल राठौर रतनसिंह मेड़त्या आदि मारे गये।

महाराणा को सरदार बसुआ ले गये। वहां उनको होश आया। तब उन्हों ने लड़ाई का हाल पूछा ? सरदारों ने कहा कि 'हार गये''। यह सुनकर बड़ा दुख हुआ और कहा कि मुझे यहां क्यों लाये। अब मैं हार कर चित्तौड़ नहीं जाना चाहता। और वहीं डेरा कर लिया। फिर लड़ाई की

करने लगे। इस पर सरदारों ने रोका कि कुछ समय लेना चाहिए कि जिससे पूरी तैयारी हो सके। यह सुनकर वहां से रणथंभोर चले गये वहां युद्ध की तैयारी करने लगे।

बाबर ने अपना रौब जमाने के लिये महाराणा के मातहत चंदेरी के मेदनीराय पर चढ़ाई की। यह सुनते ही महाराणा ने अपनी हार का बदला लेने का यह अच्छा अवसर जान कर कूच किया; कालपी से आगे ईरीच गांव में पहुँचे वहां उनके साथी युद्ध के विरोधी सरदारों ने उन्हें विष देदिया, जिस से रास्ते में कालपी में माघ सुदि ६ ता० ३० जनवरी को उनका देहान्त हो गया इनके साथ मेवाड़ की उन्नति का क्या हिन्दुओं की उन्नति का सूर्य अस्त हो गया। इनके लिये बाबर अपनी किताब में लिखता है कि 'राणासांगा अपनी वीरता और तलवार के बल से बहुत बड़ा हो गया था। उसकी ताकत इतनी बढ़ गई थी कि मालवा, गुजरात व दिल्ली के सुलतानों में से कोई भी अकेला उसे नहीं हरा सकता था। करीब २०० शहरों में उसने मसजिदें गिराईं. बहुत से मुसलमानों को कैद किया। उसको देश से १० करोड़ की आमदनी थी। उसकी सेना में १ लाख सवार थे. उसके साथ ७ राजा. ९ राव, और १०४ छोटे सरदार रहा करते थे। अगरचे उसके तीन उत्तराधिकारी भी वैसे ही होते तो मुसलमानों का राज्य हिन्दुस्थान में न जमता।"

इन महाराणा की १ आख तो भाइयों की लडाई में जाती रही। १ हाथ इब्राहीम लोधी के साथ खातोली की लडाई में कट गया तीर लगने से एक पैर लँगडा होगया। इनके शरीर पर ८० घाव थे।

इन महाराणा के ७ पुत्र थे-१ भोजराज २ कर्णसिंह ३ रतनसिंह ४ विक्रमादित्य ५ उदयसिंह ६ पर्वतसिंह ७ कृष्णसिंह। इनमें से १, २ ६ और ७ वें कुंवरपदे में ही चलबसे। प्रसिद्ध मीराबाई मेडते के राव वीरमदेव के छोटे भाई रतसिंह की लडकी भोजराज को व्याही गई थी। कुंवर का देहान्त होने पर वह विष्णु-भक्ति में लीन हो गई। और विक्रमादित्य के समय में अपने पीहर मेडते गई और वहा से द्वारिका गई। और वहीं शेष जीवन बिताया वहा उसका प्राणान्त हुआ। इन महाराणा के हाडी रानी के दो पुत्र विक्रमादित्य और उदयसिंह थे। हाडी रानी पर अधिक प्रेम रहने के कारण वह इनको अच्छी जागीर दिलाना चाहती थी। महाराणा ने उसकी प्रेरणा पर ५० लाख रणथभोर की जागीर देकर उनकी निगरानी बूंदी के राव सूरजमल को दी। और यह जागीर कुंवर रत्नसिंह की इच्छा के विरुद्ध थी। इसलिये सूरजमल नेमहा राणा से अर्ज कर रत्नसिंह की मजूरी चाही महाराणा के कहने पर लाचार कुंवर को भी मजूरी देनी पडी।

इन महाराणा ने झाला अज्जा को सादडी और गज्जा को देलवाडे की जागीर दी।

५४ रत्नसिंह—

ये महाराणा वि० सं० १५८४ माघ सुदि १५ ता० ५ फरवरी सन् १५२८ को गद्दी पर बैठे। इन्होंने मालवे पर चढ़ाई कर ल ने हुए सारंगपुर तक पहुँचे। खरजी की घाटी के पास गु गात के सुल्तान बहादुरशाह से मिले। उसने महाराणा को ३० हाथी कितने ही घोड़े भेट किये। और १५०० जरदोजी खिलअत साथियों को दिये। इनके प्रधान कर्मराज ने बहादुर शाह से फरमान प्राप्त कर काठियावाड़, पालीताना के जैन मंदिर का जीर्णोद्धार कराया। और मंदिर बनाने की मनाई होने पर भी महाराणा के प्रताप से नये मंदिर बनाने की आज्ञा प्राप्त की। ये गद्दी बैठे तब विक्रमादित्य और उदयसिंह रणथंभोर थे। उनको महाराणा ने चित्तौड़ बुलाया। परन्तु बूंदी के राव सूरजमल ने नहीं आने दिया। और बाबर के साथ महाराणा के विरुद्ध खटपट करना शुरू किया। इससे महाराणा ने सूरजमल को बुलाया और बाजड़ा गांव में गोकर्ण तीर्थ वाले गांव में वह आया। वहाँ शिकार में पूर्णमल चौहान को सूरजमल पर वार करने को कहा। और आप उसकी मदद पर गये। वहां महाराणा, पूर्णमल और सूरजमल तीनों ही वि० सं० १५८८ ई० सन् १५३१ में मारे गये।

५५ विक्रमादित्य —

यह महाराणा वि० सं० १५८८ ई० सन् १५३१ में गद्दी

बैठे। इन्होंने ७ हजार मल्ल इकट्ठे कर सरदारों को नाराज कर दिये। यह मौका देखकर गुजरात के सुल्तान बहादुर ने वि० स० १५८६ ई० सन् १५३३ में चित्तौड पर हमला किया। परन्तु राजमाता हाडी कर्मावती ने बहुतसा धन, सुल्तान महमूद का जडाऊ ताज व सोने का कमरपेटा देकर सुलह कर लौटाया। इतने होने पर भी महाराणा नहीं समझे तब फिर बहादुरशाह दूसरे साल चढ आया। महाराणा बूँदी की ओर चले गये। हाडी कर्मावती के आग्रह करने प" फिर सरदार इकट्ठे हुए। देवलिया का रावत बाघसिंह सेनापति होकर महाराणा की जगह लडा। बीकाखोह की दीवाल सुरंग से उडने के कारण हाडा अर्जुन साथियों सहित मारागया। और तोपों से पाडलपोल, सूरज पोल, लाखोटा की बारी पर हमला किया। तब राजपूत किले के दरवाजे खोल कर गुजराती फौज पर टूट पडे। देवलिया का रावत बाघसिंह और रावत नरबद पाडल पोल पर देसूरी का सोलंखी भैरवदास भैरवपोल पर देलवाडे का राज सज्जा, सादडी का राज राजसिंह हनुमानपोल पर, इसी तरह राव दूदा, सत्ता कमर, (तीनों सलूंबर के), सोनगरामाला, रावत देवीसिंह रावत बाघ, रावत कर्मा, डोडिया भाणा (लाजा) आदि मारे गये और जीतने की आशा न रहने पर हाडी कर्मावती ने १३००० स्त्रियों सहित जौहरव्रत किया। आखिर वि० स० १५६२ चैत्र सुदि ५ ई० २८

मार्च १५३५ को बहादुरशाह ने किले पर अधिकार कर लिया। इस युद्ध में ३२००० राजपूत मारे गये। यह चित्तौड़ का दूसरा शाका प्रसिद्ध है। इस समय हाड़ी कर्मावती ने हुमायूं के पास राखी भेजी थी। इससे वह मदद के लिये चल पड़ा। लेकिन बहादुरशाह ने उसको लिख दिया कि "मैं जहाद धर्म युद्ध कर रहा हूं अगर तू इस समय काफिर को मदद देगा तो खुदा के सामने गुनहगार होगा।" यह पत्र पढ़ कर हुमायूं रास्ते ही में ठहर गया। जब उसने सुना कि किला फतह हो गया तब आगे चित्तौड़ की तरफ रवाना हुआ। बहादुरशाह भी मुकाबले को गया। मंदसौर के पास दोनों का मुकाबला हो गया। बहादुरशाह भाग कर गुजरात की तरफ गया। हुमायूं ने उसका पीछा किया।

मेवाड़ के सरदारों ने यह अवसर देख कर किला पीछा ले लिया। महाराणा को बूंदी से वापिस बुलाया। इस लड़ाई में महाराणा की एवज में लड़ने से देवलया वाले दीवान कहलाने लगे। इतना होने पर भी महाराणा की आदत ठीक नहीं हुई तब कुंवर पृथ्वीराज के पासवान्ये पुत्र बनवीर ने वि० सं० १५९३ ई० सन् १५३६ में रात के समय राणा को मार कर राज्य पर कब्जा कर लिया। उसी समय उनके छोटे भाई उदयसिंह को भी मारने गया पर उसकी धाय पन्ना ने उसकी जगह पर निज पुत्र को सुलाकर कुंवर को बचाया। वह दुष्ट उस बालक को मार कर निडर हो गया। पन्ना धाय उसको



महाराणा उदयसिंह से फतहसिंह तक

देवल्ये, डूगरपुर और सलू वर ले गई पर किसी ने वनवीर के भय से न रखा। यहा से निराश होकर कु भलगढ पहुची।

इन महाराणा ने अशोक पु वार को विजोत्या की जागीर दी थी।

वनवीर

महाराणा विक्रमादित्य को मार कर वनवीर निर्भय चित्तौड का राज्य करने लगा। महाराणा के सदृश एक दिन अपने थाल में से कोठारिया के रावत खान को परसादी दी। रावत ने लेली परन्तु खाई नहीं। इस पर वनवीर ने कहा कि मैं कमसल हूँ तो असल को लाओ। रावत खान को उदय सिंह के कु भलगढ होने की खबर थी इससे वह मुजरा कर वहा से रवाना हो कु भलगढ गया। वहा उदयसिंह को गद्दी बिठाया। इस अरसे में लगभग दो वर्ष वनवीर ने चित्तौड पर राज्य किया।

५६ उदयसिंह—

यह महाराणा वि० स० १५६४ ई० सन् १५३७ में गद्दी पर बैठे। विक्रमादित्य के मारे जाने पर ये १५ वर्ष के थे। तब पन्ना धाय चित्तौड से इनको छुपा कर देवल्ये डू गरपुर होती हुई कु भलगढ पहुँची। वहा हाकिम आसा देपुराने दो वर्ष तक इनको छुपा कर रखा। वि० स० १५६४ ई० सन् १५३७ में कोठारिया के रावत खान ने वनवीर से विरुद्ध हो कर कुम्भलगढ़ में इनको गद्दी बैठाया। और सब सरदारों को परधाने

लिख कुंभलगढ़ बुलाया। सब के इकट्ठे होने पर उदयसिंह को लेकर चित्तौड़ को रवाना हुए। राज्य के सब कर्मचारी बनवीर के पास थे इसलिये रावत खान ने अपने विश्वासपात्र कर्मचारियों को इनके पास मुकर्रिर किये[१]।

ईडर के राव भारमल, बूंदी के राव सुलतान हाडा, डूंगरपुर के राव आशकरण, बांसवाड़े के रावत जगमाल, देवल्या के रावत रायसिंह,रावत साईंदास चूंडावत, रावत सांगा, रावत जगा, डोडिया ठाकुर सांडा, अखेराज और मारवाड़ के मालदेव के द्वारा भेजे हुए राठौर कुंपा व जेता भी आ पहुँचे। इन सब को लेकर उदयसिंह चित्तौड़ रवाना हुए। रास्ते में मावली के पास बनवीर की फौज का तंवर कुंवरसी से मुकाबला हुआ वह मारा गया। वहां से चित्तौड़ पहुँच कर किला घेर लिया। परन्तु महाराणा के पास तोपखान परवाना न होने से कामयाबी नहीं हुई। तब आसा देपुराने बनवीर के दीवान चील महता को मिलाया। चील महता ने बनवीर से कहा रसद नहीं है। रात के समय रसद लाने का हुकुम दो। फिर ४०० भैंसे रसद लाये। उनके साथ महाराणा के राजपूत भी किले में घुस गये। और दरवाजे पर कब्जा कर लिया।

---

१ ग्रंथकर्त्ता के पूर्वज भी रावतखान के पुरोहित थे परंतु इस समय पुरोहित राम को महाराणा के पास रखा तब से रावत की पुरोहिताई छोड़ के वंशज महाराणा की सेवा कर रहे हैं।

बनवीर अपने बाल बच्चों को लेकर लाखोटा की बारी के रास्ते भाग गया। वि० स० १५९७ ई० सन् १५४० में मेवाड पर अधिकार किया।

झाला सज्जा का लडका जेतसिंह राव मालदेव के पास जोधपुर गया। वहा उसे खेरवे की जागीर मिली। और अपनी पुत्री स्वरूपदेवी का विवाह मालदेव के साथ किया। परन्तु उसकी छोटी लडकी उससे भी खूबसूरत थी, उसके साथ भी मालदेव ने शादी करनी चाही। पर जेतसिंह ने मजूर नहीं की इस पर मालदेव ने जबरन करनी चाही। अन्त में जेतसिंह ने दो महीने की मुहलत शादी की तैयारी की मागी। मालदेव ने १५ हजार रुपया देकर २ माह की मुहलत दी। इसी समय जेतसिंह ने महाराणा उदयसिंह को कहलाया कि मैं अपनी लडकी पर सौत देना नहीं चाहता हु इससे आप शादी कर ले आवें। यह खबर पाते ही महाराणा गुडे पहुँच शादी कर लाये। उस समय स्वरूप देवी ने अपनी छोटी बहिन को दहेज में देने के लिये जेवर का डिब्बा तैयार किया। परन्तु भूल से उसकी एवज में राठोडों की कुलदेवी माता नागरेचणजी का डिब्बा दे दिया। वह कु भलगढ़ पहुँचने पर खोला गया। तो जेवर के बजाय माता जी का डिब्बा निकला तभी से प्रत्येक उत्सवों पर इसकी पूजा होती है। भादों सुदि ७ और माघ सुदि ७ को त्यौहार मनाकर दरबार होता था और उसमें कविलोग इस शादी के गीत गाते थे।

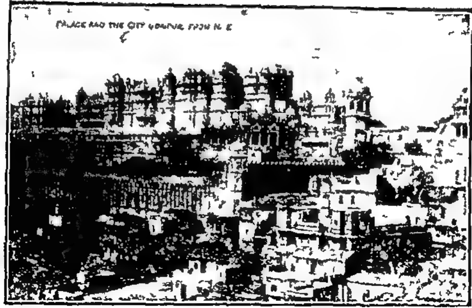
जब मालदेव ने शादी होने की खबर सुनी तब अपनी मांग को पीछा ले जाने के लिये कुंभलगढ़ पर हमला किया। पर परास्त होकर लौटना पड़ा।

महाराणा ने इस झाली राणी के लिये कुंभलगढ़ में कटारगढ़ पर नया महल बनवाया जो मारवाड़ में दूर से दिखाई देता और झाली रानी के मालिये नाम से प्रसिद्ध था।

आज दिन तक कामड़ जोगी इसका गीत "झाड़ कटाया झाली न मिले, रण कराया राव कीजो वांसजनाने मां वसां छा कुम्भलमेर. कुम्भलगढ़ रे कागरे तू माछर वे न आव" इस तरह के गीत गाते हैं।

वि० सं० १६११ ई० सन् १५५४ में महाराणा ने बूँदी के राव सुरताण को गद्दी से उतार कर राव सुरजण को बूँदी की गद्दी पर बिठाया। तथा रणथंभोर की किलेदारी दी।

शेरशाह सूर का गुलाम हाजीखां ने अजमेर पर कब्जा कर लिया। उस पर राव मालदेव ने फौज भेजी हाजीखां ने महाराणा से मदद मांगी महाराणा मदद पर गए और उसे बचाया. परन्तु महाराणा ने भी उससे रंगराय पातर मांगी उसने बहुत आजीजी की पर महाराणा ने न मानी तब उसने मालदेव से मदद मांगी और लड़ाई होने पर वि० सं० १६१३ फाल्गुन वदि ६ ता० जनवरी सन १५५७ ई० को हरमाड़ा गाँव के पास हार कर लौटना पड़ा।



PALACE AND THE CITY LOOKING FROM N. E.



उदयसागर

वि० स० १६१६ चैत सुदी ७ ता० १६ मार्च सन् १५५६ ई० को महाराणा के कुंवर प्रतापसिंह के कुंवर अमरसिंह का जन्म हुआ, इस मौके पर महाराणा एक लिंग जी के दर्शन करने आये वापिस लौटते हुए पहाड़ों का मौका अच्छा देख कर उदयपुर बसाया। और देवाली गाँव से दक्षिण पहाड़ी पर मोती महल बनाना प्रारम्भ किया और साथ ही उदयसागर तालाब बनाया जो तीन वर्ष में तैयार हुआ।

बादशाह ने ग्वालियर ले लिया तब वहां का राजा रामशाह तँवर महाराणा की शरण में आया महाराणा ने उसे ८०० रुपये रोजाना देकर रख लिया। इसी तरह मालवा लेने पर वहां का बादशाह बाज बहादुर दक्षिण में निजा-मुल्मुल्क के पास गया। परन्तु उसने वहां न रखा। तब वह महाराणा के पास आया। महाराणा ने उसे बड़े आदर सत्कार से रख लिया। जब अकबर को यह खबर मिली। तब उसने बाज बहादुर का तसल्ली देकर वापिस बुला लिया।

जयपुर, जोधपुर आदि राजाओं को अकबर ने अधीन कर उनकी राजकियों से शादी की परन्तु महाराणा ने उसकी परवाह न की। इसलिये वह महाराणा पर चढ़ाई करने का मौका ढूंढ रहा था, इसी अरसे में महाराणा ने मालवा के

बादशाह बाज बहादुर को शरण में रख लिया। और महाराणा का छोटा पुत्र शक्तिसिंह महाराणा से नाराज होकर बादशाह के पास गया। उसे रख लिया। जब बादशाह मालवे जारहे थे और धौलपुर मुकाम था वहां शक्तिसिंह को पूछा कि महाराणा पर हम चढ़ाई करेंगे। तुम क्या सहायता दोगे ? शक्तिसिंह ने सोचा कि इस चढ़ाई की बदनामी मेरे ही सिर पर आयगी इससे वह बिना आज्ञा एक दम चित्तौड़ चला आया। और बादशाह की चढ़ाई करने की मंशा महाराणा को कह सुनाई इससे बादशाह ने मालवा जाना छोड़ कर चित्तौड़ की तरफ कूच किया। महाराणा ने भी सब सरदारों से राय पूछी। सबने कहा कि जब २ किले में रह कर के लड़ाई की रसद समाप्त होने पर किला शत्रु के हाथ में गया। और लड़ मरने के अलावा कुछ न कर सके। इसलिये आप तो पहाड़ों में चले जायँ, हम यहां पर रह कर लड़ेंगे। आप के बाहर रहने से हमको सहायता भी मिल सकेगी। इस पर महाराणा किले में ८००० हजार सेना राठौर जयमल और चूंड़ावत पत्ता की अध्यक्षता में छोड़ कर आप मेवाड़ के पश्चिमी पहाड़ों में चले गये।

बादशाह वि० सं० १६२४ आश्विन, सितम्बर सन् १५६७ को चित्तौड़ की तरफ रवाना हुए। शिवपुर, कोटा, गागरौन लेकर अकबर ने आसफखां और वजीरखां को मांडलगढ़ पर भेजा। उसने वहां पर भी कब्जा कर लिया।

बादशाह माडलगढ़ से कूच कर मार्ग शीर्ष वदी ६ ता० २३ अक्टूबर को चित्तोडगढ़ के किले के पास पहुँचा। और १ महीना किले के घेरा डालने में बाता। इस अर्से में आसफखां को रामपुरे भेजा। वहां उसने कब्जा कर लिया। और राणा के पीछे हुसैन कुलीखा को उदयपुर की तरफ पहाडों में भेजा। परन्तु महाराणा का पता नहीं लगा। जिससे निराश होकर वह लौट आया। अकबर ने किले पर अपनी कामयाबी न देखकर सुरंग लगाने व साबात बनाने का हुकम दिया। और तोपखाने के मोर्चे लगवाये। लाखोटा की बारी के सामने बादशाह स्वयं हसनखा चगताईखा, रायपतरदास, इखतियार खा आदि रहे। उनके मुकाबले पर किले में राठोड जयमल रहा। यहा एक सुरंग खोदी गई। दूसरा मोर्चा पूर्व की तरफ सूरजपोल पर शुजातखा, राजा टोडरमल, और कासिमखा तोप खाने सहित मौजूद थे। इनके मुकाबले पर किले में रावत साईं-दास चूडावत, यहा से एक साबात पहाडी के बीच तक बनाई। तीसरे मोर्चे पर दक्षिण की तरफ चित्तौडी बुर्ज के सामने ख्वाजा अब्दुलमजीद आसफखा आदि थे उनके मुकाबले पर किले में बल्लू सोलखी रहा।

एक दिन किलेवालों ने रावत साहिब खान चौहान (कोठारिया) और डोडिया ठाकुर साडा (लावा) को अकबर के पास भेजकर कहलाया कि हम आपकी अधीनता स्वीकार कर वार्षिक कर दिया करेंगे। पर अकबर ने कहा कि राणा

के आये विना संधि मंजूर नहीं हो सकती फिर राजपूतों ने जोश में आकर लड़ाई शुरू करदी। किले के तोपची बड़े होशियार थे। वे सुरंग खोदनेवालों तथा सवातवालों को निशाना मार २ कर उड़ाते थे। तहलटी तक दो सुरंगें बनाई गई। एक में १२० और दूसरी में ८० मन बारूद भरी गई। एक सुरंग से ५० राजपूत सहित किले की बुर्ज उड़ी उससे शाही फौज आगे बढ़ी। दूसरी सुरग भी उड़ी जिससे शाही फौज के २०० जवान मारे गये। इस तरह एक दिन दो रात तक दोनों फौजें खूब लड़ती रहीं। यहां तक लड़ीं कि खाना पीना भी छोड़ दिया। राजपूतों ने शाही फौज को खूब रोका। एक दिन अकवर ने किले की दीवार पर एक राजपूत को इधर-उधर घूमते देख उस पर संग्राम नामी बंदूक चलाई जिससे वह घायल होगया। यही जय[illegible] था। किले में रसद न रहने से सब ने सलाह कर जौहर कर की आज्ञा देदी। किले में पत्ता चूंडावत राठौर खान, और ईश[illegible] राज चोहान की हवेलियों पर जौहर की धधकती हुई अग्नि देख कर अकबर बड़े ताज्जुब में हुआ। तब आमेर के राजा भगवानदास ने कहा-कि जीत की आशा न रहने पर राजपूत अपनी स्त्रियों को अग्नि में जलाते-आर्थात जौहर व्रत करते हैं। अब सुबह होते ही किले के दरवाजे खुलेंगे इससे हमको होशियार रहना चाहिए। सुबह होते ही शाही फौज ने किले पर हमला किया। किले वाले भी किवाड़ खोल कर शाही फौज पर टूट पड़े।

राठौर जयमल बादशाह के हाथ की गोली लगने की वजह से लंगडा होगया था। इससे राठौर कल्ला के कन्धे पर बैठ कर लडा। और हनुमानपोल और भैरवपोल के बीच में दोनों मारे गये। डोडिया साडा घोडे पर बैठ कर शाही सेना से लडता हुआ गमीरा नदी के पश्चिमी किनारे पर मारा गया। हजारों सवार साथ लेकर अकबर हाथी पर सवार होकर किले में घुसा। ईश्वरदास चोहान ने एक हाथ से हाथी का दांत पकडा दूसरे से सूँड में खंजर मार कर कहा कि बादशाह को मेरा मुजरा पहुँचे। इस तरह राजपूतों ने कई हाथियों के दांत और सूडें काट डाले। जिनसे हाथी वहीं मर गये। पत्ता चूडावत बडी बहादुरी से लडा परन्तु एक हाथी ने उसे सूंड से पकड कर पटका। जिससे रामपोल के पास मर गया ईरावत साईंदास, राजराणा जैता राजराणा सुल्तान, राव संग्रामसिंह रावत साहिबखान, राठौड नेतसी आदि मारे गये। प्रजा भी युद्ध में शरीक थी। इससे अकबर ने कतल आम का हुकुम दिया।

चैत वदी १३ वि० स० १६२४, २५ फरवरी १५६८ में दोपहर के समय अकबर ने किले पर कब्जा किया तथा ३ दिन वहां पर ठहर कर अजमेर को रवाना हुआ। बादशाह ने जयमल और पत्ता की बहादुरी पर प्रसन्न होकर उनकी हाथियों पर बैठी हुई मूर्तियां बनवा कर आगरे के किले में रखवाईं।

इस लडाई में लडने वालों के सिवाय ४० हजार आदमी किले में थे। उनमें सिर्फ १ हजार बचे। टाड साहब ने लिखा

है कि मरे हुए आदमियों की जनेऊएँ इकट्ठी कराकर तोली गईं तो ७४॥ मन (चार सेर का १ मन) निकलीं और राजस्थान में चिट्ठियों पर भी ५४७४॥ लिखा जाता है। उसका यही मतलब है कि दूसरा कोई कागज खोले तो चित्तौड़ मारने का पाप लगे। यह चित्तौड का प्रसिद्ध तीसरा "शाका" हुआ।

महाराणा गुजरात में राजपीपला के पहाड़ों में गये थे लौट कर उदयपुर आये।

इसके दूसरे ही साल बादशाह ने रणथंभोर पर चढ़ाई की किला फतह न हुआ परन्तु आंबेर के राजा भगवानदास के लालच देने से बूंदी के राव सूरजण ने महाराणा की अधीनता छोड़कर किला बादशाह के सिपुर्द कर दिया। इस अनुचित कार्य्य की यादगार में नेनसी महता लिखता है कि अकबर ने राव सुरजण की कुत्ते की मूर्त्ति बनवाई।

इन महाराणा का देहान्त वि० सं० १६२८ के फाल्गुन सुदि १५ फरवरी २८ सन् १५७२ को गोगूंदे में हुआ। इनके २४ पुत्र थे

१ प्रतापसिंह २ शक्तसिंह (भींडर आदि शक्तावत) ३ वीरमदेव (लांगज, हमीरगढ़, सनवाड़आदि राणावत) ४ जैतसिंह ५ कानसिंह (अमरगढ़ आदि कानावत) ६ रायसिंह ७ दूंशालसिंह (सडिला गोडवाड़ में) ८ रुद्रसिंह (सिरोही

पिडवाडा रेणवास) ६ जगमाल (जहाजपुर) १० सगर (चित्तौड में राणा बना बाद मालवा में–उमरी, भदोडा गणेशगढ़ और गडोली) ११ अगर (टोडे कीडावर में) १२ शाह (रासेड छापरेड) १३ पच्याण (पच्यापुर हाजीवास आदि) १४ नारायणदास १५ सुल्तान (रेडवास) १६ लुणकर्ण (दाथा) १७ महेशदास (टाटोल) १८ चदा १६ भावसिंह २० नेहसिंह २१ नगराज (मालवे में रोल गाव खाखदरो) २२ वैरीशाल २३ मानसिंह और २४ साहिब खान।

इन्हों ने चूँडावत कृष्णदास को सलूँबर और मेडत्या । राठोड जयमल को बदनोर दिया था।

"अमर काव्य" नामक पुस्तक जो इनके पोते अमरसिंह के नाम पर बनी। उसमें इनका हाल इस प्रकार लिखा है कि "राव सुरतान को अजमेर पठानों से लेकर दिया। आमेर के राजा भारमल ने अपने बेटे भगवानदास को इनकी सेना में भजा। राव सुल्तान को बूँदी से निकाल कर राव सुरजन को बूँदी की गद्दी पर बैठाया। और रणथंभोर की किलेदारी दी। १०० गाव फूलिये के दिये। रावत साईंदास को नगराल, भैंसरोड, बडोद और बेगम दिया। ग्वालियर के राजा रामशाह को बारादशोर दिया। मेडता के जयमल राठौड को १००० गाव सहित बदनौर, खींची वाडा के गोपालसिंह खींची और आबू के राजा इनकी सेवा थेकरते। राव मालदेव के बडे बेटे

रामसिंह को १०० गांव समेत केलवा का ठिकाना दिया। ईडर का राव नरायणदास गुजराती बादशाह की मदद से नौकरी में नहीं आता था।

वि० सं० १६१६ चैत्र, १५६० मार्च में उदयपुर बसाया। और देवाली गांव के पास नोनी महल बनाये। एक दिन शिकार को गये थे वहां पहाड़ी पर धुआं निकलता देखकर वहां गये। उस पहाड़ी पर एक साधु तपस्या कर रहा था। उसने कहा—हे राजन् ! यदि तुम नगर बसाओ तो यहां महल बनाना जिससे तुम्हारा राज्य स्थिर रहे। जहां साधु की धूनी थी वहां पर एक नोचौकी बनवा कर अपना सिंहासन बनवाया। गद्दी बैठने के समय तो राज्याभिषेक वहीं पर होता था। और उसके आस पास वर्तमान महल बनवाये। उनके समय में कोठार, सिलहखाना, राय आंगन, नीका की चौपाड़ बन चुकी थी। पिछोला तालाब का बंध बड़ी पाल भी बंधवाई।

५७ प्रतापसिंह प्रथम—

महाराणा उदयसिंह का रानी भट्याणी पर विशेष प्रेम होने से उसके लड़के जगमाल को युवराज बनाया। और वह गद्दी बैठ गया परन्तु उसको अयोग्य समझ क्लेश न होने की गरज से सरदारों ने उसको हटाकर प्रतापसिंह को फाल्गुन सुदी १५ सं० १६२८, १ मार्च सन् १५२७ को महाराणा की



महाराणा प्रतापसिंह १

दाह क्रिया के पीछे गोगुन्दे में गद्दी पर बिठाया। उस दिन होली थी। राजपूत लोग भी उसी दिन अहेडा की शिकार खेलते हैं। अतः भविष्य में रोक न पड़े इससे सबने महाराणा से अर्ज कर अहेडा की शिकार खेली। बाद रवाना होकर कुंभलगढ गये और वहीं राज्याभिषेक हुआ। इनका जन्म जेष्ठ सुदी ३ रविवार १५९७, ७ मई सन् १५४० को हुआ था।

सब सरदार महाराणा की दाह क्रिया करने गये, पीछे से जगमाल गद्दी पर बैठ गया। उसको ग्वालियर के राजा रामशाह, रावत कृष्णदास चूँडावत आदि सरदारों ने उठा कर प्रतापसिंह को गद्दी पर बैठाया। इससे जगमाल नाराज होकर बादशाह के पास गया। बादशाह ने उसको जहाजपुर परगना दिया। इन्हीं दिनों में सिरोही के देवडों के आपस में झगडा हुआ। और देवडा सुलतान ने आधा राज्य बादशाह को नजर किया। वह भी बादशाह ने जगमाल को दे दिया।

बादशाह अकबर ने गुजरात फतह कर आमेर के कुँवर मानसिंह को डूगरपुर व उदयपुर की तरफ भेजा। मानसिंह डूगरपुर फतह कर वि० सं० १६३० आषाढ़, जून १५७३ में उदयपुर आये। महाराणा को बादशाह का अधीनता स्वीकार कराने के लिये बहुत समझाया। पर यह बात महाराणा ने मंजूर न की। महाराणा ने कुँवर मानसिंह की खातिर में उदय-सागर की पाल पर दावत तैयार कराई। और भोजन के समय

आप तो न आये। और कुँवर अमरसिंह को मानसिंह की खातिरी करने के लिये भेजा। कुँवर मानसिंह भोजन करने को बैठा, और महाराणा की इंतजार की। जब महाराणा न आये तब न आने का कारण पूछा। कुँवर ने कहा—उनके पेट में दर्द है। मानसिंह इस रहस्य को समझ गया कि मेरी भुआ की शादी बादशाह से की इससे महाराणा मुझ से परहेज करते हैं। इस पर कहा—कि पेट के दर्द का इलाज मेरे पास अच्छा है। अब तक हमने आप की भलाई की आगे को सावधान रहना। यह सुनकर महाराणा ने कहलाया कि यदि आप स्वयं अपने बल से आओगे तो मालपुरे तक पेशवाई करूँगा। और फूफा के बल पर आओगे तो जहां मौका होगा वहीं स्वागत करूंगा। यह सुनकर मानसिंह नाराज होकर चलदिये महाराणा ने उन सोने चांदी के बर्तनों को उदय सागर में फिकवा दिये। जिससे उनका भोजन बना था। और उस जगह को एकएक गज खुदवा कर गंगाजल से धुलवाई। इसी कारण दोनों के मन में द्वेष बढ़ गया। मानसिंह ने अपमान का समस्त वृत्तान्त अकबर से जाकर कहा। इस अपमान का बदला लेने तथा महाराणा को अधीन करने की गरज से अकबर ने मानसिंह की अध्यक्षता में फौज भेजी उसके मांडलगढ़ पहुंचने की खबर सुनकर महाराणा कुँभलगढ़ से गोगुंदे आये। महाराणा ने मांडलगढ़ के पास लड़ाई करने का विचार किया। परन्तु सरदारों ने कहा—वह फूफा जी की

फौज लेकर आया है। इससे पहाड़ों में लड़ना अच्छा है। यह बात मान कर गोगुदे ही रहे। मानसिंह मोही होता हुआ खमणोर के पास आया। और हल्दी घाटी से कुछ दूर बनास नदी पर डेरा डाला। महाराणा भी गोगुदे से रवाना होकर मानसिंह से ३ कोस की दूरी पर ठहरे। एक दिन मानसिंह शिकार खेलने को गया। उस वक्त किसी ने कहा मानसिंह पर हमला करें परन्तु महाराणा ने कहा—यह काम बहादुरों का नहीं है।

जेठ शुदी ३ वि० सं० १५७६ ३१ मई १५७६ को खमनोर के पास हल्दी घाटी पर दोनों फौज का मुकाबला हुआ और घमसान लड़ाई होने के बाद बादशाह की फौज को हरा बल भाग निकली। महाराणा ने अपना वचन पूरा करने के लिये मान सिंह के हाथी पर अपने चेटक घोड़े को ललकार कर बढ़ाया। घोड़े के दोनों अगले पैर हाथी के चाचरे (सिर) पर जा लगे। और हाथी के हौदे में बैठे हुए मानसिंह पर अपनी सांग (बर्छा) का वार किया। परन्तु मानसिंह हौदे में छिप गया, जिससे वह बच गया। ऐसा भी कहते हैं कि वह बर्छा मान सिंह के शरीर पर कवच में लगा। महाराणा ने जाना कि उसका काम तमाम हो गया। यह सोच कर उसी समय अपने घोड़े को पीछा पलटाया। उस मानसिंह के हाथी की सूंड में खांडा था उससे घोड़े का पैर कट गया। इस प्रकार बादशाही फौज को तितर बितर कर कुंवर मानसिंह कछवाहे को खातिर कर महाराणा अपने लश्कर को लौटे। इस लड़ाई

के बाबत टाड साहबने महाराणा को हार होना लिखा। मैं इसको स्वीकार नहीं करता। महाराणा ने बादशाही फौज को भगा कर मानसिंह की खातिर करदी। उनके पास इतनी सेना नहीं थी कि डट कर युद्ध करते। मुगलों की असंख्य सेना के मुकाबले में उनकी मुट्ठी भर सेना क्या कर सकती थी, उनको तो एक एक क्षत्री अमूल्य था, इसलिये अपना कर्तव्य कर लौट गये। अगर मुगलों की सेना विजयी होती तो वह उनका जरूर पीछा करती। यह तो दुश्वार था, मानसिंह ने तो अपने प्राण बचने के लिये ईश्वर का बधाई देकर शीघ्र अपने केम्प का रास्ता लिया। अकबर बादशाह का भेजा हुआ अलबदायूनी (मुन्तखिबतवारीख[1] का कर्त्ता) जो इस लड़ाई में कुंवर मानसिंह के साथ था वह इस तरह लिखता है/। (ओझा गारी शंकर का मेवाड़ का इतिहास):—

जब मानसिंह और आसफखां गोगुन्दे से सात कोस पर दर्रे के (घाटी के) पास शाही सेना सहित पहुँचे तो राणा लड़ने को आये। ख्वाज़ा महमदरफी बदख्शी, शाहबुद्दीन गुरोह व पायन्दा कज़ाक, अलीमुराद उज्जबक और राजा लूणकरण तथा बहुतसे शाही सवारों सहित मानसिंह हाथी पर सवार होकर बीच में रहा और बहुत प्रसिद्ध जवान पुरुष हरावल के आगे रहे। चुने हुए आदमियों में से ८० से अधिक लड़ाके सैय्यद हाशम बारहा के साथ हरावल के आगे भेजे गये,

१ इस हल्दी घाटी के विषय मे कर्नल टाड़ ने कुछ सत्य इतिहासिक घटना लिखा हम भी उसका समर्थन करते हैं



महाराणा प्रताप [illegible] हल्दी घाटी में

और सय्यद अहमदखाँ बारहा दूसरे सय्यदों के साथ दक्षिण पार्श्व में रहा।

इस हल्दीघाटी के युद्ध से जिस वक्त महाराणा ने मानसिंह पर बर्छा मार कर अपने चेटक घोड़े को पीछा पलटा कर अपने लश्कर का रास्ता लिया उस वक्त मुगलों की सेना में गड़बड़ मच रही थी और वह भाग रहे थे, उनमें से दो मुसलमान अफसर भी अपनी जान लेकर भाग रहे थे, उन्होंने भी वही रस्ता लिया शक्तिसिंह का भ्रातृप्रेम उमड़ आया और उसको ख्याल हुआ कि कहा यह महाराणा को न जा पहुँचे, और वह एक दम शाही फौज में से उनके साथ हो लिये और उनको मार कर महाराणा के पास पहुँचे। और आवाज देकर महाराणा को रोका, ज्यों ही महाराणा ने अपने घोड़े को रोका वह तीन पैरों से ही वेग में जा रहा था इससे महाराणा के रोकते ही गिरने लगा। महाराणा भूमि पर उतर पड़े और उनका चेटक घोड़ा वहीं गिर कर मर गया। शक्तिसिंह ने उतर कर महाराणा से मुजरा कर अपना घोड़ा उनको नजर किया वह उस पर सवार हो कर अपने लश्कर में होकर आगे कोल्यारी की तरफ गये और शक्तिसिंह पीछा मानसिंह के पास शाही लश्कर में आया। यह जो वृत्तान्त कर्नल टाड ने लिखा है और ओझा गौरीशंकर ने उसको राजस्थान के इतिहास में स्वीकार नहीं किया, इतने अरसे तक मैं भी गौरीशंकर ओझा जी से सहमत था परन्तु

हाल में वर्तमान महाराणा साहब ने इसी हल्दी घाटी के असली चित्रपट जो उसी समय का बना हुआ है। उसकी नई नकल कराई उसको मैंने ध्यान पूर्वक देखा तो उसमें महाराणा का युद्ध क्षेत्र से लौटना शक्तिसिंह का दोनों मुसलमानों को मार कर महाराणा के पास पहुँच कर मुजरा करना साफ दिखाई पड़ता है और महाराणा की सेना जिसमें झाला मानसिंह बड़ी सादड़ी, व ग्वालियर के राजा रामशाह आदि थे। शत्रु से युद्ध करते रहे यह सब चित्रित है। ऐसा मोतबीर प्रमाण देखकर मैं भी कर्नलटाड़ के लिखने को सही मानता हूँ। इसके अलावा यह दोनों मुगल अफसर खुरासान और मुलतान की तरफ के कहते हैं इनको मारने के कारण उसी दिन से भींडर महाराजे का बिडद् चारण लोग खुरासान मुलतान की आगल कह कर पुकारते हैं। टाड़ साहब ने भी लिखा है और अभी तक चला आता है। राज प्रशस्ति में भी यही लिखा। वह जमाना भी करीब का ही था इसलिये उसमे भी संशय नहीं कर सके अलबत्ता राज प्रशस्ति की पीढ़ियों में फरक जरूर है वह बात पृथ्वीराज रासे की गड़बड़ से और अलग अलग प्रशस्तियों का शोधन करने से गड़बड़ हुई परन्तु हल्दीघाटी के युद्ध के वृत्तान्त में गड़बड़ नहीं हो सकती वह लेख मानने योग्य है। शेख इब्राहीम चिस्ती के संबन्धी अर्थात् सीकरी के शेख़-ज़ादों सहित क़ाज़ीखां। वामपार्श्व में रहा और मेहतरखां चंदावल में राणा कीका (प्रतापसिंह) ने सेना के दो

विभाग किये । एक विभाग ने जिसका सेनापति हकीम सूर अफगान था पहाड़ों से निकल कर हमारी हरावल पर हमला किया रास्ते टेढ़े मेढ़े और काटेदार होने के कारण हमारे हरावल में गड़बड़ मच गई। जिससे हमारी हरावल की पूर्ण रीति से पराजय हुई। हमारी सेना के राजपूत जिसका मुखिया राजा लूणकरण था। और जिनमें से अधिकतर वामपार्श्व में थे। भेड़ों के झुंड की तरह भाग निकले। और हरावल को चीरते हुए अपनी रक्षा के लिये दक्षिणी पार्श्व की तरफ दौड़े। इस समय में (अलबदा ने) जो कि हरावल की खास सैन्य के साथ था। आसफखा से पूछा कि ऐसी अवस्था में हम अपने और शत्रु के राजपूतों की पहिचान कैसे कर सकें। उसने उत्तर दिया कि तुमतो तीर चलाते जाओ चाहे जिस पक्ष के आदमी मारे जाय। इस्लाम को तो उससे लाभ ही होगा। इसलिये हम तीर चलाते रहे। और भीड़ ऐसी थी कि हमारा एक भी वार खाली नहीं गया। तथा काफिरों (हिन्दुओं) को मारने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ इस लड़ाई में बारहा के सैय्यदों तथा कुछ जवान वीरों ने रुस्तम कीसी वीरता दिखाई। दोनों तरफ के वीरों से क्षेत्र भर गया। राणा कीका की सैन्य के दूसरे विभाग ने जिसका सचालक राणा स्वय था। घाटी से निकल कर काजीखा के सैन्य पर जो घाटी के द्वार पर था-हमला किया। और उसकी सेना का सहार करता हुआ

उसके मध्य तक पहुँच गया। जिससे सब के सब सिकरी के शेखज़ादे भाग निकले। और उनके मुखिये मंसूर के (जो शेख इब्राहीम का दामाद था) भागते समय एक तीर लग गया जिससे बहुत दिनों तक उसका घाव न भरा। काजीखां मुल्ला होने पर भी कुछ देर तक डटा रहा परन्तु दाहिने हाथ का अंगूठा तलवार से कट जाने पर वह भी अपने साथियों के पीछे भाग गया। हमारी जो फौज पहले हमले में भाग निकली थी। वह नदी बनास को पार कर ५-६ कोस तक भागती ही रही। इस तबाही के समय मेहतरखां अपनी सहायक सेना सहित चंदावल से निकल आया। उसने ढोल बजाया। और हल्ला मचाकर बादशाह के आने की खबर उड़ाई और सेना को इकट्ठी होने के लिये कहा। उसकी इस कार्रवाही ने भागती हुई सेना में आशा का संचार कर दिया। जिससे उसके पैर टिक गये। ग्वालिर के राजामान के पोते रामशाह ने-जो हमेशा राणा की हरावल में रहता था। उसने ऐसी वीरता दिखलाई कि जिसका वर्णन करना लेखनी की शक्ति से बाहर है। मानसिंह के वे राजपूत जो हरावल के वाम पार्श्व में थे भागे। जिसमें आसफ़खां को भी भागना पड़ा। और उन्हों ने दाहिने पार्श्व के सैय्यदों की सहायता ली। यदि इस अवसर पर सैयद लोग टिके न रहते तो हरावल के भगे हुए सैन्य ने ऐसी स्थिति उत्पन्न करदी थी कि बदनामी के साथ हमारी हार होती। दोनों सेनाओं के हाथी अपनी २ फौज से निकल कर एक दूसरे से खूब लड़े।

और हाथियों के दरोगा हुसैनखा जो मानसिंह के पीछेवाले हाथी पर सवार था, हाथियों की लडाई में शामिल हो गया। इस समय मानसिंह ने महावत की जगह वेट कर खूब वीरता दिखलाई। इनमें से एक बादशाह का खास हाथी राणा के रामप्रसाद नामक हाथी से खूब लडता रहा। अंत में रामप्रसाद का महावत तीर लगने से जमीन पर गिर पडा। उसी समय शाही महावत उछल कर उस पर जा बैठा ऐसी दशा में राणा टिक न सका और भाग निकला। जिससे उसकी सेना हताश होगई। मानसिंह के जवान अंगरक्षक बहादुरों ने बडी वीरता बतलाई। उस दिन से मानसिंह के सेनापतित्व के सम्बन्ध में मुल्ला शीरी का यह कथन "हिन्दू इसलाम की सहायता के लिये तलवार खींचता है" चरितार्थ हुआ।

इस लडाई में चित्तौडवाले जयमल का पुत्र राठोड रामदास, और ग्वालियर का राजा रामशाह अपने पुत्र शालिवाहन सहित बडी वीरता से लडकर मारे गये। तवर खानदान का वीर एक भी न बचने पाया। मानसिंह के साथ लडते समय महाराणा पर तीरों की बोछार की गई। और हकीम सूर जो शैय्यदों से लड रहा था-भाग कर राणा से मिल गया। इस तरह राणा की सेना के दोना विभाग एकत्रित हो गये। फिर राणा लौट कर पहाडों में-जहा चित्तौड की विजय के याद रहा करते थे और जहा वह मिले का सामान

सुरक्षित रखते थे-भाग गया । उष्णकाल के मध्य में इस दिन गर्मी इतनी पड़ रही थी कि खोपड़ी के भीतर मगज भी उबलता था ऐसे समय लड़ाई प्रातःकाल से लेकर दोपहर तक चली । और ५०० आदमी खेत रहे। जिनमें १२० मुसलमान और शेष ३८० हिन्दू थे। ३०० से अधिक मुसलमान घायल हुए उस समय लू आग के समान चल रही थी। हमारे सैनिकों में चलने फिरने की भी शक्ति नहीं रही थी, और सेना में यह भी खबर फैल गई कि राणा छल के साथ पहाड़ के पीछे घात लगाये खड़ा होगा। इसी से हमारे सैनकों ने राणा का पीछा न किया। और वे अपने डेरों में लौट कर घायलों का इलाज करने लगे। दूसरे दिन हमारी सेना ने वहां से चलकर रणक्षेत्र को इस अभिप्राय से देखा कि हर एक ने कैसा काम किया। फिर दर्रे से गोगुंदे पहुंचे। जहां राणा के महलों के कुछ रक्षक तथा मंदिरवाले-जिनकी कुल संख्या २० थी हिन्दुओं की पुरानी रीति के अनुसार अपनी २ प्रतिष्ठा के निमित्त अपने स्थानों से निकल आये और सब के सब मारे गये। अमीरों को यह भय था कि रात के समय कहीं राणा टूट न पड़े। इसलिये अपनी रक्षार्थ उन्हों ने सब मुहल्लों में आड़ खड़ी करवा दी। और गांव के चारों तरफ खाई खुदवा कर इतनी ऊंची दीवार बनवा दी कि सवार उसको फाँद न सकें। तत्पश्चात् वे निश्चिन्त हुए। फिर वे मरे हुए घोड़ों और सैनिकों की सूची बादशाह के पास भेजने को

तैयार करने लगे। जिस पर सैय्यद अहमदखां बरहा ने कहा कि ऐसी सूची बनाने से क्या लाभ है? मान लो कि हम हमारा एक भी घोड़ा सैनिक नहीं मारा गया। इस समय तो खाने का सामान[1] का बन्दोबस्त होना चाहिए। इस पहाड़ी इलाके में न तो अधिक अन्न पैदा होता है और न बनजारे ही आते हैं सेना भूखों मर रही। है फिर उस कार्य को छोड़ इस कार्य से प्रयोजन है? फिर वे एक २ अमीर की अध्यक्षता में सैनिकों को इस अभिप्राय से भेजने लगे कि वे बाहर जाकर अन्न ले आवें। पहाड़ियों में जहाँ कहीं भी लोग इकट्ठे मिले उन्हें कैद भी कर लाये। क्यों कि हरेक को जानवरों के मांस आम के फलों से–ना जहा पर बहुत से निर्वाह करना पड़ता था। साधारण सिपाहियों को रोटी न मिलने के कारण इन्हीं आम

---

१ लड़ाई के दूसरे ही दिन सेना के पास खाने-पीने का कुछ सामान न रहा और बाद को भी इसी कारण शाही सेना की दुर्दशा होती रही जिसका वर्णन फारसी इतिहासों में मिलता है। परन्तु उनमें यह कहीं नहीं लिखा मिला कि ५००० हजार सवारों की सेना के साथ एक दिन का भी खाने का सामान क्यों न रहा। इसका कारण यही मालूम पड़ता है कि लड़ाई के दिन महाराणा की फौज ने शत्रु सेना की रसद लूट ली हो या वहां सामान आने का मार्ग बंद कर दिए। —

के फलों पर गुजारा करना पड़ा था। जिससे वे अधिक संख्या में बीमार हो गये।

महाराणा के लश्कर में-इस युद्ध में ग्वालियर के राजा रामशाह तंवर, अपने पुत्र शालिवाहन, भवानीसिंह और प्रतापसिंह सहित, भामाशाह और उसका भाई ताराचन्द, झाला मानसिंह (देलवाड़ा। झाला मानसिंह (बीदा भी दूसरा नाम था, सादड़ी) सोनगरा मानसिंह अखेरा जोत, डोडिया भीमसिंह (लावा), कृष्णदास, (सलूँबर) रावत नेतसिंह (कानोड़) रावत सांगा (देवगढ़) राठौर रामदास (वदनौर). मेरपुर का राणा पुंजा, पुरोहित गोपीनाथ जगनाथ पुरोहित, आदि थे। इनके अलावा हाकिमखां सूर भी था। इनमें से झाला मानसिह (बीदा सादड़ी) झाला मानसिंह (देलवाड़ा) ग्वा लियर के राजा तंवर रामसिंह अपने तीनों पुत्रों सहित, रावत नेतसी (कानोड़) रठौड़ रामदास, डोडिया भीमसिह, राठौर शंकरदास आदि मारे गये।

इस लड़ाई में मेवाड़ की ख्यातों में कुँवर मानसिंह के साथ ८० हजार और महाराणा के साथ २० हजार, मुता नेनसी मानसिंह के साथ ४० हजार, और महाराणा के साथ ९-१० हजार सवारों की संख्या लिखी है। अलवदा यूनी ने मानसिह के साथ ५००० और महाराणा के साथ ३००० सवार होना लिखा है।

महाराणा लडाई होने के बाद कोल्यारी गाव में आकर अपने घायलों का इलाज कराने लगे। और मानसिंह गोगुदे में महाराणा के पीछे ताक लगाये बैठा रहा। पर सफलता नहीं मिली। तब बादशाह ने उसे अजमेर बुलाकर नाराज़ हो कुछ दिनों तक ड्योढी बद करदी। शायद यह युद्ध में हारने की सज़ा होगी। शाही फौज घबडा कर अजमेर लौट गई। महाराणा ईडर व सिरोही के राव को मिलाकर अरावली के दोनों तरफ व गुजरात लूटने लगे इस पर बादशाह ने जालोर व सिरोही पर फौज भेज कर उन्हें वश में किये परन्तु महाराणा को न रोक सका।

कार्तिक वदी ६ स० १५३३ ता० १३ अक्टूबर १५७६ ई० को बादशाह अकबर गोगुंदे आये। और कुतबुद्दीनखा, राजा भगवानदास और मानसिंह को महाराणा के पीछे भेजे। पर महारणा ने उनको जगह २ पराजित किया। जिससे वे पीछे बादशाह के पास आये। बादशाह ने इनकी नाकामयाबी से नाराज होकर ड्योढी बन्द कर दी। ६ महीने तक बादशाह इधर रहा। बाद बासवाडे की तरफ गया। लेकिन महाराणा ने कुछ परवा न की।

बादशाह के लौट जाने पर महाराणा ने भी पहाडों में से निकल कर शाही थानों पर हमला कर उठा दिये। यह सुन बादशाह ने राजा भगवानदास, कुँवर मानसिंह बैरामखा

के पुत्र मिर्जाखां (खानखाना) कासीमखां, मीरबहर को महाराणा पर भेजे। इनसे भी कुछ न बन पड़ा। बल्कि मिर्जाखां की औरतों को भी कुँवर अमरसिंह ने गिरफ्तार कर लीं उनके साथ महाराणा ने बहिन बेटी के समान व्यवहार किया। और वापिस उसके पास भेज दी। इससे खानखाना महाराणा के साथ अच्छा वर्त्ताव करने लगा।

इस तरह पराजय से घबरा कर आसोज सुदी १५ सं० १६२५, १५ अक्टूबर १५६८ को बादशाह ने मीर बख्सी शाहबाजखां को बड़ी फौज जिसमें राजा भगवानदास, कुँवर मानसिंह आदि अमीर देकर महाराणा पर भेजा। शाहबाजखां ने राजा भगवानदास और कुँवर मानसिंह को राजपूतों से मिल जाने के शुबह से रुखसत देदी। और आप आगे बढ़ा। महाराणा कई दिन लड़े पर रसद की कमी देख राणपुर चले गये। फिर भी पीछे से लड़ाई जारी रही। उसी समय किले में तोप के फट जाने से बहुत सामान बरबाद हो गया। तब किले वालों ने किले के किवाड़ खोल दिये। और खूब लड़कर मारे गये। बाद शाहबाज खां ने किले पर कब्जा कर लिया। फिर माहाराणा का पीछा किया परन्तु सफल न हुआ तथा बादशाह के पास लौट गया।

शाहबाज के जाने के बाद महाराणा छप्पन के राठौरों को सजा देने गये। बहांवड़ के लूणा राठौर को निकाल

कर चावड में महल बना कर वहीं रहने लगे। और वहा चामुडा माता का एक छोटा सा मंदिर बनाया।

भामाशाह ने मालवे पर चढाई कर २० हजार अशर्फियां दड में लीं। उनको महाराणा के नजर की। बाद महाराणा ने दीवेर के शाही थाने पर हमला किया कुँवर अमरसिंह ने थानेदार सुल्तानखा मुगल को मार कर अधिकार कर लिया। वहा से कुभलगढ जाकर कब्जा कर लिया। बादशाह ने फिर मिर्जाखा को मालवे की तरफ भेजा, उसने वहा महाराणा को बादशाही सेवा स्वीकार करने के लिये बहुत समझाया परन्तु महाराणा ने मजूर नहीं किया।

डूगरपुर और बाँसवाडे वाले शाही सेवा में चले गये थे इससे महाराणा ने उनपर फौज भेजी। सोम नदी पर लडाई हुई। डूगरपुर और बाँसवाडे वालों ने महाराणा की अधीनता स्वीकार करली। महराणा ने बाँसवाडे की तरफ से आकर शाही थानों पर हमला शुरू किया। वि० स० १६३७ ई० सन् १५८० में बादशाह ने फिर शाहबाजखा को मेवाड पर भेजा। और इतना सख्त हुक्म दिया की "यदि महाराणा को विजय कर न आओगे तो तुम्हारा शिर उडा दिया जायगा।" शाहबाजखा मेवाडमें आया तब महाराणा पीछे पहाड़ों में चले गये। वह भी थाने बिठा कर पीछा लौट गया। इस वक्त महाराणा ने यह आज्ञा जारी की कि कोई भी किसान खेती

करके मुसलमानों को हासिल देगा तो उसका सिर उड़ा दिया जायगा ऊंटाले के थानेदार ने एक खेत में सब्जी बोवाई; इसकी महाराणा को मालूम होते ही रात के वक्त अचानक शाही फौज में पहुँचे और उस किसान का सिर काट कर लड़ते हुये पीछे जंगलों में चले गये।

एक दिन बादशाह ने बीकानेर के राजा रायसिंह के छोटे भाई पृथ्वीराज को कहा कि अब राणा हमारी अधीनता स्वीकार करना चाहता है। और हमको बादशाह कहने लगा है। (बादशाह अकबर महाराणा को राणा कीका कह कर पुकारते थे और महाराणा प्रतापसिंह बादशाह को तुर्क कहते थे) इस पर पृथ्वीराज ने निवेदन किया कि यह बात कहाँ तक सच है मैं तो इस बात पर विश्वास नहीं करता। अगर अगर इजाजत हो तो इस बात का सही उत्तर मगाऊं। बादशाह से आज्ञा मिलने पर उसने ये दो दोहे लिख कर महाराणा को भेजे—

पातल जो पतशाह, बोले मुख हूं ता बायण।
मिहर पच्छिम दिसा माहिं, ऊगे कासपराव उत ॥ १ ॥
पटकूं मूंछा पाण, के पटकूं निज तन करद।
दीजे लिख दीवाण, इन दो महली बात इक ॥ २ ॥

महाराणा ने पीछे इसका उत्तर लिखा—

तुरक कहासी मुख पतौ, इन तण सू इकलिंग।

ऊगे ज्याही ऊगसी, प्राची बीच पतग ॥१॥
खुशी हुत पीथल कमद, पटको मूछा पाण।
पछ टण हे जे ते पतो, कलमा सिर के वाण ॥२॥
साग मूड सह सीस को, सम जस जहर सवाद।
भड पीथल जो तो भला, वेणा तुरक सू वाद ॥३॥

श्रावण शुक्ला १२ स० १६४० ता० २१ जुलाई ई० १५८४ को कुँवर अमरसिंह के कुँवर कर्णसिंह का जन्म हुआ जिसकी बडी खुशी मनाई गई। महाराणा अपना देश पीछा लेने लगे और जगह जगह शाही थानों पर हमले किये। यह खबर बादशाह को मिलते ही वि० स० १६४१ ई० सन् १५८४ में राजा जगन्नाथ कछवाहे को मेवाड पर भेजा। जगह २ मुकाबला होता रहा। परन्तु सफलता नहीं मिली। तब दो वर्ष वहा रहने के बाद फिर काश्मीर चला गया।

वि० स० १६४३ ई० सन् १५८६ में महाराणा ने चित्तोड और माडलगढ़ को छोड कर सब मेवाड पर कब्जा कर लिया। और मानसिंह व जगन्नाथ कछवाहे को व ढाइयों का बदला लेने के लिये आमेर के इलाके पर हमला कर मालपुरे को लूटकर नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। अब बादशाह अकबर भी महाराणा पर विजय पाने से निराश हो गया। और महाराणा ने भी अपनी शेष आयु आराम से व्यतीत की महाराणा ने कुँवर अमरसिंह की पुत्री का विवाह सिरोही के राव सुरतान

के साथ करना चाहा। इस पर सगर ने विनती की कि सिरोही वालों ने अपने भाई जगमाल को मारा है। अगर आप ही इसका बदला न लोगे तो और कौन लेगा। महाराणा ने जवाब दिया कि हमारे तो सब शीशोदिया समान हैं (जगमाल पहले गद्दी पर बैठ गया इस कारण महाराणा उससे नाराज थे) हम किस किस से वैर लेवें। इस पर सगर नाराज होकर यहां से आमेर चला गया। वहां सिपाहियों में नौकर रहा। कुँवर मानसिंह को उसकी कुवरानी की धाय के द्वारा सगर का पता लगा। कुवरानी और सगर की मां दोनों बहिनें थी। कुँवर मानसिंह के महल के नीचे सगर पहरा दे रहा था। वर्षा जोर से हो रही थी परनाले से पानी गिरने की आवाज जोर से आ रही थी। सगर ने सोचा कि कुँवर की नींद उड़ जायगी इससे परनाले के नीचे घास डाल दिया आवाज रुक गई। मानसिंह ने पूछा क्या वर्षा बन्द हो गई? दासी ने कहा, नहीं। इस पर मानसिंह ने दासी को नीचे जाकर देखने को कहा कि आवाज बन्द क्यों हो गई? दासी नीचे गई और पूछा पहरे पर कौन है? सगर ने उत्तर दिया- मैं हूँ इतने में बिजली चमकी, दासी ने बोली और शकल पहचान ली। तथा सगर से पूछा? लाल जी आप यहां कैसे आये? सगर ने अपना पूर्ण वृत्तान्त बता दिया। यह दासी मानसिंह की कुवरानी की धाय थी। उसने कुँवर मानसिंह को जाकर कहा मानसिंह नीचे आये। और सगर को ऊपर

महल में ले गया। और उसको दूसरी पोशाक पहना कर उसकी खातरी की। और दिल्ली बादशाह के पास ले गया बादशाह ने उसको अपने पास रख लिया। इन महाराणा ने अपनी स्वाधीनता और धर्म के लिये कितना ही कष्ट उठाया यहा तक कि युद्ध के समय कितनी जगह भोजन तैयार करने पर भी स्थिरता से भोजन नहीं कर सके। पहाड़ों में फुस के छप्परों में समय निकाला। एक दिन महाराणा छप्पर में थे। पास ही दूसरे छप्पर में कुँवर अमरसिंह और उनकी कुवरानी थी वर्षा हो रही थी पानी भीतर टपक रहा था। उस वक्त कुवरानी ने कहा-कब इस दुख से छूटेंगे, यह शब्द महाराणा ने सुनलिया। ये वचन उनके हृदय में चुभ गये।

एक दिन महाराणा शेर की शिकार को गये वहां कमान चढाते वक्त जोर पडने से आंत में खराबी होगई। और धीरे धीरे तकलीफ बढती गई जब बहुत तकलीफ बढगई और शांति नहीं हुई तब सलुंबर के रावत ने अर्ज की कि पृथ्वीनाथ! क्या कारण है कि इतनी तकलीफ हो रही है? और शान्ति नहीं होती। इस पर महाराणा ने कहा-मुझे भरोसा है कि मेरे पीछे अमरसिंह बादशाही खिलअत पहन कर मेरे देश की स्वाधीनता खोवेगा। क्यों कि यह आराम-तलब तथा कायर है। इस पर सब सरदारों ने शपथ खाई कि जहा तक हम जिंदे हैं वहां तक हर्गिज ऐसा न होगा। आप विश्वास रखें। यह सुनते ही माघ सुदी ११ वि० १६५३

ता० १९ जनवरी ई० सन् १५९७ को महाराणा का स्वर्गवास होगया। वहीं चांवड़ से १॥ मील दूरी पर वंडावली गाँव के पास इनकी दाह क्रिया हुई वहां उनकी छत्री बनी हुई है।

जब इनके स्वर्गवास की खबर बादशाह अकबर के पास पहुँची। उस समय वह भी उदास हुआ। उस वक्त चारण दुरसाआढ़ा ने महाराणा की प्रशंसा में कहा कि—

असलेगो अणदाग पाग लेगो अणनामी।
गो आड़ा गवड़ाय, जों को वहतो धुरवामि॥
नवरोजे नह गयो न गौ आतसां न वल्ली।
नगौ झरोखा हेठ, जेठ दुनियाण दहल्ली॥
गहलोत राण जीती गयो, दसण मूंद रसणा डसी।
नीसास मूक भरिया नयन तो मृत शाह प्रतापसी॥

छप्पय सुनकर बादशाह ने उसे इनाम दिया। और कहा कि इसने मेरा आशय ठीक कहा है।

इन महाराणा के १६ पुत्र हुए-१ अमरसिंह २ भगवानदास ३ सहसा (सहसमल धरयावद) ४ गोपाल ५ कचरा (जोलावास) ६ सांवलदास ७ दुर्जनसिंह ८ कल्याणदास (प्रसाद) ९ चांदा (दरिबा पास आंजणा) १० शेखा (नाणवेड़ा और विजापुर गोडवाड़ में) ११ हाथी (वोड्यावास, दांतड़ा, गेडूल्या) १२ रायसिंह (उदल्या वास मनकरी) १३

जसवन्तसिंह (जलोंदा कारुंडा) १४ पूरा (मगरोप, गुरला आदि पूरावत) १५ नाथा १६ रायभाड हुए। महाराणा ने चोंडावत कृष्णसिंह को आमेट और शक्तावत मानसिंह को भींडर दी।

५८ अमरसिंह (प्रथम)

यह महाराणा माघ सुदी ११ स० १६५३ ता० ७ जनवरी सन् १५९७ को गद्दी पर बैठे। इनका जन्म—चैत्र वदी ३० स० १६१६ ता० ११ मार्च १५६० ई० को हुआ था।

गद्दी पर बैठते ही मेवाड़ से सब शाही थाने उठाने की तैयारियां कीं। खबर मिलते ही बादशाह ने वि०स० १६५५ ई० सन् १५९८ में मेवाड़ पर चढ़ाई की। पहले फौज भेजी फिर स्वयं उदयपुर की ओर आये। महाराणा ने भी जगह जगह मुकाबला किया। और बादशाही इलाके लूट कर पहाड़ों में चले गये। इस अर्से में दक्षिण से बगावत होने की खबर आई जिससे बादशाह तो दक्षिण में चले गये। और शाहजादे सलीम को राजा मानसिंह कछवाहे के साथ अजमेर में छोड़ गये। शाहजादा भी मेवाड़ में थाने बैठा कर आगरे की तरफ चला आया।

महाराणा ने (वि० १६५७ ई० सन् १६०० में) बादशाही थानों पर हमला करने की तैयारी की। जिसमें प्रथम उटाले के

थाने पर हमला किया। चोंडावत और शक्तावत के बीच हरावल[1] में रहने का झगड़ा हो गया। हरावल में आगे चूंड़ावत रहते हैं, दाहिनी तरफ झाला तथा सारंगदेवोत आदि, बाईं तरफ चौहान, ंवार राठौर आदि, और पीछे चंदावल में शक्तावत रहते हैं। इसी प्रकार डेरे लगाये जाते हैं महाराणा ने कहा—चूंड़ावत और शक्तावत में से जो पहिले किले में घुसेगा वही हरावल में रहेगा। शक्तावतों ने दरवाजे पर और चूंड़ावतों ने किले की दीवार पर हमला किया। सीढ़ी लगा कर कृष्णावत रावत, जेत्रसिंह चूंड़ावत दीवार पर चढ़ने लगा। रावत बल्लु शक्तावत ने दरवाजे के किवाड़ों को हाथी से तुड़वाना चाहा और महावत को हूल देने को कहा परन्तु किवाड़ों में छोटे २ भाले लगे हुए थे इससे हाथी हूल नहीं सकता था। यह देख स्वयं रावत बल्लू किवाड़ पर खड़ा होगया और महावत को हूल देने को कहा। महावत ने बल्लू के बदन पर हूल दिया और किवाड़े तोड़े। उधर रावत जेत्रसिंह सीढ़ी पर से कोट पर चढ़ गया कि किले वालों की गोली लगने से नीचे गिर पड़ा। परन्तु उसने गिरते २ अपने आदमियों से कहा कि मेरा सिर काट कर किले के भीतर डाल देना। उसके आदमियों ने ऐसा ही किया। फिर बाद शक्तावत किवाड़े तोड़ किले में घुसे। परन्तु चूंड़ावत

---

१ सेना कैम्प का अग्र भाग।

जेत्रसिंह का सिर पहले किले में पडा था। इससे हरावल चूडावतों की ही रही। इस तरह महाराणा ऊंठाले के किले को फतह कर बागौर, माडल, आदि के थाने उठाते हुए मालपुरे तक पहुंचे। इस पर बादशाह ने मिर्जा शाहरुख को मेवाड की तरफ भेजा। महाराणा भी मालपुरे से उदयपुर चले आये।

बादशाह अकबर के मरने पर शाहजादा सलीम तख्त पर बेठा ओर जहांगीर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसने वि० सं० १६६२ ई० सन् १६०५ में शाहजादे परवेज को मेवाड पर भेजा। वह अजमेर से मेवाड की तरफ आया। रास्ते में राजपूतों ने हमले किये। परवेज ने चित्तौड पर महाराणा उदयसिंह के छोटे लडके सगर को राणा की पदवी देकर गद्दी पर बैठाया। वि० १६६२ चैत्र सुदी ६० सन् १६०६ मार्च में शाहजादा परवेज ऊंठाला ओर देवारी के बीच आया महाराणा ने उस पर हमला किया। शाहजादा भाग कर अजमेर चला गया।

वि० सं० १६६५ चैत्र सुदी ६ ई० सन् १६०८ में बादशाह ने महाबत खां को मेवाड पर भेजा। वह जगह २ थाने बैठता हुआ उंठाला पहुँचा महाराणा ने भी हमला करने का हुकुम दिया। रात के समय रावत मेघसिंह ने एक हिकमत अमली कर अपने १०-२० राजपूतों का कोरों के भेष में भैंसों

के साथ शाही लश्कर में भेजा। उन भैंसों पर खरबूजों की जगह आतिशबाज़ी भर दी। इधर से यह लोग महाबत खां की ड्योढ़ी पर पहुँचे, उधर तीनों तरफ से इतने ही आदमियों के गिरोह के साथ गाय बैलों के सींगों पर पलीते बांध कर उनमें आग लगा कर शाही फौज में हकाला उस वक्त ड्योढ़ी की तरफ के भैंसा वालों ने भी आतिशबाजी में आग लगादी। चारों तरफ यह आफत देखकर शाही फौज में गड़बड़ी मची। और रावत मेघसिंह ने एक दम ५०० सवारों के साथ हमला किया। महाबत खां ने भागकर जान बचाई। मेवाड़ी राजपूतों ने पीछा कर सब सामान लूट लिया। ज्योंही यह खबर दूसरी जगह पहुँची तो सब जगह के थानेदार भाग गये। सिर्फ चित्तौड़ और मांडलगढ़ में रह गये। इस पर महाबत खां पर बादशाह नाराज हुआ।

वि० सं० १६६८ ई० सन् १६११ में अब्दुल्ला खां को मेवाड़ में भेजा वह भी नाकामयाब हुआ। परन्तु वह बादशाह को लिखता रहा कि मैंने राणा का पीछा कर हाथी घोड़े छीन लिये हैं। रात होने के कारण महाराणा भाग गये। परन्तु मैंने ऐसा इन्तजाम कर दिया है कि या तो वह पकड़ा जायगा या मारा जायगा। इन्हीं दिनों में अहमदाबाद से ऊंटों से शाही ख़ज़ाना आगरे की तरफ जारहा था। खबर मिलते ही कुंवर कर्णसिंह मारवाड़ की तरफ पहुँचे परन्तु ख़ज़ाना पहले निकल चुका था जिससे वे निराश हो कर लौट आये। लौटते समय

माडलगढ और भाद्राजून के पास नाडोल के थाने पर से भाटी गोविन्ददास पर हमला किया। लडाई हुई जिसमे आदमी मारे गये। और कुंवर लोट कर पहाडों में गये।

वि० स० १६६८ ई० सन् १६११ में अब्दुल खां ने राणपुरा की घाटी के पास राजपूतों पर हमला किया। जिससे उसकी बुरी तरह से हार हुई। इस लडाई में देवगढ का रावत दूदा, नारायण दास सोनगरा, सूरजमल, आसकरण, पूर्णमल शक्तावत, हरिदास राठौड (बदनोर का), सादडी का झाला देदा, केशरी दास कछवाहा चौहान केशवदास और मुकंददास राठौड बदनोर का, आदि मेवाड के कई नामी सरदार मारे गये इस लडाई में गोडवाड पर मेवाड का पीछा कब्जा होने से राजपूतों का प्रभाव बढ गया। इसके बाद केलवा के पास राठोड मनमनदास ने भी अब्दुला की फौज पर छापा मारा। इस लडाई में अब्दुलाखां की नाकामयाबी होने पर बादशाह ने उसको वि० स० १६६८ ई० सन् १६११ में गुजरात का सूबेदार बनाकर वहा भेज दिया। और उसकी जगह राजा बासु को मेवाड पर भेजा। कुछ असे बाद ही राजा बासु की मदद पर मिर्जा शाहरुख के बेटे बदी उज्जमा और खान आजम को भेजा। इनसे भी कामयाबी न हुई तब लाचार होकर खुद बादशाह वि० स० १६७० ई० सन् १६१३ में अजमेर आये। और शाहजादा खुर्रम को मेवाड पर भेजा।

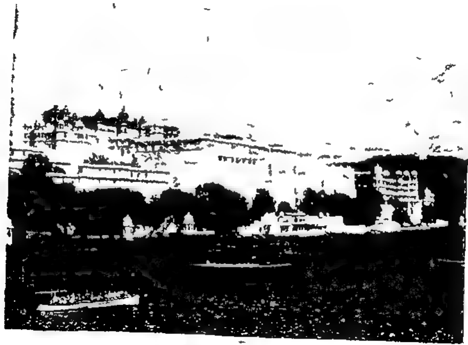
और उसके साथ जोधपुर का राजा सूरसिंह नवाजिसखां, तरबियतखां, अब्दुलफतह, राजा कृष्णसिंह किशनगढ़ वाला, राजा सूरजमल तंवर, (राजा वासु का बेटा) जगतसिंह तंवर, राजा विक्रमाजीत भदोरिया चौहान, सय्यद अली, सय्यद हाजी, मिर्जावली उज्जाम, मीर मुसाउद्दीन, रज्जाकबेग उज्जबक, दोस्तबेग, ख्वाजा मुईसन और बारहा का सैय्यद शिहाब को भेजे। इनके अलावा मालवा व गुजरात के सूबेदारों को मय उनके लश्करों के, दक्षिण से शाहजादा परवेजा की फौज में से वीरसिंह बुंदेला, मुहम्मदखां, याकूबखां, नियाजी, हाजीबेग उज्जबक, मिर्जा मुरादसफवी, अल्लाहयार, कूका, गजनीखां जालोरी आदि को भी शाहजादे के साथ जाने का हुक्म दिया। इतने वर्षों से लगातार लड़ते रहने से नामी २ सरदारों के मारे जाने पर भी महाराणा हताश नहीं हुए। और चौहान राव बल्लू (वेदला), चौहान रावत पूर्णराज कोठारिया, रावत भाणसारंग देवोत (कानोड़) राठौर मन्मनदास, झाला, हरिदास (सादड़ी) पंवार शुभकर्ण (बिजोलिया) रावत मेघसिंह (बेगम) रावत मानसिंह (सलूंबर), झाला कल्याण (देलवाड़ा) सोलंखी वीरमदेव (रूपनगर) सोनगरा केशवदास, गोड़िया जयसिंह (लावा) आदि सरदारों को मुकाबला करने को आज्ञा दी। शाहजादा रसद आदि का प्रबंध कर आगे बढ़ा कुंवर भीमसिंह ने अब्दुल्लाखां की ड्योढ़ी पर हमला किया और ऐसा तंग किया कि ४ महीने तक वह लड़ना ही भूल गया।

शाहजादे ने मेवाड के पहाडी इलाके में जगह २ थाने बैठाये। झाला शत्रुसाल और कल्याण ने आवड सवड की नाल मे शाही फौज पर हमला किया। शत्रुसाल घायल होकर मेवाड में चला आया। कल्याण कैद होकर शाहजादे पास भेजा गया शत्रुसाल गोगुंदे के थाने में सगर पर हमला कर लडा जिससे वह मारा गया। इस पर महाराणा ने सुलह होने पर उसके छोटे पुत्र कान्ह को गोगुंदा दिया। कुँवर कर्णसिंह ने मालवे पर हमला कर सिरोंज और दूसरों को बरबाद कर लूटा और बट लिया। राजपूत बडी बहादुरी से लडते २ दिन दिन कम होते जाते थे। और शाही सेना दिन दिन बढती जाती थी। राजपूतों के बालबच्चों की फिकर कर झाला हरिदास और पुँवार शुभकर्म ने कुँवर कर्णसिंह से अर्ज की कि हम शाहजादे की मन्शा जान लेवे यदि वह आप के शाही दरबार में आने से राजी होकर सुलह कर लेवे तो महाराणा का अपमान नहीं होवे और सुलह हो जाव तो उत्तम है। बाद राय सुंदरदास की मार्फत शाहजादे तक यह बात पहुचाई गई। वह तो पहले से ही इस बात को चाहता था। शाहजादे ने फोरन बादशाह तक यह खबर पहुँचाई। बादशाह यह सुनकर बडा प्रसन्न हुआ। और उनको इनाम दिया। बादशाह अपनी दिनचर्या तुजुक जहांगीर में लिखता है कि ' मेरा मुख्य उद्देश्य यही था कि राणा अमरसिंह और उसके बाप दादों ने अपने विकट पहाडों और सुदृढ स्थानों

के गर्व से न तो हिन्दुस्तान के किसी बादशाह को देखा है और न उसकी सेवा की है। मेरे राज्य में उसकी यह बात न रहे इसी उद्देश से शाहजादे की प्रार्थना से राणा के अपराध क्षमा कर दिये। और उसकी शान्ति के लिये अपनी हथेली की छाप लगाकर फरमान भी भेजा। साथ में खुर्रम को इस आशय की सूचना दी कि यदि तुम राणा के साथ का मामला तै कर सको तो मुझे बड़ी खुशी होगी। शाहजादे ने बादशाह का फर्मान महाराणा के पास पहुँचाया। कुँवर कर्णसिंह व सरदारों ने मिलकर सुलह की बात चीत व फरमान आने का हाल महाराणा को कहा। यह सुनकर महाराणा खुश और उदास होगये। और कहा अगर मुझे पूछ कर यह काम करते, तो मैं हर्गिज मंजूर नहीं करता, परन्तु तुमने तो बिना मेरी मंजूरी यह बात करली। अब अकेला मैं क्या कर सकता हूँ मेरी इच्छा मेरे पिता का अन्त समय का ताना सहने की न थी। आखिर फाल्गुन वदि २ वि० १६७१ ता० ५ फरवरी ई० १६१५ को महाराणा शाहजादे से मिलने गये। गोगुंदे के थाने पर उन दोनों का मिलाप हुआ। शाही लश्कर तक अब्दुल खां, राजा सूरसिंह, राजा वीरसिंह देव बुन्देला, सैय्यद सेफ खां बारहा आदि को शाहजादे ने लश्कर तक पेशवाई को भेजा। दस्तूर के अनुसार सलाम के बाद शाहजादा उनसे छाती से मिला अपनी बांई ओर बैठाया। महाराणा ने शाहजादे को एक उत्तम लाल जो तोल में ८ टांक और कीमत

में ८० हजार का था। कुछ जड़ाऊ चीजें ७ हाथी, ६ घोड़े नजर किये। शाहजादे ने भी महाराणा को बढ़िया खिलअत जड़ाऊ जमधर, तलवार सोने के साज समेत, जड़ाऊ जीन वाला घोड़ा और चांदी की जरदोजी झूल वाला हाथी दिया। और महाराणा के कुँवरों, भाइयों सरदारों आदि के लिये बारह जड़ाऊ जमधर, खिलअत सो, सिरोपाव, और ५० घोड़े दिये। सुलह में यह निश्चय हुआ कि महाराणा बादशाह के दरबार में कभी नहीं जायगे। महाराणा का ज्येष्ठ पुत्र जायगा। शाही फौज में महाराणा १००० सवार रखेंगे। चित्तोड़ के किले की मरम्मत न की जायगी। गुहिल से १०५० वर्ष बाद आज मेवाड़ की स्वाधीनता समाप्त हुई। बादशाह ने महाराणा और कर्णसिंह की मूर्त्तियां बनवा कर आगरे में दर्शन के झरोखे के बाग में रखवाईं। महाराणा और बड़े कुँवर एक साथ नहीं गये। इसमे कुँवर कर्णसिंह बाद में शाहजादे से मिलने गये। और फाल्गुन सुदि २ ता० १९ फरवरी को शाहजादे के साथ अजमेर गये। यहां बादशाह ने कुँवर कर्णसिंह को हिन्दुस्थान के सब रईसों से ऊपर जगह दी। और पांच हजारी मनसब दिया। जब वापिस लौटे तब २ लाख रुपये, ५ हाथी ११० घोड़े और नगर २ के जागर बहुत सब चीजें दीं। शाहजादे खुर्रम व बेगम नूरजहाँ ने इसमे अलग दिये। इसके अलावा फूलिया रतलाम बांसवाड़ा ओगन, नीमच अरणोद, आदि बारह परगने दिये।

सुलह होने बाद महाराणा ने उदास होकर राजकार्य सब छोड़ दिया। सब कुँवर कर्णसिंह करने लगे। सुलह करने के लिये अगर पहले महाराणा को पूछते तो वह हर्गिज सुलह नहीं करते। यह बड़े बहादुर थे। महाराणा प्रतापसिंह ने एक हल्दी घाटी का युद्ध किया। वैसे इन्हों ने कई युद्ध कर विजय पाई परन्तु ईश्वर को इन्हें यश देना मंजूर नहीं था। सगर ने बेगूं मक्तावत नारायणदास को दी। वह सुलह होने के बाद रावत मेघसिंह को भेजकर महाराणा ने जप्त करली। और बल्लू चौहान को दी। इस पर मेघसिंह नाराज होकर बाद शाह के पास चला गया। जहां उसको मनसब और मालपुरा जागीर में मिला। कुँवर कर्णसिंह उसे पीछे उदयपुर लाये, और बेगू जागीर में दिलाई। माघ सुदि २ वि० १६७६ ता० २६ जनवरी १६२० ई० को महाराणा का देहान्त हुआ। आहड़ गांव के पास गंगोद्भव कुन्ड के पूर्व ही दाहक्रिया हुई। वहां इनकी बड़ी छत्री बनी हुई है। महारणा के ६ पुत्र हुए १ कर्णसिंह २ सूर्यमल (गांगावास, नारेला, वरसल्यावास, शाहपुरा, सरवाणया) ३ भीमसिंह (टोडा) ४ अर्जुनसिंह ५ रतनसिंह ६ बाघसिंह हुआ। इन महाराणा ने अपने नाम से अमर महल, तथा वि० सं० १६७३ में महलों का सदर दरवाजा, बड़ी पोल बनवाया। बड़ी पाल पिछोले के बांध की मरम्मत कराई।



कर्णविलास रावला एकलिगगढ़

५६ कर्णसिंह ।

यह महाराणा माघ सुदि २ वि० सं० १६७६ ता० ७ फरवरी १६२० ईस्वी को गद्दी विराजे। इनका जन्म श्रावण सुदि १२ वि० १६४० ता० २१ जुलाई १५८३ ईस्वी को हुआ था।

शाहजादा खुर्म अपने पिता जहांगीर से बागी होकर भटकता हुआ इनकी शरण में उदयपुर आया। उसको महाराणा ने बड़ी खातिर से पहले तो देलवाड़े की हवेली में बाद जगमंदिरों में-बड़े घूमट जिसकी नींव उसी ने सुलह होने के समय दी थी वहां रखा। वहां रहने के समय शाहजादे ने महाराणा से पगड़ी बदल भाईचारे का बर्ताव किया। वह खुर्म का पगड़ी उदयपुर के विक्टोरिया हॉल (म्युज़ियम-अजायबघर) में मौजूद है।

इन महाराणा ने परगने कायम कर देश का प्रबन्ध किया। उदयपुर में महलों में बड़ा चौक, सूर्यपोल, तोरणपोल सभा सिरोमणि दरीखाना, गणेश ड्योढ़ी, चोटी छत्रशाली, माणिक महल, सूर्य चोपाड़ दिल खुशाल, जनाने महल बनवाये। शहर पनाह बनवाना आरी पर एक लिंगगढ़ बनवया। और चित्तौड़गढ़ की मरम्मत कराई। जहांगीर के मरने पर शाहजादा खुर्म शाहजहां के नाम से बादशाह हुआ। वह दक्षिण से गोगुंदा होता हुआ आगरे गया महाराणा भी उससे मिले इन्होंने झाला कान्हसिंह को गोगुंदा दिया। इनका देहान्त

फाल्गुन वि० सं० १६८४ मार्च १६२८ ईस्वी में हुआ। इनके छोटे भाई भीमसिंह-जो मेवाड़ की फौज के साथ प्रायः दक्षिण में खुर्रम के पास रहता था, और खुर्रम की बगावत के समय इसके मुख्य सहायक थे टूस नदी की लड़ाई में बहादुरी से लड़कर मारा गाया। उसको राजा का खिताब और टोड़ा मिला। उसके मरने पर उसके लड़के रायसिंह को ५ हजारी मन्सब मिला। इन महाराणा के ७ पुत्र थे १ जगतसिंह २ गरीबदास, (केरवा, बांसड़ा, ओसूंड़ी) ३ मानसिंह ४ छत्रसिंह ५ मोहनसिंह ६ नजसिंह और ६ सूरजसिंह हुए। दो पुत्रियां भी थीं वे क्रमशः बीकानेर और बूंदी ब्याही गईं।

६० जगतसिंह प्रथम।

यह महाराणा फाल्गुन वि० सं० १६८४ ता० मार्च १६२८ ईस्वी में गद्दी विराजे। इनका जन्म भादों सुदि ३ संवत् १६६४ ता० २५ अगस्त १६०७ ईस्वी को हुआ था। बादशाह ने टीके के साथ ही ५ हजारी मन्सब भेजा। महावत खां की हिमायत से देवल्या का रावत जसवंत सिंह उदयपुर के हुकुम के खिलाफ शर्कशी करने लगा। तब वि० सं० १६८५ ई० सन् १६२८ में महाराणा ने उसको बुलाकर समझाया पर वह न समझा। आखिर वह अपने पुत्र सहित चंपा बाग में मारा गया।

डूंगरपुर का रावत पूंजा भी देवल्या की तरह सर्कशी



जगमंदिर

करने लगा। तब महाराणा ने अपने मंत्री अक्षयराज की अध्यक्षता में फौज भेजी रावल पहाड़ों में भाग गया। फौज डूंगरपुर को बर्बाद कर उसके महलों में चंदन के झरोखे को गिरा दिया। देवल्या की तरह सिरोही के राव अक्षयराज ने भी सर्कशी अख्तियार की। इसको भी महाराणा ने फौज भेज ठीक किया। इलाका लूटा और तोगा वालिस का इलाका छीन लिया। इसी तरह बांसवाड़े के रावल समरसिंह ने भी बादशाही हिमायत बतलाई तब महाराणा ने दिवान भाग चन्द्र की अध्यक्षता में सेना भेज कर उसके देश को बरबाद कर दिया। उसने दो लाख रुपये नजर कर अपराध क्षमा कराया। इन महाराणा ने वि० स० १६६८ ई० सन् १६४१ में काशी में राणा महल बनवाये। और अपनी माता को द्वारका की यात्रा के लिये भेजा। वहा उन्होंने स्वर्ण तुला दान किया। वहा से लौटने पर वह और कुँवर राजसिंह सोरू जी गंगा स्नान को गये वहा भी स्वर्ण-तुला दान किया।

वि० स० १७०४ ई० सन् १६४७ मे महाराणा ओंकार नाथ की यात्रा को गये। वहा नर्मदा स्नान कर स्वर्ण तुला दान किया। तथा उज्जैन होते हुए उदयपुर आये। यह हर साल अपने राज्याभिषेक के दिन प्रथम चांदी पश्चात् स्वर्ण का तुला दान करते थे। इन्होंने १५ लाख रुपया खर्च करके उदयपुर में जगदीश का बडा मंदिर बनवाया। और वि० स० १७०६ ई० द्वि० वैशाख सुदि १५ ता० १० अक्टूबर इ०

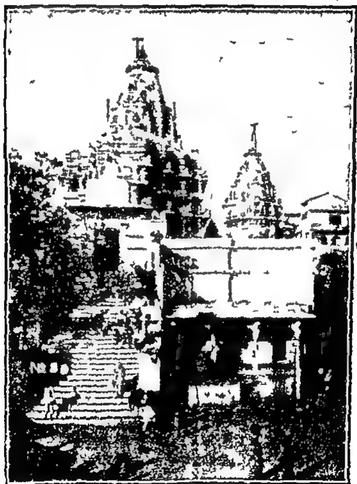
सन् १६५२ को प्रतिष्ठा की। उस वक्त कल्प वृक्ष का दान दिया। उसकी वेदी स्फटिक की मूल नीलम, मस्तक वैडूर्यमणि, स्कंध पर हीरे, शाखाओं में माणिक, पत्तों की जगह मूंगा, फूलों की जगह मोतियों के गुच्छे और फल रत्नों के बने हुए थे। इन्होंने सैकड़ों हाथी, सहस्त्रों घोड़े और ८४ गांव दान किये। यह दोहा भी मशहूर है—

' सिन्धुर दीधा सातसौं, हय वर छप्पन हजार।
सासन चौरासो दिये जगपत जग दातार।"

इन्होंने चित्तौड़ के किले की मरम्मत कराई। चौहान रुकमांगद को कोठारिया दिया। और राजा सुजानसिंह को, शाहपुरा दिया। इनका दान प्रसिद्ध है। हर एक आदमी इनको आशा करता था--

साईं करे परेयडा, जगपत के दरबार। पीछोलारो पाणी पिया, कण चूगे कोठार॥

इनका देहान्त वि० सं १७०६ कार्तिक सुदि ४ ता० २२ अक्टूबर १६५२ ईस्वी को हुआ। इनके दो कुंवर १ राजसिंह २ अरिसिंह (हीता, पुंख्या खालसे, तिरोली) हुए। इन्होंने तालाब के अंदर बड़े गुंमट के पास जनाने महल, दरीखाना बना कर उसका नाम जगमंदिर रखा। सिरोही की विजय की उसकी यादगार में अपने पासवानिये पुत्र मोहनदास के नाम पर मोहन मन्दिर तालाब में बनवाया। उदयसागर की पाल



श्री जगदीश का मदिर

के पीछे नाले पर महल बनवाये। काशी (बनारस) में राणा महल बनवाये। जगननाथ पुरी में भी राणामहल इन्हीं के बनवाये हुए कहते है परन्तु वहा पंडे के अधिकार में रहने के कारण राज्य का तालुक नहीं रहा।

६१ राजसिंह प्रथम

यह महाराणा वि० सं० १७०८ कार्तिक कृष्णा ४ ता० २२ अक्टूबर सन १६६२ को गद्दी पर विराजे। इनका जन्म संवत् १६८६ कार्तिक कृष्णा ४ ता० ई० सन १६२८ ता० २४ सितम्बर को हुआ। गद्दी बैठने ही मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष में महाराणा एक लिंगजी गये। और वहा रत्नों का तुलादान किया। सारे हिन्दुस्तान में यह एक ही राजा थे जिन्होंने रत्नों का तुलादान किया। बादशाह ने भी पचहजारी मनसब और हाथी घोड़े भेजे।

महाराणा जगतसिंह ने चित्तौड़ के किले की मरम्मत जारी की। उसको इन्होंने तेजी से जारी रखी। महाराणा का काका गरीबदास जिसको शाहजहां ने मनसब जागीर दी थी। उसने बादशाह की मर्जी मेवाड़ पर चढ़ाई करने की देखी। तब महाराणा को सावधान करने के लिये बिना छुट्टी यहा चला आया। महाराणा ने उसे रियासती कारोबार में शरीक कर लिया। इसके अलावा महाराणा देवरिया का पक्ष लेकर बादशाह को सदकाता रहता था। इन सब बातो के इकट्ठे होने पर बहाना ढूंढ कर वि० सं० १७११ कार्तिक बदि १० ता० ८ नवम्बर १६५४ ईस्वी को ... १६ अजमेर आया। और

मौलवी सादुल्ला खां वजीर को ३० हजार सवार देकर चित्तौड़ की तरफ भेजा। महाराणा ने इस समय लड़ना मुनासिब न समझ कर प्रजा को पहाड़ों में जाने का हुक्म दिया और किला खाली कर दिया। सादुल्ला खां ने किले की मरम्मत को गिरा दी। बादशाह ने मुंशी चन्द्रभाण को महाराणा को समझाने के लिये उदयपुर भेजा। महाराणा इस समय चुप हो गये। बादशाह ने पुर, मांडल, खेराबाद, माडलगढ़, जहाजपुर, सावर, बनेड़ा हुरड़ा, बदनौर, वगैरह परगने मेवाड़ से निकाल कर अजमेर में मिला दिये। मांडलगढ़, कृष्णगढ़ के राजा रूपसिंह को दे दिया। महाराणा ने टीका दौड़ की रसम पूरी करने का इरादा कर तैयारी की। इस वक्त शाहजहां के बीमार होने पर चारों शाहजादे तख्त लेने के लिये अलग २ तैयारियां करने लगे। औरंगजेब ने महाराणा को मिलाकर आगरे की तरफ कूच किया। और फतिहाबाद, समूनगर में फतह हासिल कर आगरे के किले में शाहजांह को कैद कर लिया। औरंजेब ने महाराणा से कई वायदे कर अपनी तरफ मिलाया, महाराणा ने उसको मदद दी। दारा ने महाराणा से मदद मांगी पर वह चित्तौड़ के किले की मरम्मत गिराने में शरीक था। इसलिये महाराणा ने उसे नफरत कर मदद नहीं दी।

वैशाख सुदि १० सं० १७१५ ता० २ मई १६५८ को महाराणा चित्तौड़ से रवाना होकर दरीबे पहुँचे। वहां

कब्जा कर माडलगढ गये, वहा पर कब्जा कर २० हजार रुपया जुर्माने का लिया। इसी तरह बनेडा से २६ हजार लिये। फिर शाहपुरे गये वहा पर डेरा डाल कर २० हजार रुपया लिया। क्या कि राजा सुजानसिंह भी सादुला खा के साथ चित्तौड था। यहा से चलकर जहाजपुर, सावर, फुलिया, केकडी आदि पर अधिकार करते हुए मालपुरे गये। यहा ६ दिन ठहर कर खूब लूटा यहा खूब माल हाथ लगा। टोडे का राजा रायसिंह भी सादुला खा के साथ चित्तौड था। इसलिये कायस्थ फतहचन्द को यहा पर भेजा। रायसिंह की माता ने ६० रुपये देकर पाछा छुडाया। सुजानसिंह के भाई घोरमदेव के नगर को जलाकर भस्म कर दिया। इसके बाद टोंक, साभर, लाल साट, और चाटसू पर हमला कर जुर्माना लिया। वर्षा समय आने से उदयपुर लौटआये।

औरंगजेब ने गद्दी पर बैठते ही अपने इकार के अनुसार वि० सं० १७१५ भाद्रपद वदि ४ ता० ७ अगस्त १६५८ ई० का महाराणा के नाम फर्मान लिख भेजा। और मन्सब बढ़ा कर ६ हजार करदिया। इसके साथ ५ लाख रुपये नगद और कई हाथी-हथिनी भेजे। बदनोर और माडलगढ के परगने तो दिये ही उनके अलावा डूंगरपुर, बाँसवाडा, बसावर और ग्यासपुर भी महाराणा का दिये।

औरंगजेब की आज्ञानुसार बाँसवाडा और देवल्या वालों ने महाराणा की मातहती कबूल नहीं की। इस पर वि० सं०

१७१६ वैसाख वदि ६ ५ ता० अप्रेल १६५६ ई० को प्रधान फतह-चन्द के साथ, रावत रघुनाथसिंह (सलूंबर) शक्तावत मोहकमसिंह (भींडर) सिसोदिया माधवसिंह, रावत मान-सिंह सारंग देवोत. (कानोड़), सोलंखी दलपत (देसूरी) राठोर जोधसिंह (ईडर) रावत रुक्मांगद चौहान और उसका पुत्र उदय कर्ण (कोठारिया) को ५ हजार फौज देकर बाँसवाड़े पर भेजा। वहां के रावल समरसिंह ने १ लाख रुपया दस गांव देशदाण एक हाथी और एक हथनी देकर अधीनता स्वीकार की, इस पर महाराणा ने दस गांव देशदाण और बीस हजार रुपया माफ कर छोड़ दिया।

महाराणा स्वयं बसावर पर चढ़े। और फतहचन्द को बसावाड़े से देवल्ये पर भेजा, रावत हरीसिंह भाग कर बादशाह के पास गया। उसकी माता ने अपने पौत्र प्रतापसिंह को फतहचन्द के पास भेजा। और पांच हजार रुपये के साथ एक हथिनी दंड में दी। प्रतापसिंह को वह महाराणा के पास लाया और बादशाह से मदद न मिलने पर सादड़ी के झाला सुल्तान, बदले के राव सबलसिंह, सलूंबर के राव रघुनाथसिंह, और भीडर के शक्तावत मोहकमसिंह को बीच में डालकर रावत हरीसिंह भी महाराणा के चरणों मे आया। ५० हजार रुपया १ हाथी १ हथिनी भेट की। इसी तरह डूंगरपुर के रावत गिरधर ने भी महाराणा की अधीनता स्वीकार की।

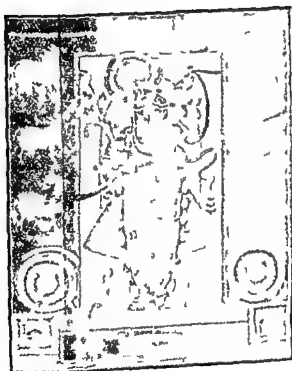
वि० स० १७१७ ई० सन् १६६० में कृष्णगढ के राजा रूपसिंह की बेटी चारूमती बाई की शादी बादशाह करना चाहता था परन्तु वह यवन से शादी नहीं करना चाहती थी। वह पुत्री में मार्ग थी। और उसके भाई वगेरह ने कहा कि "हम सब लड मरने को तैयार है पर तुझको नहीं बचा सक्ते, इस समय केवल महाराणा राजसिंह ही औरंगजेब के विरुद्ध तुम से शादी कर सक्ते हैं" यह सुन उसने एक अर्जी महाराणा के पास भेजी और अपने को उनके अर्पण करदी। और लिखा कि मैं यवन से शादी नहीं करूगी। श्री कृष्णने रुक्मणी को शिशुपाल से बचाया। वैसे ही आप मेरी रक्षा कीजिये। वरना मैं आत्महत्या करूंगी, वह पाप आप को लगेगा। इस पर महाराणा तुरन्त रूपनगढ गये। और शाही फौज जो इस लडकी को लेने आई थी उसको शिकस्त देकर शादी कर लाये। इन्ही चारमती बाई ने राजनगर में बावडी बनवाई।

वि० स० १७१८ ई० सन् १६६२ में मेवल के पहाडी भीलों ने शिर उठाया। महाराणा ने फौज भेज कर उनकी पालें बरबाद कर सजादी। और इस इलाके में सरदारों को जागीरें देकर बाट दिया।

वि० स० १७२० ई० १६६३ में सिरोही के राव अखयराज के कुंवर उदयसिंह अपने बाप को कैद कर स्वयं राज

करने लगा। महाराणा ने फौज भेज कर अक्षयराज को पीछा राज्य दिलाया। महाराणा की नाराजगी से सलुंबर का रावत रघुनाथसिंह बादशाह के पास गया। महाराणा ने सलुंबर जप्त करके पारसोली के राव केशरीसिंह चौहान को दिया। सिरोही के राव वेरीशाल के शत्रु उसको राज्यच्युत करने लगे। इस पर वि० सं० १७३४ ई० सन् १६७७ में जीलवाड़े की तरफ जाते समय महाराणा ने उसको सहायता कर राज्य पर दृढ़ किया और उसके बदले में एक लाख रुपये और कांटा आदि ४ गांव लिये। किसी ने महाराणा का सोने का कलश चुरा लिया। और सिरोही पहुँचाया। जिसके लिये महाराणा ने राव वेरीशाल से ५ हजार रुपये लिये।

औरंगजेब शुरू से ही हिन्दु धर्म का विरोधी था जब वह गुजरात का सुबेदार था। उसने अहमदाबाद में चिंतामण का मंदिर तुड़वा कर मसजिद बनवाई बादशाह शाहजहां ने इस मंदिर को पीछा बनवाने का हुक्म दिया। और भी कई मंदिर तुड़वाये थे। गद्दी बैठने के १२ वें वर्ष में हिन्दुओं के मंदिर, पाठशाला आदि सब तोड़ने का हुकुम दिया। काठियावाड़ में सोमनाथ, काशी में विश्वनाथ, मथुरा में केशवदास राय के प्रसिद्ध मंदिर तोड़े गये। और गोवर्द्धन में वल्लभ संप्रदाय की गोवर्द्धन की मूर्त्ति तोड़ने का हुकुम दिया तब द्वारिकाधीश का मूर्त्ति को गोस्वामी मेवाड़ में लाये। आसोटीया गांव में रखा। बाद मंदिर बनने पर कांकरोली में स्थापना की।



श्रीनाथ जी

श्री नाथजी की मूर्त्ति को लेकर गोस्वामी बूंदी, कोटा, पुष्कर किशनगढ जोधपुर गये परन्तु औरंगजेब के डर से किसी ने नहीं रखी। तब चापापासणी (जोधपुर) से महाराणा को अर्ज कराई। महाराणा ने बड़ी खुशी से मंजूर कर श्रीनाथजी को मेवाड में बुलाये। वि० स० १७२८ के फाल्गुन वदि ७ ता० २० फरवरी १६७२ को गोस्वामी श्रीनाथजी को मेवाड़ में लाये। और मंदिर बनवाकर सीहाड़ गांव में स्थापित किये। जो इस वक्त श्रीनाथद्वारे के नाम से प्रसिद्ध है।

औरंगजेब ने वि० स० १७३६ के वैशाख सुदि २ ता० २ अप्रेल १६७९ ईस्वी में समस्त हिन्दुओं पर जजिया कर लगाया पहले उसको अकबर ने माफ कर दिया था। अब पीछा लगाया इससे लाखों आदमी फरयाद ले गये पर न सुनी और उल्टी सख्ती की गई। भीड को हाथियों से कुचलवा कर हटाई इस पर महाराणा ने औरंगजेब के नाम यह पत्र लिखा—

आदाब व अलकाब के बाद जाहिर हो कि मैं आपका खैरख्वाह अगरचे आपसे दूर हूं, परन्तु फिर भी ताबेदारी समक दलाली के कामों में तैयार हूँ, मैं हिन्दुस्थान के बादशाहों, अमीरों, मिर्जाओं राजाओं, रावों और ईरान, तूरान, साम के सरदारों साता विलायतों के रहने वाले। तथा खुश्की और दर्या के मुसाफिरों की खैरख्वाही में मशगूल हूँ। यह

मेरा कहना बहुत ही साफ तरह पर है। इस बात को सब जानते हैं। मुझे भरोसा है कि इसमें आप को भी शक न होगा। मैं अपनी पहली चाकरी, आपकी मिहरबानी पर नजर करके आप से यह अर्ज करता हूँ कि उन बातों की तरफ जिनमें आपकी और दुनिया की बहतरी है जो नीचे लिखी जाती है उस पर अवश्य ध्यान देंगे—

मैंने सुना है कि आपने बहुत सा रुपया मुझ खैर-ख्वाह की खराबी को तदबीरों में खर्च किया है। और आपने अपना खाली खजाना भरने के लिये जजिये का महसूल लगाया है। आप पर रोशन है कि महम्मद जलालुद्दीन अकबर ने जो आपके बाप दादों में से थे बादशाही कामों को ५२ वर्ष बड़े इन्साफ के साथ पूर्ण किये। हरेक कौम को आराम पहुँचाया ईसाई, मुसाई, दाऊदी, मुसलमान, ब्राह्मण तथा धाय उनकी निगाह में बराबर थे। सब पर एकसी मिहरबानी रखते थे। उनका इन्साफ व रहम इस कद्र ज्यादः था कि प्रजा ने उनका लकब जगत गुरु रखा था।

नुरुद्दीन मुहम्मद जहाँगीर ने भी २२ वर्ष तक अपनी प्रजा की हुकूमत और रक्षा की। और कभी अपनी कार्रवाही में सुस्ती नहीं की। उन्होंने अपने नेक इरादे के सबब हरेक जगह कामयाबी हासिल की।

मशहूर शाहजहां ने ३२ वर्ष तक अच्छे इन्तजाम के

साथ बादशाहत चलाई और ऐसा नाम पैदा किया कि हमेशा दुनिया के पर्दे पर रहेगा। यह नतीजा उनको रहम दिली नेकी के तुफेल फिर मिला था। आपके बाप दादों की ख्वाहिश दिल से भलाई की तरफ थी जैसा कि ऊपर लिखा गया है वे ऊंचे रहम दिल की बातों पर अमल करते थे जिससे जिधर को कदम उठाते फतह उनके साथ चलती थी। तभी उन्होंने अपनी जेर हकूमत में कितने ही मुल्क और किले फतह किये थे। आपके अहदमें बहुत से जिले बादशाहत के निकले चुके हैं। बहुत सी नई ज्यादती होने से और भी इलाके हाथ से जाते रहेंगे। आपकी प्रजा कंगाली तथा तकलीफ में फँसी हुई है, खराबी फैलती जाती है, कई मुश्किलें बढ़ती जाती हैं। जब गरीबों ने बादशाहों और बादशाहों के घर में कदम रक्खा हो तो अमीर और रय्यत का तो ईश्वर ही मालिक है। सिपाही शिकायत करते हैं, सोदागर फरियादी करते हैं, मुसलमान नाराज हैं। हिन्दू और दूसरे लोग जबरनों से इस कदर तंग हो गये हैं कि शाम को खाना भी नहीं मिलता। और सब भूख से बेचैन रहते हैं।

यह कब हो सकता है कि बादशाह अपनी कंगाल प्रजा पर सख्त महसूल डालता है-कायम रहे। पूर्व से पश्चिम तक यह अपवाद फैली हुई है कि हिंदुस्थान का बादशाह हिन्दू पुजारियों से जलन के कारण-ब्राह्मणों, योगियों सन्यासियो बैरागियों, से जबरदस्ती महसूल लेना चाहता है यह तिमूरा

खान्दान की इज्जत का खयाल न करके लाचार कोने में बैठने वाले पुजारियों पर जोर दिखलाना चाहता है। कामिल (Divire) इलाही समझा जाता है तो उसमें साफ लिखा है कि "खुदा सिर्फ मुसलमानों का मालिक नहीं है बलिक सारे जगत का पालक है। हिन्दू और मुसलमान इसकी निगाह में एक से हैं रंग और सूरत का फर्क ईश्वर की कुदरत से है। और वही सब को पैदा करने वाला है। मुसलमानों के इबादत खाने में भी उसका नाम लिया जाता है और मंदिरों में भी मूर्ति के सामने जहां घंटे बजते हैं उसी की तारीफ और पूजा होती है। दूसरी कौमों के मज़हबों और रीतियों को दूर कहना ईश्वर की मर्जी के खिलाफ है। हम किसी तस्वीर का मुख बिगाड़ देते है। तब उसके बनानेवाले का नाराज करते हैं। किसी शायर ने यह बात ठीक लिखी है कि "खुदाई कारखाने में एतराज मत करो।"

मतलब यह है कि जो हिन्दुओं पर जजिया कर बैठाया गया है वह इन्साफ से दूर है इन्तजाम से भी दुरुस्त नहीं है। इससे मुल्क गरीब और तबाह हो जायगा। इसके सिवाय यह एक नई गढन्त है और हिन्दुस्थान के पुराने दस्तूर के खिलाफ। यदि आपने अपने मजहबी ख़यालों की पैरवी से यह बात पसन्द की है तो इन्साफ यह चाहता है कि अव्वल जजिये का महसूल रामसिंह (जयपुर) से जो हिन्दुओं का सिरोमणि है और मुझ खैरख्वाह से मांगना चाहिए। जहां से

महसूल वसूल करने में आपको ज्याद दिक्कत नहीं उठानी पड़ेगी। परन्तु चोंटियों और मक्खियों को दुख देना बेजा है। और हिम्मतवर तथा बहादुरों के योग्य नहीं है ताज्जुब है कि बादशाही वजीरों ने इज्जत और रास्ता के बाबत सलाह नहीं दी।

इसके अलावा बादशाह ने जोधपुर खालसे कर लिया, और वहा के बालक महाराजा अजीतसिंह को दिल्ली में ही कैद करने का हुक्म दिया, परन्तु राठोड़ दुर्गादास कालवेल्या का भेष कर पूगी बजाना हुआ महाराजा को सांप के पिटारे में छुपाकर कैद में से निकाल लाया। महाराणा ने उनको भी अपने यहां शरण रखकर रहने के लिये केलवा गांव दिया।

इन सब बातों से बादशाह बड़ा नाराज हुआ, और वि० सं १७३६ भादवा सुदि = ई० सन् १६७६ ता० ३ सितम्बर को दिल्ली से रवाना होकर १३ दिन में अजमेर आया और अपने सब शाहजादों को अपनी फौज समेत अजमेर बुलाया। महाराणा को बरबाद करने को जबरदस्त तैयारी कर, तहव्वरखां का माडल और नागोर के राव इन्द्रसिंह को नीमच की तरफ रवाना किया।

यह खबर सुनकर महाराणा ने भी अपने सरदारों से सलाह कर प्रजा को मेवाड़ तथा उदयपुर खाली कर पहाड़ों में जाने का हुक्म दिया और आप भी सम्मर पहाड़ में देवी

माना गये और यहीं मुकाम किया। वहां भोमट के पानरवा जूडा, मेरपुर आदि भोमिया सरदार ५० हजार भीलों सहित हाजिर हुए। उनके दस दस हजार के तुंग अलग २ बनाकर हुक्म दिया कि नाके घाटियां रोक कर शाही फौज की रसद तथा खज़ाना लूट कर महाराणा के पास पहुँचाओ। बाद महाराणा नेनवारा गये। वहां पर मेवड़ व मारवाड़ के सरदार सुकुटुम्ब इनकी रक्षा का भार महाराणा ने अपने ऊपर लिया। इस वक्त राजपूत सेना में २० हजार सवार और २५ हजार पैदल सिपाही थे। इसके अलावा महाराणा ने अपनी फौज को इस प्रकार अलग अलग मुकर्रिर की।

कुँवर जयसिंह को १३ हजार फौज के साथ सबकी मदद पर मुकर्रिर किया। देसूरी के सोलंखी विक्रमादित्य, घाणेराव के ठाकुर गोपीनाथ, बदनोर के ठाकुर सांवलदास को घाणेराव, और बदनोर के पहाड़ी जिले पर—प्रधान दयालदास को मालवे की तरफ और छोटे कुँवर भीमसिंह को गुजरात की तरफ रवाना किया।

बादशाह ने हसन कुली खां को ७ हजार फौज़ देकर राणा से लड़ने को भेजा। और आप खुद मार्गशीर्ष सुदि ६ ता० १ दिसम्बर को अजमेर से उदयपुर की तरफ रवाना हुए। साथ में युरोपियनों की मातहती में तोपखाना भी था। शाहजादा मुहम्मद आजम भी आ पहुँचा। बादशाह मांडल,

राजसमुद्र होता हुआ देवारी पहुचा और वहीं ठहरा। देवारी के घाटे पर राजपूत थे वे खूब लडे। राठौड गौरासिंह आदि मारे गये, रावत मानसिंह मारगदेवोत आदि घायल हुए। घाटे पर कवजा कर वादशाह आगे पहाडों में न बढा उसको घिर जाने का डर था। इसमे वहीं ठहरा। हसनकुली खां राणा के पीछे गया। वह भी नाकामयाव होकर लोट आया। शाहजादे मुहम्मद आजम को उदयपुर भेजा, पर शहर को खाली देख जगदीश का मन्दिर तोडने लगा। वहा पर कुछ राजपूत बडी बहादुरी से लडकर काम आये। और भी कई छोटे २ मंदिर तोड कर शाहजादा लोट आया।

वादशाह शाहजादे अकबर को उदयपुर छोड़ कर वि० स० १७३६ के फाल्गुन सुदि ३ ता० २२ फरवरी १६८० ई० को चित्तोड़ गया। उदयपुर से शाही फौज हटा कर शाहजादे को चित्तौड़ पर मुकर्रिर कर आप अजमेर को गया। टाड साहब लिखते है कि महाराणा ने देवारी के वाहर अचानक वादशाह पर हमला कर उसका तोपखाना, डेरा, सामान सब छीन लिया। और उसकी सरकेशियन वेगम को गिरफ्तार कर लिया। परन्तु पीछा हिफाजत के साथ वादशाह के पास भेज दी। राजपूतों की भी शाही तोपखाने से वडी हानि हुई परन्तु उन्हों ने ऐसी वहादुरी दिखलाई कि वादशाह को चित्तौड का रास्ता लेना पडा। नाथद्वारे वाले भी अपने प्रागट्य की पुस्तक में लिखते हैं कि " राणा जी ने आलमगीर

को रंगी चंगी बेगम को गिरफ्तार करली। "शाहजादा अकबर तहव्वर खां समेत उदयपुर आया। वहां से एकलिंगजी की तरफ बढ़ा। रास्ते में चीरवा के घाटे के पास करणेट के झाला प्रतापसिंह और अदेसर के वल्लो ने हमला कर उसके ४ हाथी, घोड़े और ऊँट छीन लिये। उदयपुर के थाने पर कोठारिया रावत रुक्मांगद के पुत्र उदयभान और अमरसिंह चौहान ने हमला कर बहुत से मुसलमानों को मारा। इसी तरह राज नगर के थाने पर सबलसिंह पूरावत के पुत्र मुहकमसिंह शक्तावत तथा कई चूंड़ावत सरदारों ने हमला किया। हसनकुली खां बड़ी फौज लेकर गोराणा के रास्ते झाडोल गया। उस पर रावत मानसिंह, रावत रतनसिंह चूंड़ावत (सलूंवर) और राव केशरीसिंह चौहान ने हमला कर बरबाद कर दिया। नाल के एक मुंह पर लकड़ीयें इकट्ठी कर आग लगादी फिर दोनों तरफ से हमला कर खूब हैरान किया। बड़ी मुश्किल से भाग कर बादशाह के पास गया। और कहा कि वहां पर ठहरने के लायक कोई जगह नहीं है। कँवर भीमसिंह ने गुजरात पर हमला किया, ईडर को बरबाद किया, बड़नगर लूटकर ४० हजार रुपये जुर्माने लिये। वहां से अहमद नगर जाकर वहां बड़ी और छोटी ३०० मसजिदें गिराईं। तथा २ लाख रुपये लिये प्रधान दयालशाह ने मालवा लूटकर मसजिदें गिराईं कई ऊँट सोने से भर लाया। बादशाह अजमेर गया तब राणा ने राठौड़ सांवलदास

को भेजा। बदनोर में १२ हजार शाही फौज थी उसका सेनापति रहेला खा था। उस पर राठोड सांवलदास ने हमला किया। वह अपना सामान छोडकर रातो रात भगकर बादशाह के पास पहुँचा। इसी तरह केशरीसिंह के पुत्र शकावत गंगादास (बानसी) ने चित्तोड की बादशाही फौज पर हमला कर उसके हाथी घोडे छीन लिये। महाराणा के कुँवर गजसिंह ने वेगू पर हमला कर उसे नष्ट-भ्रष्ट कर दिया।

कुँवर जयसिंह ने भगवन्तसिंह (अरिसिंहोत) चन्द्र-सेन झाला (सादडा) चौहान सबलसिंह (बेदला) रतनसिंह चूडावत, कुंवर गंगदास राठौड, गोपीनाथ, पवार वैरीसाल, रावत केशरीसिंह, मुहकमसिंह, चौहान केशरीसिंह, रावत रुकमांगद, खीची रावरतन, रावत मानसिंह सारंग देवोत, माधवसिंह जगावत चूडावत, शकावत कान्हा, झाला जसवन्तसिंह (गोगुंदा) झाला जैतसिंह (देलवाडा) आदि सरदारों के साथ १३००० सवार २०००० पैदल फौज से चित्तोड जिले में शाहजादे अकबर की फौज पर रात के समय हमला किया। शाहजादे के १ हजार सिपाही तीन हाथी मारे गये। वह भाग कर अजमेर गया। कुंवर ने हाथी घोडा और नक्कारे छीन लिये। तबू तोड डाले। शाहजादा अकबर चित्तौड छोड कर नाडोल में ठहरा उस समय कुँवर भीमसिंह, राठौड गोपीनाथ और सोलखी विक्रम (रूपनगर) ने देसूरी के घाटे को पार कर घाणेराव के पास अकबर,

तहव्वर खां की १२००० फौज पर हमला किया, जबरदस्त लड़ाई हुई। राजपूतों ने शाही खज़ाना लूट लिया। यह बात देख कर बादशाह ने सुलह की बातचीत की।

दक्षिण में मरहटों का उपद्रव बढ़ रहा था। इसलिये औरंगज़ेब से घबरा कर महाराणा से श्यामसिंह द्वारा सुलह का प्रस्ताव किया। और आप शाहजादे आजम को यहां छोड़ स्वयं दक्षिण में गया। महारणा ने भी शाहजादे को कहला दिया कि हम तुमसे छुरे, कटार, तलवार से लड़ाई करेंगे। यह तैयारी कर वह नेनवारा से कुंभलगढ़ आ रहे थे। रास्ते में ओड़ा ग्राम में भोजन करने को ठहरे। यहां युद्ध के कायर सरदारों ने खिचड़ी में विष मिला दिया जिससे वि० सं० १७३७ के कार्त्तिक सुदि १० ता० ३ नवम्बर १६८० ई० को वहीं कुंभलगढ़ से ४ कोस की दूरी पर ओडां ग्राम में उनका देहान्त हो गया। वहां उनकी छत्री बनी हुई है।

इन्हों ने शक्तावत गंगादास को बानसी, तथा चौहान केशरीसिंह को पारसोली दी।

इन्होंने वि० सं० १७१८ में राजसमुद्र की नींव डाली। और वि० सं० १७३१ ई० सन १६७४ में प्रतिष्ठा की। उस समय महाराणा ने अपनी पाटवी महाराणी और पोते अमर-सिंह सहित स्वर्ण का तुलादान किया। इस तालाव और पहाड़ पर के महलों में १०५४७५८४) रुपये तालाव, महल, दान-



राजसमुद्र

पुण्य, उत्सव एव दूर-दूर के रईसों को हाथी घोडा सरपाव भेजने में खर्च हुए। इसके अलावा महाराणा ने कई स्वर्ण के तुला दान किये, चद्र ग्रहण में कामधेनु दान दिया जिसके साथ २ हजार अशर्फिया व बहुत सामान दिया। कुवरपदे में इन्होंने उदयपुर से सर्वऋतु विलास महल, बावडी, और हाथी लडने का अखाड बनवाया। अपनी माता जनादेवी के नाम पर ६ लाख रुपये खर्च कर बडी का तालाब (जना सागर) बनवाया। अम्बा माता का मन्दिर देवारी के घाटे का कोट, दरवाजा, तालाब और एक लिंगजी में इन्द्र सरोवर की नई पाल बनवाई। कुवर जयसिंह ने रगसागर तालाब बनवा कर प्रतिष्ठा कराई।

कुवरपदे में यह बूदी शादी करने गये वहा उसी लग्न पर जोधपुर के महाराजा जसवन्तसिंह भी शादी करने आये उस जगह पहले तोरण कौन बाधे, यह आपस में पेश आई। जोधपुर महाराजा ने कहा हम कन्नौज के राजा जयचन्द का सन्तान हैं। जिससे पहले हम बाधेगे। कुवर राजसिंह ने कहा हम हिन्दुवा सूर्य हैं, तुम्हारे बाप दादों ने हमारे बाप दादों की चाकरी की है इसलिये हम पहले बाधेगे। इस पर बूंदी राव ने कहा महाराणा मगर के मालिक हैं इस-लिये कुँवर ही पहले बाधेगे। आखिर कुँवर राजसिंह ने ही पहले तोरण बाधा।

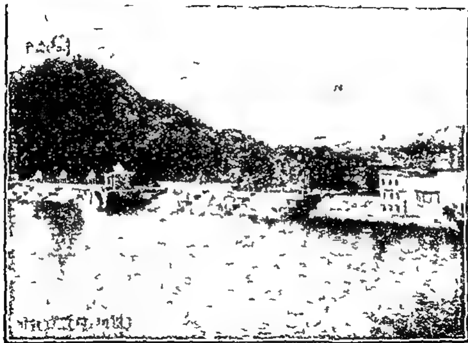
इन महाराणा के ७ पुत्र थे-१ सुल्तानसिंह २ सरदार-सिंह ३ जयसिंह ४ भीमसिंह (बनेड़ा) ५ बहादुरसिंह (भूणा-वास) ६ इन्द्रसिंह और गजसिंह, ७ सूरतसिंह ८ तखतसिंह।

इन महाराणा की राणी रामरसदेने देवारी के अन्दर झरणा की सराय के पास त्रिमुखी बावड़ी बनाई। और राणी झाली ने देवारी के अन्दर राजराजेश्वर का मन्दिर और बावड़ी बनवाई।

६२ जयसिंह

जब महाराणा का देहान्त हुआ। तब यह कुरज गांव में बादशाही फौज हटाने में लगरहे थे। वहां खबर पहुँचने पर कार्त्तिक सुदि १० वि० सं० १७३७ ता० ३ नवम्बर ई० को गद्दी विराजे। इनका जन्म पोष वदि ११ सं० १७१० ता० ५ दिसम्बर १६५३ को हुआ था।

राठौड़ दुर्गादास ने पहले शाहजादे मोजम को बादशाह बनाने का सब्जा दिया परन्तु उसकी माता के रोकने पर वह दम में न आया। फिर शाहजादे अकबर को मिलाया और उसको बादशाह बनाकर अजमेर चढ़ा ले गये। परन्तु औरंगजेब बड़ा धूर्त था। उसने कूटनीति से एक पत्र लिख राठौड़ों के केम्प मे डलवा दिया। जिससे राठौड़ उसे छोड़ चल दिये। और लाचार अकबर को दक्षिण में मरहठों की शरण में जाना पड़ा। इस पत्र में लिखा था कि राजपूतों को



जयसमुद्र

आगे रास्ता बरबाद करने की तुमने अच्छी तदबीर की इत्यादि।

औरंगजेब महाराणा पर फतह पाने में नाकामयाब होकर चला गया। और सधि करने की तदबीर सोचकर श्यामसिंह को घर जाने की आज्ञा दी। और उसके द्वारा सधि का गुप्त प्रस्ताव किया। इस अर्से में महाराणा राजसिंह का देहान्त होगया। और शाहजादे आजम की सलाह के मुआफिक महाराणा ने सुलह करना मंजूर किया। श्रावण वदि ३ सं० १७३८ ता० २४ जून १६७१ ई० को राजनगर मुकाम पर शाजादा आजम से महाराणा मिले। शाहजादे ने महाराणा से प्रीति बढ़ाई। क्योंकि प्राय सभी शाहजादे बादशाह बनने के लिये महाराणा की सहायता के इच्छुक होते रहे।

इन महाराणा ने वि० सं० १७४४ ई० सन् १६८७ में जय समुद्र तालाब की नींव डाली। यह चार वर्ष में बनकर समाप्त हुआ। वि० सं० १७४८ के जेष्ठ सुदि ५ ता० २२ मई १६६१ ई० को इसकी प्रतिष्ठा कर प्रदक्षिणा की और स्वर्ण तुला दान किया। यह तालाब ९ मील लम्बा ६ मील चौड़ा ससार में यह मीठे पानी का सब से बड़ा तालाब गिना जाता है इसका घेर १६ मील और २१ वर्ग मील है। यहाँ मगरे पर महल, हाथी लड़ाने का अखाड़ा बनाया, सामने के पहाड़ पर तथा पानी में भी महल बनवाये और वीरपुरे

के पास जसनगर बसाया। जहां अभी अदालत है। इन्होंने कुँवरपदे में उदयपुर में रंग सागर बनवाया। और गद्दी बैठने के बाद देबाली का तालाब (फतहसागर) बनवाया। और थूर का तालाब बनवाया।

मेवाड़ के महाराणा शराब नहीं पीते थे परन्तु इन महाराणा के कुँवर अमरसिंह ने जयसलमेर शादी की। कुवरानी भटयानी शराब पीती थी। इसलिये महाराणा ने भटयानी चौहटे में महल बना दिया वह वहां पर रहती थी। उसके साथ कुँवर अमरसिंह भी शराब पीने लगे। इससे बाप-बेटे का आपस में द्वेष बढ़ा। कुँवर बूँदी से सहायता लाये कई सरदार कुँवर के पक्ष में हो गये। अतः महाराणा को उदयपुर छोड़ना पड़ा। अन्त में खैरख्वाहों ने बाणेराव मुकाम पर सुलह कराई। ३ लाख की जागीर मुकरर होकर कुवर राजनगर में रहने लगे ; महाराणा पीछे उदयपुर आये।

मुगलों के समान मेवाड़ में जागीरें बदलती रहती थीं। महाराणा ने चौहान केशरीसिंह को सलूंबर दी। इस पर चौहान केशरीसिंह और रावत कांधल चूंड़ावत सलाह करते हुए थूर के तालाब पर आपस में लड़ मरे। बाद महाराणा ने रावत कांधल के बेटे केशरीसिंह चूँड़ावत को पीछी सलूंबर दी। बाँसवाड़े का रावल अजबसिंह महाराणा की अदूल हुकुमी करता था। उस पर चढ़ाई कर सजा दी। इनका

देहान्त आश्विन वदि १४ स० १७५५ ता० २३ सितम्बर १८६९ ईस्वी को हुआ था। इनके चार पुत्र हुए १ अमरसिंह २ उमेदसिंह (कारोई) ३ प्रतापसिंह (बावलास) और तख्तसिंह हुए[1]।

इन्होंने चूंडावत हारिकादास को देवगढ और राजा भीमसिंह को बनेडा दिया।

६३ अमर सिंह द्वितीय—

जब महाराणा जयसिंह का देहान्त हुआ तब यह राज नगर थे। वहां से उदयपुर आकर आश्विन सुदि ४ स० १७५५ ता० २८ सितम्बर १६९८ इस्वी को गद्दी पर बैठे। इनका जन्म मार्ग शीर्ष वदि ५ स १७२९ ता० ३० अक्टूबर १६७२ ईस्वी को हुआ।

डूंगरपुर के रावल खुमानसिंह, बांस वाडे के रावल अजबसिंह और देवलिये के रावत प्रतापसिंह ने हाजिर हो

---

१ वीर विनोद मे प्रतापसिंह को दूसरा और उमेदसिंह को तीसरा होना लिखा इसी माफिक प० गौरी शकर ने भी राजपूताने के इतिहास में लिखा, परन्तु यह गलत है। मैंने अपने कारखान के कागजात मिरदारों की बैठक की टीपणी से जाच कर उमेदसिंह को दूसरा और प्रतापसिंह को तीसरा लिखा वह सही है।

कर टीके का दस्तूर नहीं किया। इस पर महाराणा ने अपने काका सूरतसिंह को तीनों जगह फौज लेकर भेजा। सोम नदी पर लड़ाई हुई। डूंगरपुर के कई चौहान राजपूत मारे गये। रावल खुमानसिंह भाग गया। महाराणा की फौज ने शहर को लूटा। बाद देवगढ़ के रावत द्वारकादास ने बीच में पड़ कर सुलह कराई। रावल ने टीका भेजा और १॥ लाख रुपया फौज खर्च के दिये।

बादशाह ने जजिये के एवज पुर, मांडल, बदनोर और माडलगढ़ रख लिये थे। इन्होंने इन स्थानों से बादशाही थाने-दारों को निकाल दिया।

वि० सं० १७६२ ई० सन् १७०६ में शाहपुरा के राजा भारतसिंह को अपना मातहत बनाया। वि० सं० १७६४ ई० सन् १७०७ में बादशाह शाह आलम ने जोधपुर, आमेर खाल से कर लिये। तब दोनों महाराजा सवाई जयसिंह और अजीत सिंह उदयपुर आये। महाराणा ने आपस में एक अहदनामा किया। यह राजा मुगलों को बेटी देने लगे तब महाराणा ने इनको बेटी देना आदि बंद कर दिया। अब इनसे इकरार लिखाया कि हम आयन्दा बादशाह को बेटी नहीं देंगे। और महाराणा की लड़की का बेटा छोटा भी होगा तो वह गद्दी पर बैठेगा। और जयपुर के महाराजा सवाई जयसिंह को अपनी बेटी ब्याही। और इनके साथ फौज देकर जोधपुर और आमेर पर इनका पीछा अधिकार करा दिया।

इन महाराणा ने अमर पट्टा कर जागीरें बदलने का तरीका बन्द कर दिया। और भी राज्य का प्रबन्ध किया। अमर शाही पगडी नई ईजाद की सोलह और बत्तीस दो नबर सरदारों के मुकर्रर कर चाकरी का तरीका कायम किया।

इन्होंने महलों में राज नगर के सगमरमर का शिव प्रसन्न, अमर विलास (बाडी महल) नामी महल बनवाया। चौगान, नक्कार खाना, और घडियाल की छत्री बनवाई।

इन्होंने पीपल्या के शक्तावत बाघसिंह को शाहु राजा के पास सितारे भेजा। इनका देहान्त पौष सुदि १ वि० स० १७६७ ता० १० दिसम्बर १७१० ई० को हुआ। इनके १ कुँवर सग्रामसिंह और १ पुत्री चन्द्र कुँवर हुई-जिसका विवाह जयपुर के महाराजा सवाई जयसिंह के साथ किया।

६४ सग्रामसिंह

यह महाराणा वि० स० १७६७ पौष सुदि १ ई० सन् १७१० ता० १० दिसम्बर को गद्दी विराजे। और राज्याभिषेक वि० स० १७६८ ज्येष्ठ बदि ५ ई० सन् १७११ ता० २६ अप्रेल को हुआ। इस वक्त जयपुर के महाराजा सवाई जयसिंह उदयपुर में ही थे। जिस समय सिंहासन पर यह पटरानी सहित विराजे। और अभिषेक हो रहा था, महाराज वहा आये

और चमरदारों से चमर लेकर एक तरफ तो स्वयं माहाराजा और दूसरी तरफ राठौड़ दुर्गादास महाराणा पर चमर दुलाने लगे। इसका जन्म वि० सं० १७४७ प्रथम वैशाख वदि ६ ई० १६९० ता० २१ मार्च को हुआ।

बादशाह ने पुर, मांडल, हुरडा के परगने रणबाजखां मेवाती को और मांडलगढ़, नागौर के राव इन्द्रसिंह राठौड़ को देदिये। राव इन्द्रसिंह ने तो मांडलगढ़ पर मन नहीं बढ़ाया और रणबाज खां, पुर मांडल और हुरड़ा पर कब्जा करने शाही फौज लेकर आया महाराणा ने भी रावत महासिंह सारंग देवोत (कानोड़) राव देवभान कोठारिया, राठौड़ सूरजसिंह (लीमाड़ा) रावत सांगा (देवगढ़) रावत देवीसिंह (बेगं) रावत विक्रमसिंह (महासिंह का भाई) रावत मोहनसिंह मानावत, डोडिया हठीसिंह नवलसिहोत, पीथल शक्तावत, रावत गंगादास, (बानसी) सूरजमल सोलंखी (रूपनगर) सज्जा कड़तल (देलवाड़े) मधुकर शक्तावत, सावन्तसिंह (सलूंबर के रावत केशरीसिंह का भाई) दौलतसिंह चूँड़ावत (दौलतगढ़) रावत पृथीसिंह (आमेट) राठौड़ जयसिंह (बदनोर) दलपत का पुत्र भारतसिंह (शाहपुरा) जस करण कानावत, महता सांवलदास, कान्ह कायस्थ छीतरोत, राणावत संग्रामसिंह (खेराबाद) और राठौड़ साहबसिंह (रूपाहेली) आदि को मुकाबले के लिये भेजा। यह लोग हुरडे पहुँचे, उधर रणबाजखां खारी नदी के किनारे आया।



त्रिपोलिया

दोना में घमसान युद्ध हुआ, राजपूत उसको हटाते हुए वाघन बाडा ले गये। रणवाजखा और उसका भाई नाहरखा मारे गये और शाही फौज भागकर अजमेर गई। राजपूतों ने उसका सामान लूट लिया। महाराणा की सेना में रावत माहसिंह और दौलतसिंह मारे गये। तथा राठौड जयसिंह सामतसिंह, कुँवर नाहरसिंह (महासिंह का पुत्र) रावत सूरसिंह आदि घायल हुए। इसके इनाम में रावत माहसिंह के पुत्र को कानोड और उसके भाई सूरतसिंह को थाठरडा, और चूँडावत सावन्तसिंह को महाराणा ने बम्बोरा दिया।

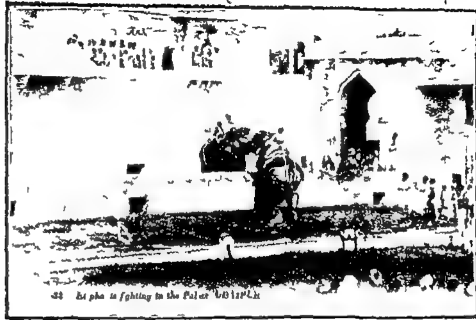
वि० स० १७६८ वैशाख सुदि ७ शनिवार ई० सन् १७११ ता० १४ अप्रेल को यह लडाई हुई इस लडाई में बेगूँ की जमीयत में एक कोठारी आया उसको दूसरे सरदारों ने कहा कि कोठारी जी यहां आटा नहीं तोलना है। इस पर उसने उत्तर दिया—कि आटा ही तोलूंगा फिर लडाई के समय घोडे की वाग कमर में बाधकर दोनों हाथों में तलवारें लेकर लड़ना शुरू किया। और कहा आइए आटा तोलता हूँ। इसी तरह लडता हुआ मारा गया। इन महाराणा ने रामपुरा मेवाड में मिलाकर ४ लाख की आमदनी के गाव राव गोपाल सिंह को दिये और बाकी ४ लाख के खालसे में मिला लिये राव गोपालसिंह से मेवाड के दूसरे जागीरदारों के माफिक छट्टूद चाकरी का इकरार लिखा लिया। और बाद वि० स० १७८५ ई० सन् १७२० को रामपुरा अपने भाणेज माघवसिंह, जयपुर

महाराजा सवाई जयसिंह के छोटे पुत्र को चाकरी के एवज जागीर में दिया। उदयपुर में १ हजार सवार और १ हजार पैदल के साथ और देश परदेशों में २ हजार सवार और २ पैदल से नौकरी करने के करार पर दिया।

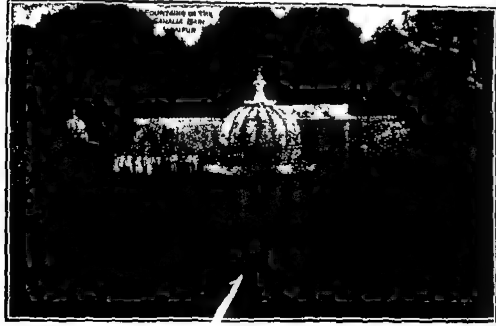
वि० सं० १७८५ ई० सं० १७२८ में इन महाराणा ने फूलिया (शाहपुरा) को मेवाड़ के तालुक कर लिया। महाराजा अजीतसिंह को बादशाह से वापिस मारवाड़ का राज्य मिलने पर राठौर दुर्गादास की सेवा को भूलकर उसे मारवाड़ से निकाल दिया। महाराणा ने उसे यहां बुलाकर विजयपुर की जागीर और १५ हजार रुपया मासिक देकर यहां रख लिया और उसको रामपुरे पर इंतजाम के लिये भेजा।

महाराणा ने भींडर के महाराज जैत्रसिंह शक्तावत को सेना देकर ईडर भेजा। ईडर के आनन्दसिंह और रायसिंह दोनों जेत्रसिंह की शरण में आये। इन दोनों भाइयों (यह जोधपुर महाराज अजीतसिंह के लड़के थे) को लेकर जेत्रसिंह उदयपुर आये। महाराणा ने पोलाव पाल, ईडर के पहिले के राजा की सन्तान को दिया। कुछ इलाके मेवाड़ में मिलाकर बाकी का राज्य आणदसिंह और रायसिंह को दे दिया।

इन महाराणा ने कोटे के राव भीमसिंह को महाराव रईस बनाया। वि० सं०-१७६० माघ वदि ३ ता०-२२ जनवरी



33 Elephants fighting in the Palace [illegible]


FOUNTAINS IN THE



खास ओदी

१७३४ ई० को इनका देहान्त हो गया। इन्होंने महलों में बडी चित्रशाली, (इसमें चीन से चीनियें पुर्तगीजों की मार्फत मगवा कर लगवाई) त्रिपोलिया, अमाड चौगान में छोटा दरीखाना व अ ज्ञ और जग मन्दिर में नहर, जनाने महल दरीखाने बनवाये। और नाहर मगरे में महल ओदिया बनवाई। शहर कोट का काम पूरा कराया। खाओद., सहरयों की बाडी शीतला-माता का मन्दिर, दक्षिण मूर्त्ति का मन्दिर बनवाया। सिसामा में वैद्यनाथ महादेव का मन्दिर बनवा कर वहा सुवर्ण का तुलादान किया। इनके ४ कुवर-१ जगतसिंह २ नाथसिंह (बागोर) ३ राघसिंह (कर्नाली) ४ अर्जुनसिंह (शिवरती) हुए। नाथसिंह को बागोर दी। और मल्हार राव होलकर के साले नारायण राव को वूढ का परगना जागीर में दिया।

महाराणा का वकील प चोलो बिहारो दास बडा होशियार था उसने शतरज खेलने में बादशाह फरुख सैय्यर को खुश कर अपने मालिक की बडी खिदमत बजाई इससे तरक्की पाकर वह पीछे प्रधान हुआ।

६५ जगत सिंह द्वितीय

यह महाराणा वि० स० १७९० माघ कृष्णा ३ ई० सन् १७३४ ता० २ फरवरी को गद्दी विराजे। इनका जन्म वि० स० १७६६ आसोज वदि १० ई० सन् १७०९ ता० १० सितम्बर को हुआ।

वि० सं० १७९१ ई० सन् १७३५ को मेवाड़ की उत्तरी सरहद्द पर हुरड़ा मुकाम पर राजस्थान केसब राजा जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, नागोर, बूंदी, कोटा करोली, किशनगढ़, आदि इकट्ठे हुए। और महाराणा को मुरब्बी करार देकर मरहट्ठों के लिये विचार किया। और यह तय पाया कि वर्षा काल बाद सब राजा रामपुरे इक्ट्ठे होकर विचार करेंगे। महाराणा के देखा देखी जोधपुरवालों ने भी यहां लाल डेरा लगाया। यह खबर दिल्ली बादशाह को पहुँची, फौरन एतराज हुआ। क्योंकि बादशाह के सिवाय लाल डेरा कोई नहीं लगा सकते थे। और महाराणा ने तो बादशाह के लाल डेरे पहिले छीने थे इसलिये इनको कोई नहीं रोक सक्ता था परन्तु जोधपुरवालों ने लगाये उस पर एतराज हुआ। इस वक्त उनका वकील होशियार था उसने जवाब दिया कि हजूर की खैरख्वाही के लिये सलाह करने के लिये शाही डेरा लगाया गया, यह कह कर उसने पीछा छुड़ाया। शाहपुरे का राजा उम्मेद सिंह जोधपुर के महाराजा अभय सिंह के साथ दिल्ली गया। और फूलिये का पेशकश अजमेर अलग भरने लगा। इस पर महाराणा ने वि० सं० १७९२ ई० सन् १७३५ में फूलिये की तहरीरें अपने नाम पर मगाली। राजा उम्मेदसिंह ने सर्कशी इख्तियार की इस पर महाराणा ने शाहपुरे पर चढ़ाई कर उम्मेद सिंह से १ लाख रुपया जुर्माना लेकर कसूर माफ किया।

इन महाराणा ने शाहपुरा, सावर, जहाजपुर, बनेडा की तहरीरें अपने नाम दिल्ली से मंगा कर इनको मेवाड में मिलाया।

भाणेज माधवसिंह के होशियार होने पर वि० सं० १८०० ई० सन् १७४३ रामपुरे से जयपुर का प्रबन्ध उठा कर अलग प्रबन्ध किया। और चाकरी का तकाजा किया। महाराजा सवाई जयसिंह के मरने पर ईश्वर सिंह जयपुर की गद्दी पर बैठ गये। तब इकरारनामे के मुताबिक माधवसिंह को गद्दी बिठाने के लिये लडाई की परन्तु इस वक्त चूंडावत सरदार ईश्वरीसिंह के पक्ष में (महाराजा सवाई जयसिंह ने ईश्वरीसिंह को सलूंबर के रावत की लडकी से शादी कराई कि चूंडावत ईश्वरीसिंह का पक्ष लेवे) हो गये। जिससे महाराणा की हार हुई आखिर वि० सं० १८०७ ई० सन् १७५० में मल्हार राव हुलकर को मदद पर बुलाया लडाई हुई ईश्वरी सिंह जहर खा मरे। और माधव सिंह गद्दी पर बैठे। महाराणा ने ८ लाख रुपये के एवज हुलकर को रामपुरा का परगना दिया।

इनके समय में बादशाह से चौथ लेकर बाजी राव पेशवा उदयपुर आया और महाराणा की गद्दी के सामने उसको पुरोहित के पास आसन पर बिठाया। महाराणा ने उसे चौथ देना मंजूर किया वहां से वह जयपुर गया, सलूंबर का रावत साथ गया। वहां जयपुर महाराना, पेशवा और सलूंबर रावत तीनों एक ही गद्दी पर बैठे।

कुंवर प्रतापसिंह ने महाराणा के हुकुम के विरुद्ध बूँदी राव राजा के कुँवर को जागीर दी। इस पर महाराणा ने कुँवर प्रताप सिंह को कैद करने का हुकुम दिया। परन्तु प्रताप सिंह इतने ताकतवर थे कि किसी की हिम्मत उनको पकड़ने की न हुई। महाराज नाथ सिंह ने अर्ज किया कि मैं पहले कुंवर की ताकत अजमा लुं। कुंवर खींच मंदिर में कसरत करते थे वहां ताकत अजमाई और कुंवर को पीछे हटाना चाहा परन्तु कुंवर का पैर पत्थर की चौखट से रुक गया वह पत्थर टूट गया परन्तु कुंवर न हटे इस पर नाथसिंह ने अर्ज किया अब कभी धोखे से पकड़ूंगां। वि० सं० १७९९ ई० सन् १७४२ में महाराणा कृष्ण विलास में विराजे थे कुंवर भी सामने बैठे थे, अचानक नाथसिंह ने पीछे से आकर पीठ में गोड़ी लगा कर कुंवर को कैद कर लिया। उस वक्त शक्तावत सुरत सिंह और उसका भाई महाराणा के पास थे और कुंवर की अरदली में सुरत सिंह का बेटा उमेद सिंह था वह नीचे था उसने सुना कि कुँवर को कैद किया। वह एक दम तलवार लेकर ऊपर आया उसको रोकने के लिये महाराणा ने उसके काका को हुकुम दिया परन्तु उसने परवाह न कर काका को सामने ही मार डाला तब महाराणा ने उसके बाप सूरतसिंह को हुकुम दिया, उसको देख उमेदसिंह कुछ रुका इतने में सूरतसिंह ने उम्मेद सिंह को मार डाला। महाराणा ने तारीफ की और सूरतसिंह को जागीर देने लगे। परन्तु रंज के मारे उसने न ली।



जगनिवास

इन महाराणा ने चूडावत रुगनाथ सिंह को भैंसरोड, महाराज वाघसिंह का करजालो, डोडिया र दार सिंह को लावा (सिरदार गढ) और चूडावत ऊरजण सिंह को कुरावड दी।

इन महाराणा का देहान्त वि० स० १८०८ अषाढ़ व दि ७ ई० सन् १७५१ ता० १६ जून को हुआ। इनके २ कुँवर प्रताप सिंह और अरिसिंह हुए।

इन्होंने तालाब में मशहूर जग निवास महल बनवाया। जगदीश के मंदिर को मुसलमानों से नुकसान हुआ उसकी दुरुस्ती कराई। महलों में छोटी चित्रशाली में चीनीये लगाई। सूरज चौपाड में जमावमा इजारा बनवाया।

महाराणा के अन्त समय में तकलीफ बढ़ी तब नागौर-महाराजा बखत सिंह, देवगढ के महाराजा जशवत सिंह खेरा-बाद और शाहपुरे के राजा उम्मेद सिंह ने कुँवर को जहर देना सोचा। महाराणा को मालुम होते ही इन सबको शहर से बाहर जाने का हुकुम दिया।

६६ प्रताप सिंह दूसरे।

महाराणा जगत सिंह का देहान्त होने पर सलूंबर के रावत जेतसिंह ने कुँवर प्रताप सिंह को कैद से निकाल कर वि० स० १८०८ अषाढ़ वदि ७ ई० सन् १७५१ ता० १६ जून

को गद्दी बिठाया। इनका जन्म वि० सं० १७८१ भाद्रवा वदि ३ ई० सन् १७२४ ता० २७ जुलाई को हुआ। इनकी कैद के समय सनाढ्य ब्राह्मण वड़वा शंभू ने अच्छी सेवा की और कुँवर को दिये जाने वाला ज़हर स्वयं खा कर मर गया। और बाद उसके लड़के अमरचन्द्र ने सेवा की इससे प्रसन्न होकर अमरचन्द्र को ताजीम ठाकुर का खिताब देकर अपना मुसाहब बनाया। और अपने खैरख्वाह शक्तावत उमेद सिंह के बेटे अखे सिंह को रावत का खिताब और दारू का पट्टा दिया और महाराज नाथसिंह, देवगढ़, देलवाड़ा, शाहपुरा और सणवाड़ इन पाँचों सरदारों को बुलाकर तसल्ली की।

एक दिन महाराणा ने दरबार में बैठे हुए हँसी में कहा कि काका जी (नाथसिंह) ने कैद करने के वक्त मेरे गोड़ी लगाई वह बादल होते हैं तब दुखती है। यह सुनकर चारों सरदार अपने डेरे पर जाकर सलाह कर बगैर रुखसत लिये अपने २ ठिकानों पर चले गये। बागोर महाराज नाथसिंह अपने लड़के भीमसिंह सहित सादड़ी, देवलया, होकर नृसिंह गढ़ गया। वहां अपनी शादी कर बूंदी गया वहां से माल-पुरे गया जहां जयपुर और जोधपुर दोनों महाराजा ने उसकी पेशवाई कर उसकी तसल्ली की और माधवसिंह ने कहा मैं महाराणा प्रतापसिंह को उतार कर तुमको मेवाड़ की गद्दी बिठा दूंगा। यह जो दोहा किसी कवि ने कहा वह बहुत ठीक है—

जाट जमाई भाणजो, रेवारी रु सुनार।
अन्तराक देन आपणा, कर देखो उपकार॥

जिन महाराणा जगतसिंह ने सारी मेवाड को वर्बाद कर क्रोड रुपया खर्च कर अपने भाणेज माधवसिंह को गद्दी बिठाया वही माधवसिंह पीछा जगतसिंह के लड़के प्रतापसिंह को गद्दी से उतारने को तयार हो गया।

इधर देवगढ देलवाडा, शाहपुरा और लनवाड वाले मिलकर मेवाड के गाव लूटने लगे और खालसे की रियाया बडी तंग होगई उस वक्त का दृश्य रावलों ने नाटक कर महाराणा को दिखाया, नाटक में एक किसान और सिपाही का स्वांग लाये सिपाही ने किसान को बेगार में पकडा उसने कहा मैं चूंडावतों की रैयत हूँ इस पर छोड दिया फिर पकडा उसने क्रम २ से भाला, चहुआन राठोड, शक्तावत आदि की रैयत हूँ कहा। जब उसने कहा म खालसे की रैयत हू सिपाही ने जूते मार कर सिर पर गठरी रख दी और ले गया। यह नाटक देखने ही महाराणा समझ गये कि मेरी रैयत का यह हाल हो रहा है फिर ता महाराणा ने ऐसा प्रबन्ध किया कि थोडे ही दिनों में रियाया आसूदा हो गई परन्तु वि० स० १८१० माघ वदि ७ ई० सन् १७५४ ता० १४ जनवरी में ही महाराणा का देहान्त हो गया, जिससे विशेष उन्नति वहीं रुक गई। इनके एक कुँवर राजसिंह हुए।

६७ राजसिंह दूसरे

यह महाराणा वि० सं० १८१० माघ वदि २ ई० सन् १७५४ ता० १० जनवरी को गद्दी विराजे। इनका जन्म वि० सं० १८०० वैसाख सुदि १३ ई० सन् १७४३ ता० २७ जून को हुआ। इनके गद्दी बैठते ही महाराज नाथसिंह और चारों सरदार उदयपुर चले आये। इन दिनों में जय आपा सैंधिया ने महाराजा रामसिंह की मदद कर नागौर के क़िले में महाराजा विजयसिंह को घेर लिया। उसकी सफाई करने के लिये यहां से महाराणा ने सलूंबर के रावत जैतसिंह को भेजा, वहां एक खोखर राजपूत ने सैंधिया को मार डाला और यह शक जैतसिंह पर आया। मरहटे जैतसिंह पर टूट पड़े वह लड़कर मारा गया।

वि० सं० १८१३ ई० सन् १७५६ में शाहपुरे राजा उमेदसिंह ने राजा सरदारसिंह से बनेड़ा छीन लिया, तब सरदारसिंह उदयपुर आया और वहीं मर गया, महाराणा ने फौज भेजकर वि० सं० १८१५ ई० सन् १७५८ में उसके लड़के रायसिंह को बनेड़ा पीछा दिलाया। इनका देहान्त वि० सं० चैत्र वदि १३ ई० सन् १७६१ ता० ३० अप्रेल को हुआ।

६८ अरिसिंह तीसरे—

यह महाराणा वि० सं० १८१७ चैत्र वदि १३ ई० सन् १७६१ ता० ३० अप्रेल को गद्दी विराजे।

महाराणा राजसिंह का देहान्त होने पर झाली रानी के गर्भ का सशय था, इस पर सब सरदार ड्योढ़ी पर गये और बाईजी राज को अर्ज कराया कि अगर झाली जी के गर्भ होवे तो बालक होने तक उसकी इन्तजार करें, उस वक्त उन्हों ने कह दिया नहीं है। तब महाराज अरिसिंह को गद्दी बिठाये। परन्तु इनका मिजाज बहुत तेज था और गद्दी बैठते ही एक लिंगजी दर्शन करने गये वहा से पीछे आते हुए चीरवे के घाटे में रास्ता तग था, महाराणा ने चलने की ताकीद की यहा तक कि उमरावों के घोडों पर छडीदार को छडी मारकर हटाने का हुक्म दिया। इस पर सरदार बगल पर हो गये और महाराणा घोडा दौडाते हुए उदयपुर महलों चले आये। सब सरदार अनेरी की, बावडी पर इकट्ठे हुए और सलाह की बेदले के राव ने कहा कि मेरी बेटी सती हो चुकी वरना मैं कर दिखाता अब तो गोगुंदे राज जसवतसिंह का मौका है इस तरह सलाह कर इन लोगों ने झाली राणी के गर्भ होना साबित कर राज जसवतसिंह झाली रानी को गोगुन्दे ले गया। और वहा रतनसिंह नामी लडका मशहूर कर उसको महाराणा राजसिंह का फर्जंद करार दे महाराणा अरिसिंह को गद्दी छोडने को कहलाया।

महाराणा जगतसिंह ने रामपुरा हुल्कर को ८० लाख रुपये के एवज दियो था परन्तु रामपुरा, बूंदा, जारडा व कणजेडा के परगने पीछे ठेके पर लेलिये थे और वह टेका

अदा न हुआ इस पर मल्हार राव हुल्कर मेवाड़ में आया और ५१ लाख रुपया लेगया और परगने अपने कब्जे में कर लिये ।

महाराणा ने बागी सरदारों को दबाने के लिये सिंध की तरफ से सिंधी सिपाहियों को बुलाकर नौकर रखा और बागौर के महाराज नाथसिंह का महाराणा को बड़ा भय था इसलिये भैंसरोड के रावत लालसिंह को कह कर वि० सं० १८२० माह सुदि २ ई० सन् १७६४ ता० ४ फरवरी को उसको मरवा डाला। और इसके इनाम में भैंस रोड रावत को उमराव बनाया। इसी तरह सलूंबर के रावत जोधसिंह का सन्देह था उसको उदयपुर बुलाया पर वह नहीं आया। और अपनी सुसराल मोही को जा रहा था रास्ता नाहर मगरे होकर जाता था महाराणा भी वहां गये। बगैर मुजरा किये जाना मुनासिब न समझ कर वह मुजरा करने आया। तब उसको पान में विष देकर वहीं खतम किया। इन बातों से सरदार और ज्यादा भड़के और रत्नसिंह को कुंभलगढ़ ले जा कर मेवाड़ का महाराणा प्रख्यात किया और उसको गद्दी बिठाने की मदद पर माधवराव सैंधिया को उदयपुर लाना तजवीज किया। इस अरसे में कोटे से झाला जालिमसिंह नाराज होकर उदयपुर आया। महाराणा ने उसे राजराणा का खिताब और चीता खेड़ा की जागीर देकर अपने पास रख लिया। और देलवाड़े राज राघव देव को भी अपने पक्ष में कर लिया।

शाहपुरे के राजा उमेद सिंह को भी काछोला की जागीर का लालच देकर अपनी ताकत बढाई। पेशवा के अफसर रघु पाय गिया और दौला मिया को २० लाख रुपये देना कर अपने बस में किया वह ८ हजार सवार लेकर आगये इतनी ताकत बढ़ने से महाराणा की ताकत बढ गई। उधर बेदला, कोठारिया, देवगढ आदि रतनसिंह के पक्ष वालों ने सेंधिया माधवराव को १॥ करोड रुपया देना करके उदयपुर चढा लाना तजवीज किया। महाराणा ने अपने सरदारों की फौज लेकर उज्जैन भेजना तजवीज किया। और कहा कि सेंधिया को समझाना अगर न समझें तो लडाई करना। इस वक्त सलूबर के रावत पहाडसिंह, शाहपुरे के राजा उमेदसिंह, देलवाड़े के राजा राघवदेव को सेंधिया को समझाने भेजा परन्तु न समझा। ऐसे समय में समय आजाने से महाराणा ने देलवाड़े के राज राघवदेव को सिधी सिपाहियों को ईशारा कर मरवा डाला। फिर सेंधिया के उदयपुर आने की खबर सुन कर सादडी राज, सलूबर रावत, बिजोल्या राव, घाणे राव ठाकुर, आमेट रावत, बदनोर ठाकुर, भैंस रोड रावत, बनेडा और शाहपुरे के राजा, कानोर रावत, झाला जालमसिंह, महता अगरचन्द, रघुपायगिया और दौला मिया को बडी फौज लेकर उज्जैन भेजा। और वहा वि० स० १८२५ पौष सुदि ६ ई० सन् १७६६ ता० १३ जनवरी का लड़ाई हुई महाराणा की फौज विजय पाकर उज्जैन लूटने में लगी। इतने

देवगढ़ के रावत के जयपुर से बुलाये हुए ताज़ा १५ हज़ार नागा आ पहुंचे इससे सेंधिया की हिम्मत बढ़ गई। और पीछी लड़ाई होने पर महाराणा की हार हुई। सलुंबर का रावत पहाड़सिंह, शाहपुरे का राजा उम्मेदसिंह, और बनेड़ा का राजा रायसिंह, मारा गया। सादड़ी का झाला कल्याणसिंह दौलामियां और भैंस रोड का रावत मानसिंह आदि घायल हुए। झाला जालिमसिंह और अगरचन्द घायल होकर कैद हुए।

इस पराजय से महाराणा बहुत घबड़ाये और सिंध तथा गुजरात से मुसलमान सिपाही बुलाये और सनाढ्य ब्राह्मण अमरचन्द बड़वा[1] को मुसाहिब बनाया। अमरचन्द ने शहर पनाह की मज़बूती कर शहर के चारों तरफ इन्द्रगढ़ सूरजगढ़, सारणेश्वर गढ़ और अम्बावगढ़ के मुरेले बनवाये। एक लिंगगढ़ पर दुश्मन भञ्जन नामी बड़ी तोप चढ़ा कर शहर का अच्छा प्रबंध किया और सोने चाँदी के बरतन तुड़वा कर रुपये ढलवाये और सब सिपाहियों की तनख्वाह चुका कर सबको संतोष दिया।

कहते हैं कि फितूरी रत्नसिंह को ७ वर्ष की उमर में शीतला निकली जिससे वह मर गया परन्तु इन विद्रोही सरदारों ने उसके एवज दूसरा मुकर्रर कर महाराणा को तंग करना न छोड़ा। और माधव राव सैन्धिया को उदयपुर चढ़ा

१. यह ग्रंथकर्त्ता की जाति का और सबन्धी था।

लाये। महाराज बाघसिंह और अर्जुनसिंह ने इस समय बहुत साहस दिलाया यहा तक कि जिस वक्त सिंधी सिपाहियों ने वेतनन मिलने से उपद्रव किया ये दोनो भाई महलों में जा बैठे और रक्षा का भार अपने ऊपर लिया माधव राव सैंधिया ने उदयपुर के घेरा डाला, महाराज बाघसिंह एकलिंग गढ़ पर थे उन्हों ने तोपों की मार से सैन्धिया को नजदीक न आने दिया, सैन्धिया ने कई हजार रुपयों का उन्हें लालच दिया वह लेकर उन्हों ने महाराणा को दिये परन्तु सैन्धिया को नजदीक न आने दिया। यह तोप का निशाना इतना सही लगाते थे कि सैन्धिया की फोज ने सूरजपोल बाहर सूरजगढ पर सीढी लगाई इन्हों ने एक लिंगगढ पर से तोप लगाकर सीढी उडा दी इससे सैन्धिया की फौज में डर गालिब हो गया। इस वक्त कुरावड के रावत अर्जुनसिंह ने ७० लाख रुपये माधव राव सैन्धिया को देना करार दे सुलह की शर्तें लिखीं परन्तु लोभ-वश सेन्धिया ने २० लाख और मांगे। इस पर अमरचन्द बडवाने वह सुलहनामा फाड डाला। और लडाई की तैयारी शुरू की। इस वक्त सिंधी सिपाहियों के मुखिया मिर्ज़ा आदिल बेग ने कहा कि हम भी तनख्वाह नहीं लेंगे और लडेंगे। यह खबर सुनकर सैन्धिया माधव राव घबरा उठा और संधि करने पर रजामंद हुआ तब अमरचन्द बडवा ने कहलाया कि ६० लाख रुपया लेना हो तो हम भी तैयार हैं।

आखिर ६० लाख के अलावा ३॥ लाख दफ्तर खर्च देने की तजवीज होकर सुलह हुई ३३ लाख तो सोना-चांदी जेवर व सरदारों से दिये। बाकी रुपयों के बदले जावद जीरण, मोरवण आदि परगने गिरवीं रखे। और यह शर्त्त की गई। कि इनकी वसूली महाराणा व सिन्धिया के कामदार शरीक होकर करें। और रुपये अदा होने पर परगना पीछे महाराणा के कब्जे हो जावें। और इन जिलों के सरदारों का ताल्लुक महाराणा से रहे। यह सन्धिकर सैन्धिया वि० स० १८२५ श्रावण वदि ३ ई० सन् १७६९ ता० २१ जुलाई को मालवे को लौट गया। महाराणा ने इस सेवा में सलूँबर के रावत भीमसिंह, बड़वा अमरचन्द को इनाम इकराम दिया। और सिन्धी सिपाहियों के अफसर मिर्जा आदिलबेग के लड़के अब्दुल रहीमबेग को बहुत बड़ी जागीर देकर उमरावों के बराबर इज्जत बक्षीस की।

सेंधिया माधवराव के लौटने पर भी विद्रोही सरदार संतुष्ट न हुए और महापुरुषों को लाये। और मेवाड़ को लूटना चाहा महाराणा के पक्ष के सरदारों को धमकियां देने लगे तब महाराणा सलूँबर रावत भीमसिंह, कुरावड़ रावत अर्जुनसिंह को शहर की हिफाजत पर छोड़ कर, महाराज बाघसिंह और अर्जुनसिंह, बीजोल्या, आमेट, कोठारिया, रदनोर व बाणेराव आदि सरदारों को तथा सिंधी सिपाहियों को लेकर जोलोला पहुँचे। महापुरुषों की फौज मोकरुंदा गांव में ठहरी हुई थी। टोपला गांव में टोपल मगरी के पास लड़ाई हुई। महापुरुष

भाग निकले और महाराणा उदयपुर आये। इस सिकस्त पर भी विद्रोही शान्त न हुए। और बेदला के राव रामचन्द्र ने १० हजार महापुरुषों को गगराड में इकट्ठे किये और मेवाड़ लूटने लगे। महाराणा ने महाराज बाघसिंह को गोडवाड के सरदारों सहित गोडवाड की हिफाजत के लिये भेजा। और सलूंबर रावत भीमसिंह को उदयपुर में छोड कर कुराबड़, कोठारिया, बिजोल्या, बदनोर, महाराज अर्जुनसिंह और सभी सिपाहियों को लेकर गगराड पहुँचे। दोनों तरफ के शूर लड़े महाराज अर्जुनसिंह के १५ घाव लगे आखिर महापुरुषों की सख्त हार हुई। उन्होंने शपथ खाई कि अब हम महाराणा के विरुद्ध नहीं लड़ेंगे। चित्तौड पर भी रतनसिंह फितूरी ने दखल कर लिया। परन्तु महाराणा ने रावत भीमसिंह (सलूंबर) को भेजा। उसके पहुँचते ही रतनसिंह का किलेदार सूरतसिंह भाग गया।

महाराज बाघसिंह भी गोडवाड से रतनसिंह का कबजा उठा कर आया। और वहां फौज रखने के लिये महाराणा से अर्ज की इस पर महाराणा ने जोधपुर के महाराजा विजय सिंह को तीन हजार सवार ना रखाने में रखने की शर्त पर गोडवाड का परगना उस खर्च के लिये इस शर्त पर दिया कि जब इन सवारों की जरूरत न होगी गोडवाड पीछा हम ले लेवेंगे। महाराज विजयसिंह ने भी मंजूर किया। और महाराणा को लिखा कि २०० सवार ५०० सिपाही हर वक्त और

लड़ाई के वक्त ३ हजार फौज रहेगी। और जिस दिन आप हमारी जमीयत को रुखसत देंगे गोड़वाड़ पर आपका कबजा हो जायगा। परन्तु कबजा न हुआ। महाराणा उदयपुर से रवाना होकर आटूण के बागी सरदार पुरावत गुमानसिंह को सजा देने गये। महाराणा ने किला घेर लिया और गुमानसिंह को जिंदा पकड़ने का हुकुम दिया परन्तु गुमानसिंह ने रुईदार कपड़े पहन तेल में तर कर आग लगादी जिससे जल कर लड़ता हुआ मारा गया। महाराणा ने किला फतह कर वि० सं० १८२६ माघ सुदि ६ ई० सं० १७७३ ता० १ फरवरी को आटूण अमरचन्द बड़वा को दिया। बाद महाराणा ने भींडर ऊपर हेड़ा तथा कोटू कोटा पर कबजा कर लिया। इतना होने पर भी बागी शान्त न हुए। और देवगढ़ का रावत जसवंत सिंह जयपुर महाराजा पृथ्वीसिंह के पास था वहां से अपने लड़के सरूपसिंह के साथ फरांसीसी शिमरु को ५ हजार फौज के साथ मेवाड़ पर भेजा। शिमरु अजमेर इलाके देवल्या गांव में पहुँचा महाराणा भी वि० सं० १८२८ श्रावण ई० सन् १७७१ में हुरड़े पहुँचे। खारी नदी के दोनों किनारों पर दोनों फौजों का मुकाबला हुआ। तीन दिन तक गोलंदाजी रही। इतने में महाराणा के ससुर किशनगढ़ के महाराजा बहादुर सिंह आ पहुँचे और शिमरु को समझा कर महाराणा के पास लाये। शिमरु ने दो पिस्तौल, एक तलवार १ घोड़ा महाराणा के नजर किया। महाराणा ने भी खिलअत व घोड़ा देकर

विदा किया। महाराणा वहा से अमरगढ गये वहा के किले को घेरा। उस समय बूंदी का राजा अजीतसिंह जो वागियों से मिला हुआ था बीलाटा गॉव की सरहद के तनाजे के वहाने से यहा आया। और शिकार में महाराणा को धोके से घुड-दौड में बरछे से मार डाला। उस वक्त छडीदार रूपा ने राव राजा के ऐसी जोर से छडी मारी कि वह वेहोश हो गया। और साथ में उस वक्त थोडे सरदार थे उनमें से सनवाड का बाबा शम्भूसिंह और बायला सका बाबा दौलतसिंह बूंदी वालों से लडकर वहीं वि० स० १८२९ चैत वदि १ ई० सन् १७७३ ता० ९ मार्च को मारे गये।

इन महाराणा के २ पुत्र १ कुवर हमीरसिंह और २ भीमसिंह हुए। इन महाराणा ने अर्जुनसिंह को शिवरती और राजा उमेदसिंह को काछोला दिया।

६९ हमीरसिंह दूसरे—

यह महाराणा वि०स० १८२९ चैत्र वदि ३ ई० सन् १७७३ ता० ११ मार्च को गद्दी विराजे। जमाने की हालत और तंगी के कारण इनका राज्या भिषेक टोले विराजना नहीं हुआ और यहा से पटरानी सहित नोचोकी में राज्याभिषेक होना बन्द हो गया। और उसके बजाय अभिषेक होकर गद्दी विराजने का दस्तूर होने लगा। इनकी बालावस्था के कारण राज्यकार्य बाईजी राज इनकी माता करती थीं। और ऐसे समय में

खैरख्वाह अमरचन्द बड़वा को विष दिये जाने के कारण राज्य की स्थिति और भी बिगड़ गई। बेगम के रावत मेगसिंह ने खालसे के कई गांव दबा लिये। उसको सजा देने के लिये माधव राव सैन्धिया को बुलाया उसने घेरा डाल कर फौज खर्च के एवज सींगोला. रतनगढ़ भीचोर के परगने गिरवी ले लिये। यह देखकर हुल्कर ने भी नीवाहेड़ा ले लिया।

सिन्धी सिपाहियों की तनख्वाह चढ़ जाने से उन्हों ने महलों में धरना दिया। उनको समझाने पर उन्हों ने किसी मोतबीर को ओल में मांगा उस वक्त ६ वर्ष के बालक महाराणा के भाई भीम सिंह ने कहा मुझे दे दो फिर वह भीम सिंह सिपाहियों को लेकर मेवाड़ में रुपया वसूल करने गये। चित्तोड़ पहुंचे। वहां माधवराव सिंधिया का जमाई वेरजी ताकपीर आया और चित्तौड़ के कस्बे को लूटने लगा, यह सुनकर भीमसिंह ने कहा, हमारे होते हुए हमारे मुल्क को यह कैसे लूटे। और उस पर हमला कर शिकस्त दे भगाया।

इन महाराणा ने रीछेड़ के पास फितूरी रतनसिंह के सहायक देवगढ़ के रावत राघवदास को शिकस्त दी। शिकार में बन्दूक फट जाने से हाथ में गोली लगी घाव बढ़ गया वि० सं० १८२४ पौष सुदि ८ ई० सन् १७७८ ता० ३ जनवरी को १६ वर्ष की उमर में देहान्त हो गया। कर्नल टाड लिखते हैं कि "जगतसिंह से इस वक्त तक मरहठों ने १८१ लाख

नक्द १६॥ लाख सालियाने का मुल्क मेवाड से लिया और ९ लाख की गोडवाड जोधपुर वालों ने ली।"

७० भीमसिंह

यह महाराणा वि० सं० १८३४ पोष सुदि ८ ई० सन् १७७८ ता० ७ जनवरी को गद्दी विराजे। इनका जन्म वि० सं० १८२४ चैत्र वदि ७ ई० सन् १७६८ ता० १० मार्च को हुआ।

इनके गद्दी बेठते ही कितने ही बागी सरदारों ने रतनसिंह का साथ छोड दिया। मुसलमानों के समय मेवाड की ताकत कम नहीं हुई। परन्तु चूडावतों और शक्तावतों के आपसी द्वेष ने मेवाड को ऐसा तबाह किया कि पहले कभी नहीं हुई। चूंडावतों ने अपना पक्ष प्रबल करने के लिये महाराणा को देवगढ़ लेजाकर रावत राघवदास को उदयपुर लाये। थोडे दिनों बाद सोमचन्द गांधी प्रधान हुआ। उसने झाला जालमसिंह को मिलाकर महाराणा को भींडर ले गया। और महाराज मोहकमसिंह को उदयपुर लाकर अपना पक्ष प्रबल किया इसी तरह वि० सं० १८७४ ई० सन् १८१८ में ईस्ट इंडिया कम्पनी से अहदनामा होने तक कितने ही मुसाहब उलट-पुलट होते रहे। महाराणा जिसको प्रबल देखते उसी के शरीक हो जाते चूंडावत रावत सरदारसिंह (चावंड) ने गांधी सोमचन्द प्रधान को मारा। गाधियों का समय आने पर शक्तावतों की मुसाहिबी में सोमचन्द के भाई सतीदास

और जयचन्द ने रावत सरदार को सिन्धी सिपाहियों की तनख्वाह चुकाकर उनकी ओल में से छुड़ा कर (सरदार सिंह को) मार डाला। फिर चूँड़ावतों का समय आने पर उन्हों ने शक्तिदास और जयचन्द दोनों को पकड़ कर मार डाला और इसी आपसी बखेड़े में मेवाड़ की तबाही होती रही। चूँड़ावतों की मुसाहबी में महता अगरचन्द्र और शक्तावतों के समय गांधी मंत्री होते रहे।

वि० सं० १८४१ ई० सन् १७८४ ता० १५ मई को महाराणा की पहिली शादी ईडर के राजा शिवसिंह की लड़की अदय कुँवर के साथ हुई। इस सफर में तीतरड़ी मुकाम पर महाराणा ने अर्जुनसिंह चुँड़ावत (कुरावड़) को उमराव बनाया। और ईडर में राजा शिवसिंह को गद्दी पर सामने बैठने की इज्जत दी। महाराणा ईडर से लौट कर देव गंगाधर (सांवला जी) के दर्शन को गये। और वहां से डूगरपुर गये रावल ने पदरावनी की।

वि० सं० १८४४ ई० सन् १७८७ में महाराज मुहकमसिंह (भींडर) झाला जालमसिंह की सलाह से कोटे जाकर वहां की जमीयत जिसमें कनाड़ी का राज भवानीसिंह झाला, कोयले का सूरजमल हाड़ा, पलायते का अमरसिंह हाड़ा, गेंते का नाथसिह झाला, जयसिंह हाड़ा और उमरी, भदोड़े का शिशोदिया सोवनसिंह सगरावत आदि सरदारों को व.

बक्शी दयानाथ को ५ हजार सवारों के साथ लाया। और मरहठों को मेवाड़ से निकालने की सलाह की। इसमें शुरू में चूँडावत ने सहायता नहीं दी। इससे उनको (सलूंबर रावत) उदयपुर की हिफाजत के लिये छोड़कर कोटे की जमीयत व मेवाड़ के दूसरे सरदारों को लेकर मालग, छोटी सादड़ी की तरफ कूच किया। और निबाहेड़ा, नकुम जीरण आदि पर कब्जा करते हुए जावद पहुँचे। उधर बेगू के रावत ने सिंगोली आदि से मरहठों को निकाला। और चूंडावतों ने रामपुरा पर कब्जा कर लिया परन्तु मरहठों को अहिल्याबाई के भेजे हुए ५ हजार सवार आ पहुँचे। और माघ महीने में हड़किया खाल पर लड़ाई हुई। और मरहठों ने पीछे सब परगनह मेवाड़ की फौज से ले लिये।

वि० स० १८४८ ई० सन् १७९१ को महाराणा ने शक्तावतों की सलाह से माधवराव सेंधिया को नाहर मगरे बुलाया। फिर वहा से साथ २ चित्तौड़ गये और वहा किला चूंडावतों के पास से खाली कराने के लिये घेरा डाला और गोलंदाजी शुरू की, रावत भीमसिंह चूंडावत ने आबा जी ईंगलिया की मारफत महाराणा से अर्ज कराई कि अगर जालिम सिंह झाला कोटे चला जाय तो मैं हजूर के पास हाजिर हो जाऊं। इस पर जालिम सिंह कोटे गया और रावत भीम सिंह महाराणा के पास हाजिर हो गया। सेंधिया आबाजी को मेवाड़ का अधिकार देकर चला गया और हिदायत कर गया

कि—१ महाराणा की हुकूमत बहाल रहे व सिंधी सिपाहियों व विद्रोही सरदारों ने जा भूमि दबाई वह पीछे लेना। २ फितूरी रतनसिंह को कुंभलगढ़ से निकालना। ३ जोधपुर के राजा से गोड़वाड़ पीछी लेना ४ महाराणा अरिसिंह के मारने का बूंदी वालों से वैर लेना। सैंधिया के पूना जाते ही महाराणा चित्तौड़ में जयचन्द गाँधी को छोड़ कर रावत भीमसिंह चूंड़ावत को लेकर उदयपुर आये।

आंबा जी ईंगलिया के साथ शिवदास गाँधी, रावत अर्जुनसिंह चूंड़ावत आदि को कुँभलगढ़ से फ़ितूरी रतनसिंह को निकलने के लिये भेजा। समीचा गांव में लड़ाई हुई रतनसिंह के जोगी भाग कर केलवाड़े गये। आंबाजी ने पीछा कर वहां उनको हराया। और वि० सं० १८४६ पौष वदि ७ ई० सन् १७९२ ता० ६ दिसम्बर को कुँभलगढ़ पर कब्ज़ा कर वहां से रतनसिंह को भगाया और सूरजगढ़ के राज जसवंतसिंह को किला सौंप कर आंबाजी उदयपुर आये आंबाजी ने उदयपुर आकर राज्य का प्रबन्ध हाथ में लिया और राजनगर, रायपुर, गुरलां, गाडरमाला, हमीरगढ़, कुरज, जहाजपुर, आदि सब सरदारों और सिन्धी सिपाहियों से छुड़ाया। और चूंड़ावतों व शक्तावतों से २० लाख रुपये वसूल किये।

वि० सं० १८५० फाल्गुन ई० सन् १७९४ मार्च में महाराणा ईडर शादी करने गये। एक ही लग्न पर राजा शिवसिंह

की बेटी गुलाबकवर और भवानी सिंह की बेटी उमर कुँवर से शादी की। इस वक्त डूंगरपुर का रावल फतहसिंह न आया और उसके बाप के मरने पर भी न आया और तलवारबन्दी का दस्तूर भी नहीं कराया। इससे ईडर से लौटते समय डूंगरपुर पर घेरा डाला परन्तु रावल ने रावत भीमसिंह के मारफत ३ लाख रुपये तलवारबन्दी व फौज खर्च के दिये इससे घेरा उठा लिया। बाँसवाड़े का रावल विजयसिंह भी महाराणा के विरुद्ध कार्यवाही करने लगा। इससे डूंगरपुर से ही बांसवाड़े की तरफ कूच किया परन्तु महा नदी पर ही गढ़ी के चौहान विजय सिंह को भेज कर ३ लाख रुपये देकर कुसूर माफ कराया। इसी वर्ष में महाराणा ने देवलिया के रावत सावतसिंह से धरयावद का परगना लेकर रावत रघुनाथ सिंह को दिलाया और रावत सावतसिंह से ३ लाख रुपये वसूल किये।

वि० सं० १८५१ ई० सन् १७९४ में महाराणा की बहिन चन्द्रकुंवर का सम्बन्ध जयपुर के महाराज प्रतापसिंह के साथ करार पाया। और शादी के खर्च के लिये ५ लाख मरहठों से कर्ज लिये। परन्तु वि० सं० १८५२ ई० सन् १७९५ में महाराणा की माता बाई जी राज का देहान्त हो गया फिर दूसरे ही वर्ष अति वर्षा होने से पीछोला का बंध बड़ी पाल टूट गया वह पीछा बनाना पड़ा। और वि० सं० १८५२ फाल्गुन वदि ६ ई० सन् १७९६ ता० १९ फरवरी को ईडर वाली महारानी

गुलाबकुंवर के गर्भ से कुँवर अमरसिंह का जन्म हुआ। इस खुशी में यह सब रुपये खर्च हो गये।

आंबाजी ईंगलिया, लकवा, गणेश पन्त आदि मरहठों के अफसरों की आपस की नाइतफाकी से मेवाड़ को बहुत नुकसान पहुँचा इन्होंने मनमाने लाखों रुपये जिसका मौका पड़ा रियाया व सरदारों से वसूल किये। सदरलेन्ड जार्ज टामस मेवाड़ में बारी २ से आकर गये।

वि० सं० १८५७ पौष ई० सन् १८०० में लकवा ने ६ लाख रुपये के एवज जहाजपुर शाहपुर के राजा से छीन कर पीछा महाराणा के खालसे मिलाया थोड़े ही दिनों में इस (लकवा) ने मेवाड़ की प्रजा से २४ लाख वसूल कर जसवंतराव भाऊ को अधिकार दे आप जयपुर चला गया।

वि० सं० १८५८ ई० सन् १८०२ में जसवंतराव होलकर सैन्धिया से हारकर मेवाड़ में आया। सैन्धिया ने उसका पीछा किया तब वह नाथद्वारे आया। और गोस्वामी से ३ लाख रुपये लिये और मंदिर की संपत्ति लुटना चाहा इस पर महाराणा ने देलवाड़े के राज कल्याण और बोल्या एकलिंग दास को भेजकर श्री नाथ जी की मूर्ति को उदयपुर पधराई। बाद घसार में गढ़, मंदिर कोट बनने पर वहां पधराये। वहां से अमन होने पर नाथद्वारे ले गये। जब यह लोग तीनों मूर्तियों को लेकर नाथद्वारे से रवाना हुए कोठारिया का रावत

त्रिजयसिंह आ पहुँचा। वह इनको उनवास तक पहुँचा कर पीछा कोठारिया लोटा। रास्ते में उसको हुलकर की फौज

पृष्ठ १५७

मरहटा का अत्याचार देखकर प्रधान मोजीराम ने यूरोपियन ढग पर सेना रखना तजवीज किया और इसका खर्चा सिरदारों से वसूल करना चाहा। इसपर सिरदारों ने उसे खारिज कर सतीदास को प्रधान बनाया।

लकवा सलूंबर में मर गया और आबाजी का भाई बाले राव शक्तावतों से मिल गया इन्होने देवीचन्द को कैदकर चूडावतों की जागीरें छीन ली। इस समय झाला जालिमसिंह भी कोटे से आकर शक्तावतों से मिल गया। वि० स० १८५८ फाल्गुन ई० सन् १८०२ में बालेराव ने महाराणा के पास आकर, मोजीराम को सौंप देने को कहा, यह मजूर न हुआ तब मरहटी फौज महलों की ओर बढी। मोजीराम ने बालेराव, जामलकर और उदा कुवर को कैद करलिया और चूडावतों ने मरहटी फौज पर हमला कर उसको तीतर बीतर कर गाडरमाले की तरफ भगा दिया। यह सुनकर जालमसिंह झाला सींदर की मदद लेकर बालेराव को छुडाने के लिये चेजा के घाटे (उदयसागर पास) की तरफ बढा पाच दिन तक लडाई हुई रावत अजीतसिंह सारग देवोत सख्त घायल हुआ, फिर महाराणा ने जालमसिंह को बुलालिया, उसने अपनी गुस्ताखी की माफी मागी और उसके लिहाज से बालेराव आदि तीनों को छोड दिया। जालिमसिंह ने फौज खर्च के एवज जहाजपुर का किला और परगनह ले लिया और शक्तावत विष्णुसिंह को वहा अपनी तरफ से हाकिम मुकर्रर किया।

यहा आई। इसस सान्धया आर हुलकर बहुत नाराज

मेवाड़ से रवाना हो गये हुल्कर को लार्ड लेक ने पीछा कर शिकस्त दी। सैन्धिया ने इस वक्त १६ लाख रुपये वसूल किये।

वि० सं० १८५५ ई० सन् १७९९ में महाराणा की राज कुमारी का संबन्ध जोधपुर के महाराजा भीमसिंह के साथ हुआ। वह मर गये। तब जयपुर के महाराजा जगतसिंह के साथ किया गया। इस पर जोधपुर वालों ने उजर किया। और जोधपुर और जयपुर दोनों के दरम्यान बखेड़ा चला। सैन्धिया ने महाराणा को जयपुर का सम्बन्ध छोडने को कहा। महाराणा ने नहीं माना तब वह स्वयं उदयपुर चढ़ आया। घाटे में लड़ाई हुई। तब लाचार होकर माहाराणा को सैंधिया की बात मानना पडा फिर एकलिंग जी के मन्दिर में सैंधिया महाराणा से मिलकर वापिस चला गया।

इस सम्बन्ध के बारे में जयपुर और जोधपुर के दरम्यान परवतसर में लडाई हुई महाराज जोधपुर को भाग कर जोधपुर जाना पडा। जयपुर के महाराजा ने जोधपुर को जा घेरा इस वक्त नवाब अमीरखां जोधपुर से मिल गया। फिर तो जयपुर महाराज को पीछा जयपुर लौटना पड़ा। फिर अमीरखां उदयपुर आया। और कृष्ण कुमारी को ज़हर दिला कर वि० सं० १८६७ श्रावण वदि ५ ई० सन् १८१० ता० २१ जुलाई को मरवा डाला। और पीछा चला गया।

वि० स० १८६६ ई० सन् १८०९ में नवाब अमीर खां उदयपुर आया वह खुद देवारी आया और उसका दामाद चीला के रास्ते आया। थोडी लडाई हुई उसने ११ लाख रुपये मांगे न देवे तो एक लिंग जी के मंदिर को तोडने की धमकी दी। बाद जमशेद खा को वसूल करने के लिये उदयपुर छोडकर वह चला गया। जमशेद खा ने महाराणा के मन्त्रियों से बडी सख्तियां कीं। और बडी लूट मचाई यह जमाना जमशेद गिर्दी नाम से मशहूर है। उस वक्त कहते हैं कि रुपये के सेर कुंगचे (इमली के बीज) मिलते वह पास कर लोग अन्न के एवज खाते थे।

वि० स ० १८६७ ई० सन् १८१० में बापू सधिया मेवाड का सुबेदार होकर आया। वह और जमशेद खां मिल गये। और मेवाड की आमदनी बाटने लगे। इनके आपस में झगडे भी होते रहे परन्तु मेवाड का हालत ऐसा खराब था कि वसूल न हुए। दौलत राव सेंधिया को करके रुपये न पहुंचे तब उसने मेवाड के कुछ सरदार, महाजन और किसानों को कैद किये और अजमेर लेगया। बहुत से कैद में मरे बहुत से ईस्ट इंडिया कम्पनी से अहदनामा होने पर छोड दिये गये।

वि० स० १८६८ ई० सन् १८१२ में भारी कहत पडा। महाराणा ने अपने रणवास का जेवर बेच कर प्रजा का पालन किया।

विदेशी लोग मेवाड़ में लूट मार कर रहे थे इसलिये महाराणा ने कुंवर अमरसिंह को चित्तौड़ गढ़ पर भेज रखा था। नवाब दिलेर खां लुट मार करता हुआ उदयपुर की तरफ आ रहा था, कुँवर ने उसे मार भगाया।

हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल लार्ड हेस्टींग ने मरहटे पींडारियों का दमन कर देश में शान्ति करने के लिये राजाओं के साथ संधियें करना जारी किया। सर चार्ल्समेट काफ दिल्ली में रह कर रियासतों के वकील प्रतिनिधियों से बात करते थे। जयपुर के वकील चतुर्भुज हलदिया ने सर चार्ल्स-मेट काफ को मेवाड़ से मरहठे पठान पींडारियों को निकालने के लिये कहा उन्होंने खुशी से मंजूर किया। फिर वि० सं० १८७४ पौष सुदि ७ ई० सन् १८१८ ता० १३ जनवरी को अंग्रेजी सरकार ओनरेबल ईस्ट इंडिया कम्पनी और महा-राणा भीमसिंह के दरमियान अहदनामा हुआ और मेवाड़ में शान्ति हुई।

नीचे लिखे माफिक अहदनामे में शर्तें हुईं—

पहली शर्त—दोनों राज्यों के बीच, मैत्री सहकारिता तथा स्वार्थ की एक्यता सदा पुश्त दर पुश्त बनी रहेगी और एक के मित्र तथा शत्रु दूसरे के मित्र एवं शत्रु होंगे।

दूसरी शर्त—अंग्रेजी सरकार उदयपुर राज्य और मुल्क की रक्षा करने का इकरार करती है।

तीसरी शर्त–उदयपुर के महाराणा अंग्रेजी सरकार का बड़प्पन स्वीकार करते हुए, सदा उसके अधीन रह कर उसका साथ देंगे और दूसरे राजाओं या रियासतों से कोई सम्बन्ध न रखेंगे।

चौथी शर्त—अंग्रेजी सरकार को जतलाए और स्वीकृति लिये बिना उदयपुर के महाराणा किसी राजा या रियासत से कोई अहद पैमान न करेंगे, पर अपने मित्रों और रिश्तेदारों के साथ उनका मित्रता पूर्ण साधारण पत्र व्यवहार बना रहेगा।

पाँचवी शर्त–उदयपुर के महाराणा किसी पर ज्यादती न करेंगे, और यदि देव योग से किसी से कोई झगड़ा हो जाय तो वह (झगड़ा) मध्यस्थता तथा निर्णय के लिये अंग्रेजी सरकार के सामने पेश किया जायगा।

छठी शर्त—पाँच वर्ष तक वर्तमान उदयपुर राज्य की आय का चतुर्थांश प्रतिवर्ष अंग्रेजी सरकार को खिराज में दिया जायगा और इस अवधि के बाद, हमेशा रुपया पीछे छ आने खिराज के विषय में महाराणा किसी और राज्य से कोई सम्बन्ध न रखेंगे और यदि कोई उस प्रकार का दावा करेगा तो

अंग्रेजी सरकार उसका जवाब देने का इकरार करती है।

सातवीं शर्त—महाराणा का कथन है कि उदयपुर राज्य के बहुत से जिले दूसरों ने अन्याय पूर्वक दबा लिये हैं, और वे उन स्थानों को वापिस दिलाये जाने के लिये दरखास्त करते हैं। ठीक ठीक हाल मालूम न होने से अंग्रेजी सरकार इस बात का पक्का कौल करार करने में असमर्थ है, परन्तु उदयपुर राज्य को फिर से समुन्नत करने का वह सदा ध्यान रखेगी और हर एक मामले का हाल ठीक ठीक दर्याफ्त होजाने पर उक्त देश की पूर्त्ति के लिये जब जब ऐसा करने का मौका आवेगा, तब तब वह भरसक कोशिश करेगी इस प्रकार अंग्रेजी सरकार की मदद से उदयपुर की रियासत को जो जो स्थान वापिस मिलेंगे उनकी आमदनी में से रुपये में छः छः आने वह हमेशा अंग्रेजी सरकार को देती रहेगी।

आठवीं शर्त—आवश्यकता पड़ने पर रियासत उदयपुर को अपनी सामर्थ्य के अनुसार अंग्रेजी सरकार को सेना देनी होगी।

नवमी शर्त—उदयपुर के महाराणा हमेशा अपने राज्य के खुद

मुख्तार रईस रहेंगे और उनके राज्य में अंग्रेजी हकूमत का दखल न होगा।

दशवीं शर्त—दश शर्तों की यह संधि, जिस पर मि० चार्ल्स थियोफिलस मेटकाफ तथा ठाकुर अजीतसिंह बहादुर ने दस्तखत और मुहर की है, दिल्ली में हुई है। श्रीमान् गवर्नर जनरल और महाराणा भीमसिंह इसे स्वीकार कर आज की तारीख से एक महीने के भीतर एक दूसरे को नाप देंगे।

अहदनामा होने पर कप्तान टाड अंग्रेजी सरकार की तरफ से पोलीटिकल एजेन्ट मुकर्रर होकर उदयपुर आये उन्होंने देश में शान्ति स्थापन की। मेवाड के निर्देशों में गई हुई प्रजा को बुलाकर स्थापन कर देश का आबाद किया। सरदारों ने खालसे के गांव उवा लिये थे पीछे लुटाये। भाला जालिमसिंह से जहाजपुर का परगना पीछा लिया और मेवाड के जागीरदारों और महाराणा के दमियान कोलनामा कर देश में व्यापारियों का चोर, डकैती, लुटेर चाकरी सबका प्रबन्ध किया मेवाड की आमदनी जितपुरा घट कर टाड साहब के आने के समय एक कमरा का कुल ५० हजार रुपये महाराणा का हुकूमत गिरवे के अन्दर रह गई उसकी पीछे तरक्की कर लगभग ८ लाख पहुँचाई।

मेरवाडे का इलाका अंग्रेजी सरकार के अजमेर जिले के

ताल्लुक का हिस्सा, मेवाड़ के ३ परगने और जोधपुर के २ परगनों में तकसीम था। सरकार ने नसीराबाद में छावनी कायम कर मेरवाड़े का प्रबंध किया, मेवाड़ से जमीयतें फौज भेजी गईं मेवाड़ के हिस्से में टाड साहब ने भीमगढ़, टाडगढ़ आदि बना कर प्रबंध किया। मेरवाड़ा बेटालियन भरती किया। महाराना ने इस खर्चे में १६ हजार कलदार रुपये देना मंजूर किया। टाड साहब के जाने पर कप्तान काब साहब आये उन्होंने मेवाड़ के दक्षिणी इलाके मगरा, भोमट का प्रबंध कर उधर शान्ति स्थापित की। मेरवाड़े का उत्तम प्रबंध करने के लिये सरकार ने मेवाड़ के तीनों परगने भी कुछ समय के लिये प्रबंध वास्ते मांगे वह दिये गये।

वि० सं० १८७५ ई० सन् १८१८ में हैजे की बीमारी से बड़े कुंवर अमरसिंह का देहान्त हो गया इससे महाराणा व सारी प्रजा को बड़ा दुख हुआ।

शाहपुरे के राजा अमरसिंह ने अमरगढ़ के रावत रणसिंह को शाहपुरे बुलाकर धोखे से मार डाला। महाराणा ने उसके गांव जप्त कर रणसिंह के बेटे को दिलवाये।

अंग्रेज सरकार के साथ अहदनामा होने पर मेवाड़ का खिराज आमदनी में से छः आने लिया जाता था। वि० सं० १८८३ ई० सन् १८२६ में सर चार्ल्स मेटकाफ उदयपुर आये और ३ लाख सालियाना मुकर्रर हुआ।

रतलाम के राजा पर्वतसिंह का पुत्र बलवतसिंह सलूम्बर के रावत का दोहिता था उसके लिये वहा वालों ने यह बात मशहूर करदी कि यह असली नहीं है। इससे उसकी हकदारी में बखेडा उत्पन्न हुआ वह उदयपुर आया। वि० स० १८७८ ई० सन् १८२१ में जनरल सर जान मालकम उदयपुर आये। तब महाराणा ने उनको बलवन्तसिंह की सिफारिश की। उन्होंने पीछे निवेदन किया कि इसके असली होने में हमको सन्देह है। अगर इसकी आप अपने यहा शादी कर देवें तो हमारा शक दूर हो जाय, इस पर चैत्र सुदि ६ ता० ११ अप्रेल को महाराणा ने बलवन्तसिंह की शादी बागोर महाराज शिवदान सिंह की लडकी के साथ करदी। इससे मालकम साहब का शक दूर हो गया। और वि० स० १८८२ ई० सन् १८२५ में पर्वतसिंह के मरने पर बलवन्तसिंह रतलाम की गद्दी पर बैठाया गया।

इन्होंने महलो में तालाब के किनारे भीम विलास महल बनवाया। और इनकी छोटी राना बीकानेरी ने पिछोले के पश्चिमी घाट पर भीम पद्मेश्वर महादेव का शिखरबन्द मदिर बनवाया। इनके समय में पडारण रामप्यारी ने बाग महल, राम नारायण जी का विष्णु शिखरबन्द मन्दिर बनवाया इसी मकान में कप्तान टाड साहब आये तब ठहरे थे। यहा आज कल मेघजोन है। कुँवर जवानसिंह के लिये कारोई की हवेली की जगह कुँवरपदा के महल गणेशघाटी पर बनवाये।

वि० सं० १८८५ कार्तिक कृष्णा ११ को महाराज कुँवार जवानसिंह के कुँवर हुआ । महाराणा को बड़ी खुशी हुई बहुत इनाम इकराम दिया परन्तु चैत्र सुदि १ को पीछा देहान्त हो गया । इसका सदमा महाराणा को इतना गुजरा कि इसी रंज से उनका वि० सं० १८८५ चैत्र सुदि १४ ई० सन् १८२८ ता० ३१ मार्च को देहान्त हो गया ।

इन महाराणा के कुंवर अमरसिंह, उम्मेदसिंह, पृथ्वी-सिंह, जवानसिंह आदि असल व पासवान्ये कुल ९५ के करीब सन्तान हुए थे ।

इन्होंने चूंड़ावत अजीतसिंह को जागीर दी । यही अजीतसिंह सरकार के साथ मेवाड़ का अहदनामा करने को दिल्ली सर चार्ल्स मेटकाफ के पास गया था ।

इनकी बहिन चंद कुंवर की सगाई जयपुर के महाराज प्रतापसिंह के साथ हुई परन्तु उनका देहान्त होगया । इस पर चन्द कुँवर ने अपना सारा-शेष जीवन शादी न कर वैराग्य में ही निकाला । महाराणा इसका बड़ा आदर करते थे और इसके नाम पर चांदोड़ी रुपया चलाया ।

शाहपुर के राजा अमरसिंह को डाकुओं को गिरफ्तार करने के इनाम में राजाधिराज का खिताब दिया ।

७१ जवानसिंह

यह महाराणा वि० सं० १८८५ चैत्र सुदि १५ ई० सन

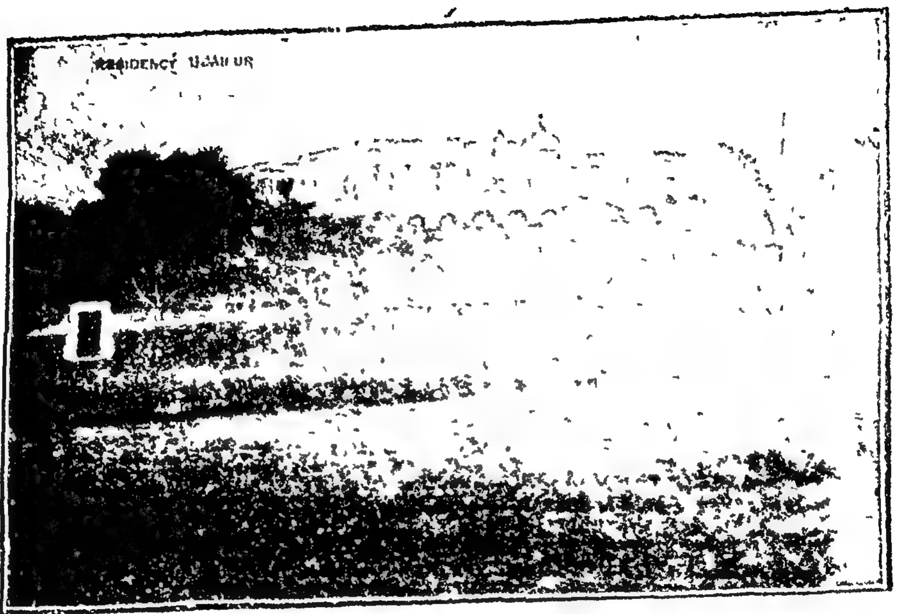
१८२८ ता० ३१ मार्च को गद्दी बैठे। इनका जन्म वि० स १८५७ मार्गशीर्ष सुदि ३ ई० सन् १८०० ता० १६ नवम्बर को हुआ।

इनके समय में नाथद्वारे के गोस्वामी ने अपने वकील अजमेर रेजीडेंट के पास भेजे। और मेवाड से स्वतन्त्र होना चाहा परन्तु सरकार ने वहां से उनको रुखसत देदी। और कहा कि तुमको जो कुछ कहना हो वह महाराणा साहब की मारफत कहो।

हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल लार्ड विलियम बेंटिक वि० स० १८८८ ई० सन् १८३२ में अजमेर आये और महाराणा से मिलने की ख्वाहिस की। महाराणा माघ वदि ५ ता० २२ जनवरी को यहा से रवाना होकर माघ सुदि २ को अजमेर पहुँचे। महाराणा की सरहद खारी नदी बरल तक पोलीटीकल अफसर महाराणा की पेशवाई को आये। और अजमेर से दो कोस तक रेजीडेंट राजपूताना व दूसरे सात अंग्रेज अफसर पेशवाई को आये। तोपों की सलामी वगैरह हुई महाराणा लार्ड विलियम बेंटिक से मिलने गये, लार्ड विलियम बेंटिक महाराणा से मिलने आये दुतरफा रुखसताने का दस्तूर हाथी, घोडे, किश्तिया जेवर पेश हुआ महाराणा ने शाहपुरा पटे फुलिया पर सरकारी पुलिस बैठ गई उसको उठाने के लिये कहा—लाट साहब ने मजूर कर पुलिस उठा दी, दूसरा अपने गया यात्रा जाने के लिये रास्ते में प्रबध कराने को कहा यह भी लाट साहब ने मजूर किया। और तीसरा जावद, नीमच

आदि जिले मरहटों व दूसरों के कब्जे में गये उनको लौटाने को कहा—इस पर लाट साहब ने कहा कि दर्याफ्त कर मौका आवेगा तब सरकार कोशिश करेगी महाराणा ने इस वक्त शाहपुरा के राजाधिराज माधोसिंह को फुलिया पीछा दिलाया।

वि० सं० १८६० प्रथम भाद्रपद सुदि ३ ई० सन् १८३३ ता० १८ अगस्त को महाराणा अपने पिता का गया श्राद्ध करने यहां से १० हजार मनुष्यों के साथ रवाना हुए। मथुरा, वृन्दावन, प्रयाग, काशी, अयोध्या होते हुए गया पहुँचे। अयोध्या से लखनऊ के नवाब ने बड़ी खातिर की। गया में श्राद्ध कर अपने गुरु को हाथी, घोड़े, वस्त्र, रत्न, आभूषण, नकद प्रदान कर प्रसन्न किया। गया गुरु यात्रियों के पास से सख्ती करके भेंट वसूल करते थे। महाराणा ने गुरु से इकरार कराया कि मेवाड़ का यात्री अपनी श्रद्धा से भेंट करें वह लेवे और उससे सख्ती नहीं करेंगे। गया जी से लौटते हुए महाराणा रीवां गये वहां महाराजा ने बड़ी खातरी की। महाराणा की कुंवरपदे में शादी रीवां हुई थी उनका देहान्त हो गया। महाराजा ने यह सम्बन्ध जारी रखने के लिये फिर शादी कराना चाहा परन्तु महाराणा इन्कार हो गये। इस पर खानगी के वक्त महाराजा ड्योढ़ी पर आ बैठे। तब विशेष आग्रह करने व रास्ता रोकने पर महाराणा ने मजबूर होकर महाराजा जयसिंह



कपतान काब साहब की बनाई हुई रेजीडेन्सी जिसको
महाराणा जवानसिंह जी ने खरीदी

के छोटे कुंवर लक्ष्मणसिंह की पुत्री से विवाह किया[1]। राजा से महाराणा कोटे आये। महाराव ने बड़ी खातिर की। महाराणा ने वहां झालावाड़ के राजराणा माधोसिंह के पुत्र राजराणा मदनसिंह की मातमपुरसी मेवाड़ के सरदारों के माफिक कर मदनसिंह को तलवार बंधाई। वहां से भसरोड़, धगू होते हुए उदयपुर आये।

गवर्नमेंट ने मेवाड़ के तीनों परगने ८ वर्ष के लिये फिर अपने इन्तजाम में रखना चाहा और इकरारनामह होकर ८ वर्ष की म्याद बढ़ाई गई।

भोमट के भोमिया महाराणा के विरुद्ध थे। उनको पीछी तसल्ली करने के लिये महाराणा ने भोमट में होकर आबू जाना निश्चय कर वि० सं० १८९३ फाल्गुन वदि ३ ई० सन् १८३७ ता० २३ फरवरी को रवाना हुए रास्ते में मालवा के घोरे मुकाम पर जूड़ा और ओगणा के भोमिया हाजिर हुए। आबू की यात्रा कर महाराणा अंबा भवानी के दर्शनों को गये। वहां दाता का थाना-जिसके जाड़े में अंबा भवानी का मंदिर है-आया। दरोदर के मुकाम पर सिरोही के राव शिवसिंह

---

१ महाराणा ने वि० सं० १८८८ में महारावत की लड़की से विवाह किया इस रानी का देहान्त हो गया महारावत ने यह रिश्ता ताजा रखने के लिये मजबूर कर यह शादी कराई।

आया। और कदीमी दस्तूर के मुवाफिक महाराणा के नजर न्योछावर कर अपनी बैठक पर मेवाड़ के उमरावों ऊपर बैठा। महाराणा ने उसको हाथी सरपाव देकर रुखसत किया।

वि० सं० १८०४ कार्तिक कृष्णा ११ ई० सन् १८३७ ता० २५ अक्टूबर इंगलिस्तान की महारानी विक्टोरिया के तख्त-नशीन होने की महाराणा ने खुशी मनाई।

नेपाल के महाराजाधिराज राजेन्द्र विक्रमशाह ने अपने पूर्वजों की प्राचीन राजधानी के रीति रिवाज आदि देखने के लिये अपने प्रतिष्ठित पुरुष व स्त्रियों को हाथी आदि तुहफे देकर उदयपुर भेजा। इनके यहां पहुँचने के थोड़े ही दिन बाद वि० सं० १८९५ भाद्रपद सुदि १० ई० सन् १८३८ ता० ३० अगस्त को महाराणा का देहान्त हो गया।

इन महाराणा ने पिछोला के तट पर जल निवास महल और बांकी की पहाड़ी में मोर दांते पर महाकाली जी का मन्दिर बनवाया। जवान स्वरूपेश्वर महादेव का मन्दिर अपनी राणी बाघेली के नाम पर कराया जिसकी प्रतिष्ठा महाराणा स्वरूपसिंह के समय में हुई।

इन महाराणा ने आसींद के रावत दुल्हसिंह को उमराव बनाया।

७२ सरदारसिंह

महाराणा जवानसिंह के निःसन्तान देहान्त होने पर

सरदार मुसाहबों ने सलाह कर वि० सं० १८९५ भाद्रपद सुदि १५ ई० सन् १८३८ ता० ४ सितम्बर को बागोर के महाराज सरदारसिंह को गद्दी बिठाया। और बागोर पर उनके दूसरे भाई शेरसिंह को मुकर्रर किया। इनका जन्म वि० सं० १८५५ भाद्रपद वदि ३ ई० सन् १७९८ ता० २९ अगस्त को हुआ।

भोमट के प्रबन्ध के लिये महाराणा जवानसिंह के समय में खेरवाडे में भीलकोर पल्टन भर्ती करना तजवीज हुआ परन्तु उस वक्त अमल में न आया। वि० सं० १८९६ में भोमट के भोमियों और गरासियों ने सिर उठाया और राज्य के थानों पर हमला कर सिपाहियों को मार डाला तब महाराणा ने खेरवाडे में सरकार की मार्फत अंग्रेजी अफसरों की तहवील में एक भीलकोर पल्टन भर्ती कराई। और उसके खर्च का ५० हजार सालियाना देना मंजूर किया। और इस खर्चे के एवज मगरा, मेरवाडा के तीनों मेवाड के परगनों का आमदनी में से देना तजवीज हुआ। गरज मेवाड की आमद में से १६ हजार तो पहले मेरवाडे बटालियन के खर्चे में और ५० हजार खेरवाडा की भीलकोर में देना तजवीज हुआ। और इससे बचे वह आमद सरकार मेवाड राज्य को देवे। यह भी तय पाई कि दशहरे पर भीलकोर उदयपुर महाराणा की सवारी में आवे महाराणा स्वरूप सिंह के शुरू अहद तक यह अमल रहा।

वि० सं० १८९६ ई० सन १८३९ में बीकानेर के महाराजा

रतनसिंह नाथद्वारे दर्शनों को आये। महाराणा भी नाथद्वारे गये। और वहां से दोनों रईस उदयपुर आये और महाराणा ने अपनी राजकुमारी का विवाह बीकानेर महाराज के कुंवर सरदारसिंह के साथ कर दिया।

इसी वर्ष के माघ महीने में महाराणा अपने पिता का गया श्राद्ध करने के लिये माघ वदि १३ ई० स० १८४० ता० १ फरवरी को रवाना हुए। पुष्कर, गया, वृन्दावन, प्रयाग, काशी आदि स्थानों में होते हुए गया पहुँचे। वि० सं० १८९७ जेठ वदि ९ ता० २५ मई को वहां पहुंच कर विधि पूर्वक श्राद्ध कर वहां से लौट कर बीकानेर गये। वहां महाराजा रतनसिंह की कुंवरी के साथ विवाह कर मार्गशीर्ष वदि ८ ता० १६ नवम्बर को उदयपुर आये। वृन्दावन में जयसलमेर के रावल गजसिंह और अपनी भुवा रूपकुंवरी से मिले।

महाराणा के पुत्र न था इसलिये अपने तीसरे भाई स्वरूपसिंह बागोर से वि० सं० १८९८ आश्विन सुदि ९ ई० सन् १८४१ ता० २३ अक्टूबर को गोद लिया। और वि० सं० १८९९ अषाढ़ शुक्ल ६ ई० सन् १८४२ ता० १४ जुलाई को महाराणा का देहान्त हो गया।

इन महाराणा की महारानी बीकानेर ने पिछोला के पश्चिमी तट पर सपदार स्वरूप श्यामविहारी जी का मन्दिर बनाया। महाराणा स्वरूपसिंह के समय इसकी प्रतिष्ठा हुई।

७३ स्वरूप सिंह

यह महाराणा वि० सं० १८९९ आषाढ सुदि ८ ई० सन् १८४२ ता० १५ जुलाई को गद्दी विराजे। इनका जन्म वि० सं० १८७१ पौष वदि १२ ई० सन् १८१५ ता० ८ जनवरी को हुआ।

इन महाराणा ने गद्दी बैठते ही राज्य का प्रबंध कर आमदनी बढ़ाई। और धीरे २ सब कर्जा २२ लाख अदा कर जेवर जवाहिरात बनाये, लाखों रुपये पुण्य किये। कई स्वर्ण तुलादान किये। और भी कई तरह के बड़े २ पुण्य कार्य किये, और अपने देहान्त के समय ६० लाख खजाने में छोड़ गये। मेवाड़ की गिरी हुई दशा से उन्नति करने वाले यही थे। सरकारी खिराज भी २ लाख कल्दार नियत हुआ।

इन्होंने नये कोलनामे कर सरदारों की छुटद चाकरी का सुधार किया। सर्कश सरदारों को सजादी। और वि० सं० १९०२ ई० सन् १८४५ में मद्य पीना छोड़ा और साथ ही मेवाड़ के शिशोदियों से भी छुड़ाया।

महाराणा भीमसिंह के समय में शक्तावतों ने डोडिया से लावा छीन लिया। इन्होंने वि० सं० १९०४ में शक्तावतों से छीन कर पीछा डोडिया जोरावरसिंह को दिया। और रावत वख्तसिंह को गुजारे के लिये कोटयारी गांव दिया।

इन्होंने वि० सं० १९०६ ई० सन् १८४९ में अपने नाम पर स्वरूपशाही सिक्का चलाया। इसके एक तरफ चित्रकूट

उदयपुर और दूसरी तरफ दोस्ती लंधन लिखा हुआ था और इसके सत्रह आने चलने लगे।

वि० सं० १६०७ ई० सन् १८५० में मगरा जिले में बीलख की पाल के भीलों ने सिर उठाया, उनको फौज भेज कर सजा दी। इसी साल में चित्तौड़ मांडलगढ़ का दौरा किया।

महाराणा जवानसिंह ने आराज्या अपने मामा वरसोड़े के चावड़ा कुबेरसिंह और जालम सिंह को वि० सं० १८६१ ई० सन् १८३४ में दिया। परन्तु पूरावतों ने कब्जा कर लिया। वि० सं० १६०६ ई० सन् १८५२ में महाराणा ने फौज भेजकर आराज्या चावड़ों को दिलाया।

वि० सं० १६०५ ई० सन् १८४८ में सतारा के राजा शाहु प्रताप ने शिवानन्द शास्त्री को महाराणा के पास भेजा और उसके सन्तान नहीं थी इसलिये शिवरती महाराज दलसिंह के पुत्र गज सिंह को गोद लेना चाहा परन्तु महाराणा ने मंजूर नहीं किया।

वि० सं० १६०८ ई० सन् १८५१ में जहाजपुर जिले में लुहारी के मीनों ने सिर उठाया सरकार ने भी महाराणा को प्रबंध करने के लिये लिखा। महाराणा ने फोज भेज कर उनको सजा दी। उधर जयपुर और टोंक की तरफ से भी फौजें आई। राजपूताने के एजेन्ट गवर्नर जनरल सरहेनरी

लारेन्स, मेवाड़ के पोलीटिकल एजेंट जार्ज लारेन्स और हाड़ौती के पोलीटिकल एजेंट भी गये।

वि० सं० १९१२ ई० सन १८५५ में डूंगरपुर का रावल उदयसिंह उदयपुर आया। महाराणा ने [illegible] दस्तूर माफिक उसका स्वागत किया। उसने भी [illegible] दस्तूर माफिक महाराणा के नज़र न्योछावर की और अपनी [illegible] बैठक पर मेवाड़ के सब उमराव के ऊपर बैठा।

वि० सं० १९१४ ई० सन १८५७ में हिन्दुस्तान में बंगाल की फौज ने बड़ा भारी गदर मचाया। नीमच की छावनी की फौज ने भी बगावत कर अंग्रेजों के घर जला दिये। महाराणा ने एजेंट कप्तान शावर्स की मदद पर फौज भेजी और जितने ही यहां से बचे हुए अंग्रेज थे उन्हें सब लोगों को हिफाज़त के साथ उदयपुर बुलाकर [illegible] रखे, जहां महाराणा [illegible] भी पूरी हिफाज़त देते रहे। नीमच का हाकिम भी बागी हो गया। इस पर एजेंट कप्तान शावर्स साहब ने मेवाड़ की फौज से [illegible] निम्बाहेड़ा फतह कर मेवाड़ के सुपुर्द कर दिया। और [illegible] मेवाड़ के [illegible] में [illegible] पर यह [illegible] पोलिटिकल एजेंटों ने [illegible] नयार दौड़ [illegible] दिया दिया। इस [illegible] मदद [illegible] की एवज़ [illegible] दिये।

परन्तु मेवाड़ को कुछ न मिला। महाराणा ने केवल गवर्नमेंट को ही मदद नहीं दी बल्कि कोटा की फौज बागी हो कर वहां के पोलिटिकल एजेंट को मार डाला। उस वक्त महाराव ने महाराणा से मदद मांगी। महाराणा ने उसी वक्त फौज भेज कर महाराव की मदद की। और भी रईसों को गवर्नमेंट की मदद करने की सलाह दी। जो मावर साहबने अपनी पुस्तक मिसांगचेस्टर ओपदी इन्डियन म्युटिनी में लिखा है।

मीनों ने सिर उठाया उस वक्त उनको सजा देकर देवली में छावनी कायम कर मेवाड़ में भी थाने बिठाये गये। परन्तु वि० सं० १९१६ ई० सन् १८६० में मीनों ने फिर सिर उठाया। उस पर महाराणा ने महाराज चंदसिंह को फौज लेकर भेजा, उसने मीनों के गाडोली, लुहारी आदि कई गांव लूट लिये। और कितने ही मीनों को तोप से उड़वा दिये। इस प्रकार सख्त सजा देकर सीधे किये।

सरकार हिन्द ने अंग्रेजी इलाके में सती होना व समाध लेना बंद किया। और महाराणा को भी बंद करने के लिये लिखा, महाराणा ने बहुत अर्से तक तो टाला टूली की परन्तु बाद इश्तिहार इजरा कर मेवाड़ में भी सती होना बन्द कर दिया।

महाराणा को वि० सं० १९०८ से ही पैरों में तकलीफ रहने लगी फिर धीरे २ बढ़ती गई, इस तकलीफ के सबब

यह वि० स० १६१२ के वर्ष से विशेषतर गोवर्द्धन विलास रहने लगे। वहा का जल-वायु इनको वडा लाभदायक हुआ। आखिर वि० स० १६१८ कार्तिक सुदि १५ ई० सन् १८६१ ता० १७ नवम्बर को गोवर्द्धन विलास में ही इनका देहान्त हो गया। इनके साथ इनकी पासवान एजा बाई सती हुई यह आखिर सती मेवाड के राजा के साथ हुई।

इनके कोई सन्तान नहीं थी। इसलिये इन्हों ने वि० स० १६१८ ई० सन् १८६१ को दशहरे के दिन अपने सामने ही बागौर महाराज शम्भूसिंह को—जिनका हक इन्होंने पहले खारिज कर दिया था उन्हीं को–गोद लिया। और बागौर पर इनके काका समरतसिंह को मुकर्रर किया। गोवर्द्धन विलास में इनका देहान्त हुआ वहा से इनकी आखिरी सवारी किशनपोल के रास्ते जगदीश चौक में होकर बडे बाज़ार होकर दिल्ली दरवाज़े के रास्ते महासत्या की की गई।

इन महाराणा ने गोवर्द्धन विलास म महल तालाब गोवर्द्धन सागर शिकार बाडी बनाया। उदयपुर महलों में अखाडा के महल, स्वरूप विलास, दरी महल, पुश्प महल, जगत शिरोमणि जी का मंदिर व बडे दूसरे मंदिर बनवाये। ब्राह्मणों की हरेक ज्ञाति को प्रति मास भोजन कराने का–जिसको चोरासी कहते हैं, प्रबन्ध किया। प्रति दिन शाम को मुट्ठी भर

अशर्फियां गुप्त दान करते थे। इन्होंने स्वयं तो कई सोने व चांदी के तुलादान किये परन्तु अपने पूजन के शिव वाणनाथ जी को रत्नों का तुलादान कराया। एकलिंग जी में लाखों रुपेयों का जेवर भेंट किया; राज्य की आमदनी बढ़ाकर लाखों रुपैये का कर्ज उतार और जेवर बनाया।

इन्हों ने वि० सं० १९०७ में अपनी दोनों बहिनों फूल कुँवर और सौभाग्य कुँवर की शादी कोटा के महाराव रामसिंह और रीवां के महाराज कुमार रघुराजसिंह के साथ की। और इन दोनों से महाराणा दूसरे अमरसिंह के मुताबिक इकरार लिखाये कि इनसे सन्तान होवे वह गद्दी बैठे आदि।

७४ शम्भूसिंह

यह महाराणा वि० सं० १९१८ कार्तिक सुदि १५ ई० सन् १८६१ ता० १७ नवम्बर को गद्दी विराजे। इनका जन्म वि० सं० १९०४ पौष सुदि १ ई० सन् १८४७ ता० २२ दिसम्बर को हुआ। यह बागोर महाराज शेरसिंह के बड़े लड़के शार्दूल सिंह के लड़के थे। शार्दूलसिंह पर महाराणा स्वरूपसिंह को विष देने का दोष आया और वह कैद किया गया। और इनका जन्म होने के ८ दिन बाद ही कैद में मर गया। तीन प्रसिद्ध पुरुष-जिन्होंने यह षडयंत्र रचा उनको महाराणा ने कठोर दंड दिया। परन्तु शार्दूलसिंह निर्दोष थे। यह बात महाराणा को उस समय मालूम नहीं हुई। इससे महाराणा ने शार्दूलसिंह की औलाद का गद्दी से हक खारिज कर दिया।

जब महाराणा को मालूम हुआ कि शार्दूलसिंह निर्दोष था महाराणा ने उसी के पुत्र बागोर महाराज शम्भूसिंह को गोद लिया। और यह मेवाड के महाराणा हुए।

इनकी बाल्यावस्था के कारण राज्य का प्रबंध कौंसिल के आधीन रहा। महाराणा स्वरूपसिंह के समय वि० स० १९१३ ई० सन् १८५७ में आमेट का रावत पृथ्वीसिंह निसन्तान मर गया। महाराणा ने चमाला के रावत जालमसिंह के दूसरे लडके अमरसिंह को आमेट पर मजूर कर लिया परन्तु हकदार जिलाला का चत्रसिह था। वह २० हजार राजपूतों को लेकर आमेट पर चढ आया। मेवाड के आधे सरदार अमरसिंह की तरफ आधे देवगढ वगैरह चत्रसिंह की तरफ हो गये लडाई होकर चत्रसिंह ने आमेट पर कब्जा कर लिया सलूंबर वालों ने अमरसिंह का पक्ष लिया। अमरसिंह सलूंबर में ही रहने लगा। सलूंबर रावत केशरीसिंह के नंद जोधसिंह की मातमपुरसी के लिये वि० स० १९२३ में महाराणा मातमपुरसी के लिये सलूंबर गये। वहां अमरसिंह की भी मातमपुरसी कर उसको मेजे का नया ठिकाना देकर उमराव बनाया। और आमेट के बराबर इज्जत दी।

महाराणा स्वरूपसिंह के समय में वि० स० १९०४ में सलूंबर का रावत पद्मसिंह मर गया। उसके लडके केशरीसिंह ने उज्र किया कि महाराणा मेरी मातमपुरसी करने गुढ

सलूंबर आवें। महाराणा ने कहा-युवराज के आने का कायदा है। और युवराज नहीं होने की हालत में शिवरती महाराज दालसिंह को व वेदले राव को भेजूंगा। परन्तु उसने मंजूर नहीं किया। और बखेड़ा करता ही रहा। इन महाराणा के गद्दी बैठने के बाद केशरीसिंह मर गया। उसने बगैर मंजूरी बंबारे से जोधसिंह को रख लिया। महाराणा सलूंबर जाकर उसकी मातमपुरसी कर लाये। इस वक्त भदेसर के रावत भूपालसिंह ने हकदारी का दावा किया। आबू तक मामला चलकर हुकुम हुआ कि इस वक्त तो जोधसिंह कायम रहे। और उसके औलाद न होवे तो भदेसर का हक्क रहे।

वि० सं० १९२५ ई० सन् १८६८ में घोरकाल पड़ा वर्षा न होने से लाखों आदमी व मवेशी मर गये महाराणा ने लाखों रुपया खर्च कर प्रजा का पालन किया। इसके दूसरे ही वर्ष सख्त हैजे की बीमारी हुई जिससे लाखों आदमी मर गये।

वि० सं० १९२७ ई० सन् १८७० मे हिन्दुस्तान के वायसराय लार्ड मेयो अजमेर आये। और दरबार किया महाराणा भी उनसे मिलने गये। महाराणा जवानसिंह के समान ही इनकी पेशवाई सलामी आदि खातिर हुई। लार्ड मेयो ने दरबार किया उसमें महाराणा भी गये शाहपुरेका राजाधिराज, मेवाड़ का उमराव व जागीरदार हैं और उसको सरकार से फूलिया का अलग पट्टा है। वहां का राजाधिराज लछमनसिंह

मर गया। तब नाहरसिंह मुकर्रर हुआ। उसकी मातमपुरसी महाराणा ने इसी सफर में रायला के मुकाम पर की। और महाराणा के साथ अजमेर आया। वहा दरबार में फूलिये की हैसियत से अजमेर के सरदारों के शरीक बैठा और महाराणा दरबार में गये उस वक्त उनकी ताजीम नहीं की और अजमेर से विगैर रुखसत लिये शाहपुरे चलागया। महाराणा ने यहीं से काछोला की चौरासी (पट्टा) पर खालसा भेज दिया और कुछ अर्से बाद जुर्माना लेकर बरखास्त किया। इस दरबार में जोधपुर महाराज तख्त सिंह ने उज्र किया कि मैं महाराणा के नीचे नहीं बैठू। इस पर लाट साहब ने २ घंटे तक दरबार में आने की देर कर उनको समझाया। और वह न समझे तब जोधपुर चले जाने का हुक्म दिया। उस दिन रात के वक्त महाराणा लेटे हुए थे कि अचानक जोधपुर महाराज तख्तसिंह महाराणा के डेरे पर आये। और कहा कि आपके नीचे बैठने का मुझे कुछ भी उज्र नहीं है। परन्तु फारन सिकन्दर के नीचे नहीं बैठता। अजमेर में महाराणा दूसरे रईसों से मिले और पुष्कर गये। वहा स्नान कर चांदी का तुलादान किया। वहा से लौट कर नसीराबाद आये। वहा झालावाड के राजराणा पृथ्वीसिंह को अपनी गद्दी पर बैठने की इज्जत दी। गवर्नमेन्ट ने झालावाड की अलग रियासत बनाकर राजराणा को रईस बनाया परन्तु दूसरे रईस उसको नहीं मानते थे जब महाराणा ने उसको गद्दी पर बैठने की इज्जत दी तब दूसरे राजा लोग भी उसे रईस मानने लगे।

इन महाराणा के प्रबंध से खुश होकर सरकार ने इनको जी० सी० एस० आई बनाया। इन्होंने प्रजा के आराम के लिये सड़कें बनाईं। अदालते, पाठशाला, अस्पताल कायम कर उन्नति की।

वि० सं० १९३१ आसोज वदि १३ ई० सन् १८७४ ता० ८ अक्टूबर का इनका निःसन्तान देहान्त हुआ। इन्होंने उदयपुर मे शम्भू निवास महल बनाया जिसमें कई वायसराय, व शहजादे, रईस उदयपुर आने के समय रहे। मेयो कालेज अजमेर में उदयपुर हाउस बनाया। नाहर मगरे में इन्द्रबाग शंभूप्रकाश बनाया। इन्होंने एक स्वर्ण का और दो चांदी के तुलादान किये।

७५ सज्जन सिंह

महाराणा शम्भूसिंह का निःसन्तान देहान्त होने पर सब ने मिल कर सोन्यारणे महाराज शक्तिसिंह (यह महाराणा शंभूसिंह के पिता शार्दूलसिंह का तीसरा भाई था और शंभूसिंह ने इसकी हक तलफी कर इसके छोटे भाई सोवनसिंह को बागौर पर मुकर्रर किया) के पुत्र सज्जन सिंह को वि० सं० १९३१ आश्विन वदि १३ ई० सन् १८७४ ता० ८ अक्टूबर को गद्दी बिठाया। इनका जन्म वि० सं० १९१६ अषाढ़ सुदि ९ ई० सन् १८५९ ता० ८ जुलाई को हुआ।

इनकी बाल्यावस्था के कारण राज्य प्रबंध कुछ समय तक कौंसिल के अधीन रहा। बागोर के महाराज शम्भूसिंह को महाराणा स्वरूप सिंह ने वि० स० १९१८ में अपने गोद लिया। और बागोर पर शम्भूसिंह के काका समरथ सिंह को मुकर्रर किया। वि० स० १९२६ में हैजे की बीमारी से समरथ सिंह मर गया। उस वक्त सगत सिंह का हक था। परन्तु महाराणा शम्भूसिंह ने उसके छोटे भाई सोवनसिंह को बागोर पर मुकर्रर किया। महाराणा शम्भूसिंह के अन्त समय में बीमारी हुई उसका सन्देह सोवनसिंह की तरफ से जादू टोना कराने का हुआ। इस पर महाराणा शम्भूसिंह ने सोवनसिंह को हुक्म दे दिया कि उदयपुर से बागोर चले जाओ। वह बागोर न गया। और कुशलबाग में जा रहा। और महाराणा का देहान्त हो गया। सज्जनसिंह को गद्दी बिठाने पर सोवनसिंह ने गद्दी का दावा किया। और समझाने पर भी न समझा तब फिर बागोर जाने का हुकुम दिया। और सोन्यारणे के महाराज शक्तिसिंह को ६५ हजार रुपये सालियाना मिलने का हुकुम होकर बागोर की हवेली में रहने का हुकुम हुआ।

महाराज सोवनसिंह बागोर जाने पर भी झगड़े करने में बाज न आया। तब फौज भेजकर कैद करवा मंगवाया। और बनारस भेज दिया गया। पांच वर्ष तक बनारस में रहा बाद कुसूर माफ कर महाराणा ने उदयपुर बुलाकर तेरवों की सराय में रखा। और गुजारे के लिये मनया का खेड़ा आदि

१० हजार रुपये उसको जिन्दगी तक के लिये कर दिये। और बागौर उसको बनारस भेजने के समय ही खालसे करली गई। पांच वर्ष बाद वि० सं० १९३७ में बागौर की हवेली पर महाराज शक्तिसिंह ने महाराणा की पधरावणी की उस वक्त शक्तिसिंह को बागौर का पच दिया और ९५ मिलते वह बन्द कर दिये।

वि० सं० १९३२ ई० सन् १८७५ में अति वर्षा हुई उस समय पिछोला तालाब का बन्ध बड़ी पाल कुछ इंच खाली रह गई। महाराणा ने खुद खड़ा रह कर ऊरजणखुरा से बन्ध करवाया। और पानी का निकास करा तालाब के बन्ध को बचाया। उदयसागर की पाल पर से तालाब के पानी की झलक गई, बड़ी के तालाब की पाल पर से पानी गया, जयसमुद्र की पाल सिर्फ ६ फुट ही खाली रही। तालाब के अन्दर महलों में ४ फुट पानी जगनिवास में भर गया। इस साल में अति वर्षा हुई और बूमे के साल से मशहूर हुआ।

इसी साल के कार्तिक नवम्बर में इंगलैंड की महारानी विक्टोरिया के युवराज प्रिन्स ऑफ वेल्स हिन्दुस्थान में आये थे। पोलिटिकल एजेंट के आग्रह करने पर महाराणा उनसे मिलने बम्बई गये। यहां पोलिटिकल एजेंट ने वायदा कर लिया था कि महाराणा की कुर्सी बड़ौदा मैसूर से तो ऊपर लगेगी और कोशिश हैद्राबाद से भी ऊपर लगाने की कीजायगी।

वहा बम्बई बन्दर पर पहुँचने पर देखा तो हैदराबाद, बड़ौदा, मैसूर से नीचे महाराणा की कुर्सी लगाई गई। यह महाराणा ने मन्जूर नहीं किया और नहीं बैठे वहा टहलते ही रहे। जब शाहजादा प्रिंस ऑफ वेल्स जहाज से उतरे, वाइसराय लार्ड नोर्थ ब्रूक ने शाहजादे को कहा कि महाराणा उदयपुर की तबियत दुरस्त नहीं है। पहले उससे मिल लेवे कि वह चले जायें बाद दूसरों से मिलें। और इसी तरह महाराणा साहब को मिलकर बाद दरबार में बैठे और दूसरों रईसों से मिले। बम्बई में महाराणा शाहजादा प्रिंस ऑफ वेल्स, वाइसराय लार्ड नोर्थ ब्रूक, व बम्बई गवर्नर से मिलने गये ये भी तीनों महाराणा के बंगले पर मिलने गये। हैदराबाद के निजाम बीमारी की वजह से नहीं आये। और उनके वजीर सर सालार जंग आये वह निजाम की जगह प्रतिनिधी होकर बैठे।

बम्बई से लौटकर महाराणा उदयपुर आये। और मार्गशीर्ष में वाइस राय लार्ड नोर्थ ब्रूक उदयपुर आये। शम्भू निवास महल में रहे।

इसके दूसरे ही वर्ष दिल्ली में वाइसराय लार्ड लिटन ने दरबार किया और महाराणा विक्टोरिया ने कैसर हिन्द का खिताब लिया। महाराणा भी किशनगढ शादी कर वहाँ से दिल्ली गये वहा ता० १ जनवरी सन् १८७७ को लार्ड लिटन ने दरबार किया। इस जगह नवरबार रईस नहीं बिठाय

गये। गत वर्ष महाराणा ने उज्र किया। इससे यहां पर अलग अलग इलाकेवार बिठाये गये बीच में गोल चबूतरे पर वाइस-राय बैठे उनके सामने अर्द्ध चन्द्राकार चबूतरे पर रईस अलग अलग ब्लाक में इलाकेवार बैठे। वाइसराय के पीछे दो चबूतरों पर महमान व दूसरे निमंत्रित दरबारी बैठे। महाराणा वाइस-राय के डेरे गये, वाइसराय महाराणा के डेरे आये। इस वक्त महाराणा को तोप सलामी २१ जाति की गई। इस समय दिल्ली में महाराणा, जयपुर, जोधपुर इन्दौर, रीवां, किशन-गढ़ झालरापाटन, ईडर आदि के रईसों से मिले दिल्ली से लौट कर जयपुर होकर उदयपुर आये। इसी वर्ष के कार्तिक में महाराणा को राज्य के पूरे अधिकार मिले।

नाथद्वारे का गोस्वामी गिरधरलाल जुल्म ज्यादः करने लगा। और महाराणा की हुकुम अदूली करने लगा। महाराणा स्वरूपसिंह ने भी कुछ दिनों के लिये खालसा भेजा। इसी तरह वि० सं० १९२८ ई० सन १८७१ में महाराणा शम्भूसिंह ने भी खालसा भेजा और समझाया परन्तु वह बाज न आया। और खुद मुख्तियार रईस होने का गरूर करता रहा। आखिर उसकी सर्कशी इतनी बढ़ गई की वि० सं० १९३३ ई० सन १८७६ में पोलिटिकल एजेंट मेवाड़, व कौंसिल के मेम्बर नाथद्वारे गये खेरवाड़े की भीलकोर पल्टन भी ले गये वहां उसको समझाया और वह न समझा तब लालबाग में उसको कैद कर उदयपुर लाये। और यहां से वृन्दावन भेजा गया।

उसकी जगह उसके पुत्र लाल बावा गोवर्द्धन लाल को गद्दी बिठाया। और नाथद्वारे पर राज्य की तरफ से मुन्सरिम मुकर्रर किया गया। वि० स० १६४० ई० सन् १८८३ में गोवर्द्धन लाल के बालिग होने पर उससे इकरार लिखाकर इख्तियार दिया गया।

वि० स १६३३ ई० सन् १८७७ में महाराणा ने अदालत दीवानी फोजदारी, के ऊपर अपील की जगह इजलास खास मुकर्रर किया। और भी बहुत काम कर राज्य का सुप्रबन्ध किया। जिलों में हाकिम मुकर्रर किये। सायर का प्रबन्ध किया शहर में पुलिस कायम की।

इसके दूसरे ही साल मेवाड में कहत पडा और मगरा जिले में इन्तजाम पर विलायती मकरानी नौकर थे। इन्होंने फसाद मचाया। महाराणा ने उनको कैदकर सरकार हिन्द की मार्फत हिन्दुस्तान के बाहर भेज दिये और आयन्दा बगैर हुकुम इन लोगों को नौकर रखने की मनाई करदी। जो नेक-चलन जागीरदारों के ठिकानों में थे उनके मुचलके ले लिये।

वि- स- १६३५ ई सन् १८७८ में महाराणा ने मेवाड का दौरा किया। वि० स० १६३७ ई० सन् १८७६ में मगरे जिले के भीलों ने उपद्रव किया महाराणा ने फौज व सरदारों की जमीयत भेजकर उनको सजा दी।

वि० सं० १९३८ ई० सन् १८८१ में हिन्दुस्तान के वाइस-राय लार्ड रिपन ने चित्तौड़ आकर दरबार किया। और महाराणा को जी० सी० आई० का तगमा दिया। इस वक्त महाराणा ३-४ महीने चित्तौड़ रहे। और वहां के पुराने महलों की दुरुस्ती व किले के कोट दरवाजे की दुरुस्ती कराने का हुकुम दिया। वाईसराय की खातिर दरबार आदि जलसे में ४ लाख रुपये खर्च किये। इसी साल में महाराणा के एक पुत्र महाराज कुँवर का जन्म हुआ। तोपें चलाई गई, कैदी छोड़े गये, हजारों रुपये लुटाये गये पर अफसोस है कि एक दिन रह कर अन्तकाल होगया।

सरकार हिन्द ने सांभर के नमक का इंतजाम किया और गवर्नमेन्ट ने सब जगह खारी बनाना बंद कर दिया। राज-पूताने के एजेंट गवर्नर जनरल वि० सं० १९३४ ई० सन् १८७६ में राजनगर आये और महाराणा से मिलकर मेवाड़ के साथ भी नमक का इकरार किया।

महाराणा ने वि० सं० १९३४ ई० सन् १८७८ में उमरावों को कलमबन्दी के इख्तियार दिये। और इजलास खास की बजाय महद्राज सभा मुकर्रर की और देश हितकारिणी सभा कायम की। सरकार से मिस्टर वींगेट को मांगकर वि० सं० १९३६ ई० सन् १८७९ में माल का काम सेटलमेंट जारी किया।

यह महाराणा जयपुर, जोधपुर, किशनगढ़ गये और

जयपुर व किशनगढ के महाराज भी उदयपुर आये। इन्होंने रईसों के साथ बहुत रसूक बढाया। सब रईस इनको बुर्जुग मानने लगे।

बोहेडे के रावत अदोतसिंह शक्तावत के मरने पर शक्तावत केशरी सिंह बगैर महाराणा की मजूरी के बोहेडे पर काबिज हो गया। उसको बहुत समझाया, परतु न समझा और मुकाबले पर आमादा हुआ। तब वि० स० १६४० ई० सन् १८८३ में फौज भेज कर केशरी सिंह को कैद करवा मगाया। और भीडर महाराज के छोटे लडके रतन को बोहेडे पर मुकर्रर किया कुछ समय बाद महाराणा फतहसिंह ने इस केशरी सिंह को उदलपुरा गाव की जागीर दी।

इन महाराणा ने इन्जीनियरी का महकमा कायम कर बहुत सी नई तामीर कराई। सज्जन निवास बाग, सज्जन गढ जग निवास में सज्जन निवास महल और उसमें कॉच की पच्चीकारी का काम कराया। उदयपुर से नाथद्वारे तक सडक बनवाई। सज्जन अस्पताल कायम किया। जिलों में जहाजपुर, माडलगढ, जहा २ गये वहा के महल, मकान, कचहरी की दुरस्ती कराई। राजनगर में पाल पर महल बनवाये बाग लगवाया। जयसमुद्र मगरे के महल की दुरुस्ती और दोनों बध बीच मिट्टी डलवाना शुरू किया। इनको तामीरात का बहुत शौक था महलों में काच की पच्चीकारी के मोर आदि बनवाये।

इन्होंने सिरदार गढ़ के ठाकुर मनोहर सिंह को उमराव बनाया। और फतहगढ़ (किशनगढ़) के महाराज मानसिंह को उसके बाप राठौड़ रायसिंह की जागीर शिवपुर देकर अपना उमराव बनाया।

वि० सं० १६४१ मे इनके बीमारी हुई आब-हवा की बदली के लिये जोधपुर गये। बीमारी बढ़ती गई वहां से चित्तौड़ होकर उदयपुर आये। और वि० सं० १६४१ पौष सुदि ६ ई० सन् १८८४ ता० २३ दिसम्बर को देहान्त होगया।

यह बड़े ऊँचे ख्यालात के पोलीटिकिल थे। जब ये जोधपुर में आब-हवा की बदली का गये। वहां जोधपुर महाराज जसवन्त सिंह से मालूम हुआ कि (काठियावाड़) जामनगर के जामबीभा ने अपने पीछे रंडी के लड़के को गद्दी का वारिश करार दिया। इसमें महाराजा जसवन्तसिंह बहुत घबराये क्योंकि इनकी जामनगर से रिश्तेदारी थी। इस पर महाराणा ने कहा—"आप क्यों घबराते हैं मैं इसमें हस्तक्षेप करूंगा" बाद जोधपुर से महाराणा और महाराजा साथ ही अजमेर गये। राजपूताने के एजेंट गवर्नर जनरल कर्नल ब्राड फोर्ड महाराणा से मिलने आये। उस वक्त महाराणा ने उनको जामनगर के बारे में कहा इस पर उन्होंने कहा "यह बम्बई अहाते का मामला है मैं दस्तन्दाजी नहीं कर सकता।" महाराणा ने कहा आप मेरे नाम से वाईसराय को लिखें। यह



महाराणा फतहसिंह जी जी० सी० एस० आई०,

जामनगर राजपूतों की रियासत है इसमें मुझे बोलने का हक है। कर्नल ग्राड फोर्ड ने वाईसराय को लिखा। और वाईसराय ने जामनगर के गोद की मिसल महाराणा के पास भेजी परन्तु अफसोस है कि महाराणा का अन्तकाल होगया और यह मामला ऐसे ही रह गया।

७६ फतहसिंह

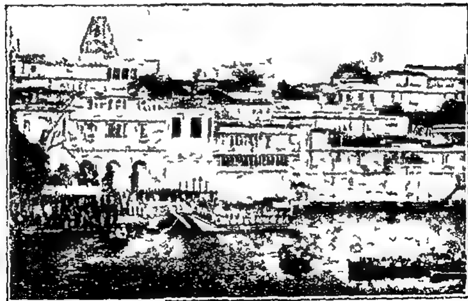
महाराणा सज्जनसिंह के नि सन्तान देहान्त होने पर सरदार मुत्सद्दियों ने मलाहकर शिवरती महाराज के कुंवर फतहसिंह को वि० स० १९४१ पोष सुदि ७ ई० सन् १८८४ ता० २४ दिसम्बर को गद्दी बिठाया। इनका जन्म वि० स० १९०६ पौष सुदि ७ ई० सन् १८४९ ता० १६ दिसम्बर को हुआ। यह शिवरती महाराज दलसिंह के तीसरे पुत्र थे परन्तु इनके बड़े भाई महाराज गजसिंह के सन्तान न होने के कारण उन्होंने इनको वि० स० १९४० आश्विन सुदि १० दशहरे के दिन गोद लिया। उसके थोड़े ही समय बाद यह गद्दी बिठाये गये।

इनके समय में इंग्लिस्तान के शाही खानदान के शाहजादे ड्यूक ऑफ कैनाट, प्रिंस एलबर्ट विक्टर, प्रिंस ऑफ वेल्स (वर्तमान बादशाह पंचम जार्ज) वर्तमान प्रिंस ऑफ वेल्स, प्रिंस आर्थर ऑफ कैनाट तथा ग्रैंड ड्यूक हैसी बवेरिया और स्वीडन के क्राउन प्रिंस, तथा हिन्दुस्तान के वाइसराय लार्ड डफरिन, लैन्स डाउन, एलगीन, कर्जन मिंटो, हार्डिंग चेम्स

फोर्ड, रीडिंग, ईरविन, तथा कमाण्डर चीफ़ लार्ड रोवर्ट जनरल सर एावर पामर, लोर्ड किचनर, रोलिन्सन, सर जार्ज वर्ड वुड तथा मद्रास के गवर्नर सर ग्रेटडफ, सर आर्थर लोली, बम्बई के गवर्नर लार्डरे, सर जार्ज क्लार्क आदि बड़े अंग्रेज महमान तथा जयपुर, जोधपुर, किशनगढ़, ईडर, कोटा, इन्दौर, बड़ोदा, धौलपुर, नाभा, कपूरथला, लीमड़ी, मोरवी, जामनगर, बनारस दरभंगा और काश्मीर के राजा महाराजा उदयपुर आये और महाराणा भी जयपुर, जोधपुर, किशनगढ़ गये।

यह महाराणा हरद्वार, देहरादून गये। देहरादून में एक वक्त लार्ड मिन्टो से, दूसरी वक्त लार्ड चेम्स फोर्ड से मिले। पहली दफह हरद्वार मे वि० सं० १९६६ में कुशावर्त पर स्वयं श्राद्ध कर स्वर्ण तुलादान किया। तीसरी दफा वहां से लौटते हुए ओंकारनाथ जी गये। दूसरी वार हरद्वार से शिमले लार्ड हार्डिंग की सहतपुर्सी को गये। वि० सं० १९७५ में दूसरी वार ओंकारनाथ गये तव बड़वाय में ठहरे और वहां इन्दौर महाराजा तुकाजी राव हुल्कर से मिले।

वि० सं० १९६० ई० सन् १९०४ में गवर्नमेंट ने मेयो कालेज अजमेर के सुधार के लिये कमेटी कर ग्वालियर, जयपुर, बीकानेर, कोटा, भरतपुर, गोंडल, सैलाना के रईसों को वुलाया। उसमें महाराणा को भी वुलाया महाराणा ने कालेज में मन्दिर वनवाकर धर्मशिक्षा का प्रचार कराया।



राजघाट (गणगौर घाट) त्रिपोलिया



वहां से पुष्कर गये वहां स्नान कर चांदी का तुलादान किया।

महाराणी विक्टोरिया कैसरहिन्द को ५० साल राज्य करते हुए उसकी खुशी में वि० स० १६४३ ई० सन् १८८७ में सारे ब्रिटिश साम्राज्य में गोल्डन स्वर्ण जुबिली मनाई गई। महाराणा ने भी खुशी मनाकर इसकी यादगार में विक्टोरिया हाल म्युजियम और लाईब्रेरी बनाई। और उसके सामने ही महाराणा की सफेद संगमरमर की पूरे कद की मूर्त्ति स्थापित कराई। यह मकान बनने पर वि० स० १६४७ ई० सन् १८९० में लार्ड लेंग्स डाउन ने खोला। और मुर्त्ति को प्रिंस एलबर्ट विक्टर ने वि० स० १६४६ ई० सन् १८८९ में खोला। इस स्वर्ण जुबिली पर गवनमेन्ट ने महाराणा को जी० सी० एस० आई० का तगमा दिया जो दूसरे ही साल वि० स० १६४४ ई० सन् १८८८ में राजपूताने के एजेंट गवर्नर जनरल कर्नल वोल्टर लेकर उदयपुर आये। इन्हीं महाराणी की डाईमन्ड हीरक जुबिली-६० साल राज्य करते हुए उसकी खुशी में सारे ब्रिटिश, साम्राज्य में फिर मनाई गई। महाराणा ने भी खुशी मनाई और उसकी यादगार में मोताजखाना और पागल-खाना वि० स० १६५३ ई० सन् १८९७ में बनवाया। गवर्नमेंट ने इस समय महाराणा की सलामी जाति २१ तोपों की। और महाराणी चावडी जी को क्राऊन ऑफ इंडिया का तगमा

दिया। कर्नल वाल्टर एजी जी ने राजपूतों की शादी में टीके व त्याग की कुप्रथा को रोकने के लिये वाल्टरकृत राजपुत्र हितकारणी सभा कायम की उसकी कमेटी यहां भी खोली गई।

नैपाल में वहां के वजीर महाराजा रणोद्दीपसिंह के मारे जाने पर मारकाट हुई उसमें महाराजा जंगवहादुर का लड़का मारा गया और दूसरे भगकर हिन्दुस्थान में आये। महाराज जंगवहादुर की लड़की युवराज त्रिलोक्य विक्रमशाह की महारानी ने भी रेजीडेन्सी में शरण ली। और बाद कलकत्ते में आकर रहने लगी। और प्रार्थना करने पर महाराणा से सहायता मिलती रही। उनको वि० सं० १९५४ ई० सन् १८९७ में उदयपुर बुलाकर गोवर्द्धन विलाश के महलो में बड़ी खातिरदारी से रखी उनकी सारी उमर यहीं आराम से वीती। वि० सं० १९७० ई० सन् १९१३ में यहीं मरी। उनकी दाहक्रिया महासत्यां में महाराणा अमरसिंह प्रथम की छत्री के पीछे हुई। जंगबहादुर के सब ही लड़के कोई कभी कोई कभी उदयपुर आये। उनको सहस्त्रों रुपया यथायोग्य महाराणा प्रदान करते रहे। जीतजंग के लड़के मोदजंग और रणोद्दीपसिंह के पड़पोते श्री नृसिंह और भीमन्ट सिंह तो इस समय भी यहीं पर आश्रय पा रहे हैं।

वि० सं० १९५६ ई० सन् १८९९-१९०० में सारे उत्तरी

हिन्दुस्तान में भारी कहत-पड़ा इस प्रांत में २५ के सवत् का कहत भयकर मशहूर है। परन्तु छप्पन का उससे भी भयकर हुआ। और साथ ही सत्तावन में हैजा और ज्वर की ऐसी सख्त बीमारी हुई कि लाखों आदमी मर गये। महाराणा ने भी लाखों रुपया खर्च कर प्रजा का पालन किया। जगह २ अन्न वितीर्ण किया गया। परन्तु दैवी प्रकोप के सामने मनुष्य का उद्योग कुछ नहीं कर सका।

इसी वर्ष छप्पन के शुरू में महाराज कुमार भूपालसिंह को रीढ़ की तकलीफ हुई, बहुत इलाज, दान, पुण्य स्वर्ण तुलादान कराया गया आराम हुआ। परन्तु एक पैर में कमजोरी रह गई जिससे सदा के लिये स्वधीनता से चलना फिरना बद हो गया।

इसी वर्ष में दक्षिणी अफ्रिका में ट्रान्सवाल और सरकार के दर्मियान युद्ध हुआ। शुरू में सरकार को पीछा हटना पड़ा दो वर्ष युद्ध चलता रहा अन्त में सरकार की विजय हुई। महाराणा ने सहायतार्थ १ लाख रुपया दिया और तोपखाने के घोड़े दिये परन्तु ईश्वर की कृपा से युद्ध बद होगया। ट्रान्सवाल औरेंजफ्रीस्टेट सरकार ने जप्त कर लिये।

इसके दूसरे ही साल वि० स० १९५७ ई० सन् १९०१ में इग्लिस्तान की महाराना विक्टोरिया का देहान्त हो गया। महाराणा ने शोक प्रगट किया और एडवर्ड सप्तम की तख्त-

नशीनी की खुशी मनाई। बादशाह की इंग्लिस्तान में ताज पोशी हुई तब भारत के रईसों को भी निमन्त्रण दिया। महाराज जयपुर, ग्वालियर, बीकानेर, कोल्हापुर, नबाव रामपुर आदि गये। महाराणा ने धर्म यम नियम आचरण का पालन कर मंजूर नहीं किया। क्योंकि ये तो अंग्रेजों के भोज में भी सामिल नहीं होते और अपने धर्म के पूरे पाबंद थे। इसी कारण समुद्र पार कर विलायत नहीं गये। लार्ड कर्जन वाईसराय ने भारत में भी ताजपोशी का सन् १६०३ ता० १ जनवरी वि० सं० १६५६ पौष शुक्ला ३ को दिल्ली में दरबार किया उसमें महाराणा को निमन्त्रण दिया। महाराणा ने अपने नंबर बैठने का उज्र किया। और दिल्ली गये परन्तु दरबार में शरीक न हुए। और बीमारी के कारण वाईसराय से भी न मिले और पीछे उदयपुर आये।

बांसवाड़े के महारावल लक्ष्मणसिंह और इसके पुत्र शंभूसिंह के दर्मियान अनबन हो गई, इससे शभूसिंह नीमच रहने लगा। और महाराणा को सहायतार्थ निवेदन कराया। इस पर उसको यहां बुलाकर कई वर्ष तक उदयपुर में रक्खा।

हिन्दुस्तान में प्लेग की बीमारी वि० सं० १६५३ ई० सन् १८६७ के लगभग से चल रही थी वि० सं० १६६० में बम्बई से आये हुए मनुष्यों द्वारा राजनगर जिले के राज्यावास गांव में फैल गई और दूसरे ही साल मेवाड़ में बहुत सी जगह फैली और उदयपुर में सख्त प्रकोप हुआ।

हजारों आदमी मरे सारा शहर खाली हो गया। महाराणा भी जहा तक बीमारी न मिटी जय समुद्र में रहे। सर्दी में बीमारी का प्रकोप बढ जाता और गर्मी में घट जाता इस तरह वि० सं० १९६८ तक मेवाड में यह बीमारी चलती रही।

इंगलिस्तान के युवराज प्रिन्स ऑफ वेल्स वि० सं० १९६२ ई० सन् १९०५ में भारत आये। तब उदयपुर भी आये महाराणा ने उनका स्वागत किया। शाहजादे के साथ इनके योग्य चमर आदि लवाज में नहीं थे। इसलिये महाराणा ने शाहजादे को सुवर्ण के मीनाकारी के हीरे जडे हुए चमर और सूरजमुखा दिये यह शहजादे के साथ सारे भारतवर्ष में रहे और इंगलिस्तान पहुँचने पर शाहजादे ने ये बादशाह के नजर किये। और शाही लवाजमों के साथ लडन के टावर में रखे गये। और इनके एवज बादशाह एडवर्ड ने महाराणा को अपनी सवारी के खास दो घोडे एक्सपर्ट और रेडलेड नामी कई नुमाईशों से इनाम पाये हुए—भेजे। उनको लेकर राजपूताने के एजेंट गवर्नर जनरल कर्नल पीन्ही उदयपुर आये। महाराणा ने फौज की दुरुस्ती के लिये एक स्कार्डन मवाड लेन्सर्स की भर्ती किया जिसमें सब राजपूत भरती किये गये। एक कपनी गोरखों की भर्ती की इसकी दुरुस्ती के लिये केप्टन वेबर को बुलाया।

शाहपुरे के राजाधिराज नाहरसिंह वि०

साल से उदयपुर चाकरी में नहीं आने लगा। और गवर्नमेंट तक यह मुकद्दमा गया लार्ड कर्जन ने फैसला किया कि मेवाड़ के दूसरे जागीरदारों के माफिक काछोला के एवज शाहपुरा की जमीयत हर साल तीन महीने उदयपुर चाकरी देवे। और छुटंद बदस्तूर हमेशा माफिक जमा करावे। और राजाधिराज खुद एक साल दशहरे पर एक महीने के लिये चाकरी में आवें। और एक वर्ष माफ किया जावे। यह फैसला होने पर भी राजाधिराज चाकरी में उदयपुर नहीं आया। इसलिये उस पर एक लाख रुपया जुर्माना किया। और वि० सं० १९६७ से वह चाकरी में आने लगा।

इसी साल में बादशाह एडवर्ड का देहान्त हो गया और युवराज पंचम जार्ज तख्तनशीन हुए। महाराणा ने शोक प्रगट किया और पंचम जार्ज के तख्तनशीन होने की खुशी मनाई। इनकी ताजपोशी विलायत में हुई। तब हिन्दुस्तान के रईसों का वहां नहीं बुलाये। और बादशाह के हिन्दुस्तान में आकर दिल्ली में दरबार करना निश्चय हुआ। और इस दरबार में सब ही भारतवर्ष के रईस निमंत्रण किये गये। महाराणा ने उज्र किया कि सरकार ने हमारा नंबर हैदराबाद, बड़ौदा, मैसूर के नीचे रखा यह हमें मंजूर नहीं है। आज दिन तक हम किसी रईस के नीचे नहीं बैठे, यहां तक कि हमारे युवराज दिल्ली मुगलों के पास गये वहां उनको सब रईसों के उपर जगह मिली ऐसी हालत में हम खुद रईसों के

नीचे कैसे बैठ सकते हैं आदि ऐसे अपने हक हकूकों का उज्र किया। इस पर सरकार ने महाराणा के लिये नई जगह रूलींग चीफ इन वेटिंग कायम की। जिससे महाराणा सबसे पहले बादशाह से मिलें। और दरबार में दूसरे रईस सिर झुका कर सलाम करें उस तरीके से ये वंचित कर दिये जावे। क्यों कि बादशाह का स्टाफ दरबार में सलाम के लिये पेश नहीं किया गया। महाराणा दिल्ली गये बादशाह के यहां आने पर सलीमगढ स्टेशन पर उनसे मिले और बादशाह के डेरे मिलने गये। और फोडा होने के कारण १२ दिसम्बर को दरबार व किसी जलसे में शरीक नहीं हुए। और बादशाह रवानह हुए तब स्टेशन पर उनसे विदायगी की मुलाकात कर उसी दिन उदयपुर को रवानह हो गये। रवानह होने के कुछ समय पहले काश्मीर महाराज प्रतापसिंह महाराणा से मिलने आये। इस दरबार में बहुत सी उपाधिया-इनाम मिले, महाराणा को जी० सी० आई० ई० का तगमा मिला, जिन २ को तगमे खिताब मिले उनको बादशाह ने चेप्टर दरबार कर अपने हाथ से दिये इस दरबार में जिसको पहले मिला हो वह ऊपर बैठता है। और महाराणा किसी के नीचे बैठना मजूर नहीं करते थे इससे वे इसमें भी शरीक नहीं हुए। और आयन्दा साल लार्ड हार्डिंग वाईसराय उदयपुर आये तब वह यह तगमा लेकर आये। और महाराणा बीमार थे इससे पलग पर उनको दिया।

वि० सं० १९६९ ई० सन् १९१२ में लार्ड हार्डिंक उदयपुर आये महाराणा बीमार थे इस लिये लाटसाहब का स्वागत भोज सब महाराज कुमार भूपाल सिंह ने किया मेवाड़ के सरदारों के झगड़े तय करने के लिये महाराणा ने कर्नल शावर को बुलाया परन्तु युद्ध आरम्भ होने से वह पीछे चले गये।

वि० सं० १९७० ई० सन् १९१४ में यूरोप में इंग्लिस्तान, फ्रांस, रूस, जर्मन और आस्ट्रेलिया के दर्मियान युद्ध हुआ फिर इटली, अमेरिका, इग्लिस्तान के शरीक और टर्की, बालगेरिया जर्मन के शरीक हुए। और यह भारी विश्वव्यापी युद्ध हुआ। महाराणा ने १३ लाख वारलोन में, १५ लाख कर्ज चाँदी के एवज, तीन लाख वार के लिये मुफ्त, एरोप्लेन-हवाई जहाज, रंगरूट आदि देकर गवर्नमेन्ट की सहायता की। चार वर्ष तक यह युद्ध जारी रहा अन्त में सरकार की विजय हुई। रूस, जर्मन, आस्ट्रिया और टर्की की बादशाही नष्ट हुई। इस लड़ाई में सहायता देने के उपलक्ष में सरकार ने महाराणा को जी० सी० वी० ओ० का तगमा दिया। और रियासत की लोकल, सलामी मेवाड़ के अन्दर हमेशा के लिये २१ तोप मुकर्रर करदी। महाराज कुमार ने युद्ध में भाग लिया। इसलिये उनको भी के० सी० आई० ई० का तगमा मिला जो उनको दिल्ली जाने पर मिला।

संसार की गति बहुत बदल गई परन्तु महाराणा

परवाह न कर प्राचीन मर्य्यादा पर दृढ़ रहे, इसके अलावा उनकी वृद्धावस्था हो गई इससे ज्यादा मिहनत रियासती काम में नहीं करते और अपना स्वास्थ्य कायम रखने के लिये शिकार में, पहाड़ों में व घोड़े पर मिहनत करके तन्दुरुस्ती कायम रखना हरेक कार्य्य का निर्णय किये बिना हुक्म नहीं देना इससे रियासती काम इकट्ठा होगया प्रजा को बेसबरी होने लगी। वि० सं० १९७८ में महाराणा चित्तौड़ जिले में शिकार गये वहां मेवाड़ की प्रजा फरीयाद लेकर आई उनको उदयपुर आने को कहा। परन्तु यहां आने पर दर्यास्त होने में देर हुई इसमे सारी प्रजा-विशेष कर मेवाड़ के जाट बाहरी लोगों के बहकाने से उदयपुर फरयाद लेकर आये। तब महाराणा ने उनको समझा कर रुखसत किया। और अपनी वृद्धावस्था का विचार कर वि० सं० १९७८ श्रावण में राज्य के बड़े २ मुख्य २ अधिकार अपने हाथ में रखकर दूसरे राज्य के सब इख्तियार महाराज कुमार भूपालसिंह को दिये। इन्होंने घोषणा पत्र निकाल कर सायर की चिट्ठी की तकलीफ, मूअरों की तकलीफ आदि सब तकलीफ रफा कर न्याय सुधार कर प्रजा को शान्त किया। मिस्टर ट्रेंच को बुलाकर नया सेटल-मेंट कायम कर प्रजा को सन्तोष दिया। अजमेर आदि बाहिरी नेताओं के बहकाने से बिजोल्या की प्रजा ने बखेड़ा किया, राजपूताने के एजेंट गवर्नर जनरल ऑनरेबल मिस्टर हालेंड ने वहां जाकर उनको सन्तोष दिया इससे बेगम की प्रजा का

भी हौसला बढ़ गया। इस पर वहां फौज भेजकर उनको सीधे किये। और भी कितना ही नया सुधार किया वह उनके हाल में लिखा जावेगा।

इन महाराणा को मिहनत-व्यायाम करने का बड़ा शौक था और यह जैसा शिकार में होता है और प्रकार से नहीं होता। और अपना स्वास्थ कायम रखने के लिये ही विशेष कर पहाड़ों में शिकार जाते और गोली भी अच्छी लगाते थे, अपने राज्य के अन्दर ही मादीन व बच्चों को बचाते हुए इन्होंने लगभग १७५ शेरों की शिकार की। निशाना इतना सही लगाते थे कि मोती व चांदोड़ी रुपैये को उड़ा देते थे। इनकी गोली लगाने की प्रशंसा सुनकर देखने को दूर २ से आये। इतने मिहनती थे कि वैशाख जेठ की कड़ी धूप में शेर की शिकार में अपनी बन्दूक कन्धे पर लेकर कई मील तक पहाड़ों में पैदल चले जाते थे। इनके लिये ५०-६० मील घोड़े पर जाना कोई विशेषता नहीं थी उदपुर से चित्तौड़ ७० मील घोड़े पर जाना तो सुगम ही था ये आदर्श राजा थे इतने बड़े राज्य के स्वामी होने पर भी बड़ी सादगी से रहते थे और कुछ भी अभिमान नहीं रखते।

यह बड़े धर्मात्मा यम-नियम के दृढ़ थे। जहां तक स्नान नहीं करते-बीमारी की हालत में औषध तक नहीं लेते थे। जहां तक पूजन वगैरह नहीं करते भोजन नहीं करते थे। साक्षात् राजर्षि कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति न होगी।

इन्होंने तीर्थों में हर साल हर मेले पर भेज कर लाखों रुपये दान-पुण्य किये। साधु ब्राह्मणों को भोजन कराया, एक स्वर्ण और दो चांदी के तुलादान किये।

इन्होंने लाखों रुपया चन्दों में दिये। ट्रांसवालयुद्ध, विक्टोरिया मेमोरियल कलकत्ता, में लाख-लाख, हिन्दू यूनीवर्सिटी में १॥ लाख, ऑल इण्डिया रीलीजीयस यूनीवर्सिटी में १॥ लाख, और भी कितने ही चन्दों में लाखों दिये। लाखों रुपयों का जेवर श्री ऐकलिंगजी, श्रीनाथजी, श्री द्वारिकाधीश जी, श्री चारभुजा जी के भेंट किये, सोने की आरतियें आदि श्री ऐकलिंगजी के चांदी के दो चौरचट चारों दरवाजों के चांदी के किवाड़ (दरवाजे) भेंट किये। श्री ऋषभदेव जी को चोवीस अवतारों मे मान कर वहां जाते तब पूजा करते और २॥ लाख की हीरे की आंगी भेंट की।

मेवाड़ में पहले के चित्तोड़ी, उदयपुर, स्वरूपशाही सिक्के में कई जाली बनने लग गये इसलिये इन महाराणा ने वि० सं० १९८५ में कलकत्ते की टकसाल में चित्तोड़ी नया सिक्का बनवाया वह इनके देहान्त के कुछ समय पहले नमूने का बनकर आया।

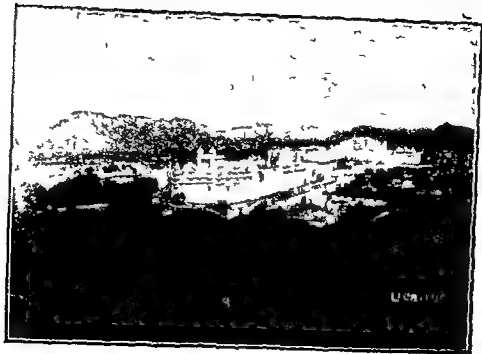
शरणागतवत्सल ऐसे थे कि शत्रु भी दुःख में शरण लेता तो पालन करते थे। बूंदी का वैर तो मशहूर ही है वहां के जागीरदार कापरन के हाडा की जागीर महाराव ने जप्त

करती। वह धमोतरसिंह हाड़ा यहां आया उसको सामने न बुलाया परन्तु २॥ हजार साल के खर्च को देकर उदयपुर में रख लिया इसी तरह जोधपुर, करोली, नेपाल, बुकेन नाहन, टोंक, वगैरे कितनी जगह के दुःखियों को आश्रय दिया।

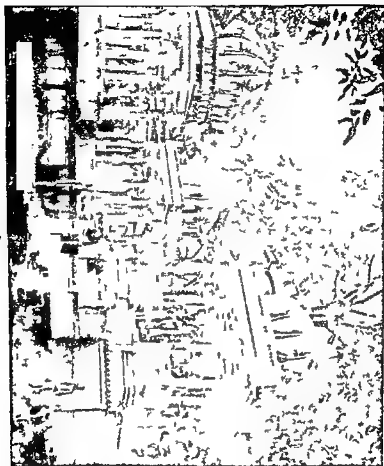
महाराणा सवारी कर बाहर जाते हैं तब रास्ते में स्त्रियां गायन कर बधाई देती हैं उनको यथायोग्य देने का प्राचीन समय से नियम है परन्तु वह तो साधारण रूप में था पर इन महाराणा ने तो प्रत्येक स्त्री को एक आना प्रति दिन देते थे जिससे गरीबों की बड़ी परवरिश होती थी। बाज बाज दिन तो ६ हजार तक की गिन्ती होती थी इनकी यह उदारता सदा के लिये नामवर होगई। इसी प्रकार प्रतिदिन ये भोजन करते उस समय सौ, डेढ़, सौ इनके साथ पंक्ति में भोजन करते थे। इनकी बनाई हुई सब इमारतों का वर्णन किया जावे तो बड़ी पुस्तक तैयार हो जायगी। उदयपुर के महलों में शिव निवास, मिन्टो हॉल, दरबार हॉल, पायगा, कोट दरवाजे, फतह सागर, शहरपनाह की कमी पूरी की, सहेलियों की बाड़ी का बाग, महलों का जीर्णोद्धार करवा कर नये नल, हौज, फव्वारे बनवाये। लेन्स डाउन और वाल्टर होस्पिटल, विक्टोरिया हॉल, सराय, फराशखाना, घासघर, चित्तौड़ पर नये फतह प्रकाश महल, छोटे कीर्त्तिस्तंभ का जीर्णोद्धार, किले के चारों तरफ का कई मील लंबा कोट स्टेशन पर सराय, कुंभलगढ़ पर वेदी का जीर्णोद्धार, कटारगढ़ पर नये



फत्हसागर केनाटबंद



शिवनिवास महल



महल, किले के चारों तरफ कई मील लम्बा कोट करेडा, मदार, गागेंडा गोवटा आदि कई तालाब, जय समुद्र की पाल पर दोनों महल, हवा महल, और पहाडों पर के महलों का जीर्णोद्धार, तथा पाल पर लाखों रुपयों की मिट्टी डलवाई। सज्जनगढ को पूर्ण कराया। जय समुद्र, नाहर मगरा, चित्तौड व कई जगह छोटे बडे शिकारगाह के मूल लगभग ८ करोड के बनवाये। इसके सिवा सडकें, मदरसे, अस्पताल, पुल वगैरह भी मेवाड में जगह जगह निर्माण कराये। कई वर्ष और पुश्तें गुजर गईं परन्तु महाराणा राजसिंह प्रथम, जयसिंह प्रतापसिंह दूसरे, राजसिंह २, हमीरसिंह २ की छत्रीयें नहीं थीं वह इन्होंने बनवाईं संग्रामसिंह की बडी छत्री अधूरी थी उसको पूर्ण की और शम्भूसिंह सज्जनसिंह की छत्रीयें बनवाई। शम्भु निवास और शिव निवास महलों में बिजली की रोशनी लार्ड कर्जन के उदयपुर आने के समय वि० स० १९५६ में कराई। उदयपुर से चित्तौड और मावली से काकरोली तक रेल बनवाई। साहसी ऐसे थे कि ८१ वर्ष की आयु होने पर भी, शरीर में व्याधि रहने पर यहा से एकलिंग जी गये वहा से कुमलगढ गये, इससे दिन दिन बीमारी बढती गई। वापिस यहा आने पर शरीर में दाह पीडा बढ गई वि० स० १९८७ के ज्येष्ठ कृष्णा ११ ई० सन् १९३० ता २५ मई को स्वर्गवास हो गया। इनको भारतवर्ष के आखीरी रईस कहना चाहिए। अपने कुल के सच्चे अभिमानी, और मर्यादा के

पालने वाले थे। लगभग ४५ वर्ष राज्य कर सारे देश को दुःख सागर में डुबो गए। इन्होंने कभी कोई प्रकार का कर प्रजा पर नहीं लगाया।

आपही एक आदर्श राजा थे जिन्होंने एक पत्नीव्रत निभाया। आपकी पहिली महारानी का देहान्त होने पर दूसरा विवाह किया। पहिली रानी से सन्तान हुए उसमें १ कुवरी नंद कुंमारी रही जिसका विवाह वि० सं० १९४९ ई० सन् १८९२ में कोटे के महाराव उमेदसिंह के साथ किया। दूसरी महारानी के ३ पुत्र ५ कन्याएं हुईं। जिनमें से २ पुत्र तो बाल्यावस्था में चले गये और बड़े राजकुमार भूपालसिंह गद्दी बैठे। इनका यज्ञोपवीत वि० १९६४ में, प्रथम विवाह वि० सं० १९६६ में, द्वितीय विवाह वि० सं० १९६७ में, तृतीय विवाह वि० सं० १९८५ में किया। बड़ी राजकुमारी का विवाह वि० सं० १९६० में कृष्ण-गढ़ के महाराजा के साथ और दूसरी का वि० सं० १९६५ में जोधपुर के महाराजा सरदारसिंह के साथ किया। और दूसरी राजकुमारियों का देहान्त हो गया। जोधपुर महाराजा सरदार सिंह की पहले बूँदी शादी हो चुकी थी इसलिये यह इकरार कराया कि हाड़ी जी छोटी महाराणी रहेगी और पटरानी महाराणा की राजकुमारी रहेगी। हाड़ी जी से इनके १५ हजार खर्च के विशेष अर्थात् ६५ हजार वार्षिक मिलेगा। हाड़ी जी पटरानी थी और उनकी तोप सलामी होती थी वह बन्द होकर इनकी तोप सलामी आदि सब पटरानी का बर्ताव मान्य रहेगा।

इनके देहान्त का हमको शोक होवे उसमें तो आश्चर्य क्या परन्तु नरेन्द्र मण्डल में लार्ड इरविन ने यह शब्द कहे थे कि—H H the Maharana of Udaipur the Senior Rajput Prince had for many years been a famous and Historic figure Revered for his blameless life and high conseption of his duties a model of Rajput Chivalry and a great and courteous gentleman he stood upon ancient ways and cared not greatly for the modern world round him Age and infirmity prevented his joining the chamber It was poor by his absence In him the British Government has lost a faithful ally whose loyalty and friendship never wavered

७७ हिन्दुआ सूर्य महाराजाधिराज महाराणा श्री भूपालसिंहजी।

यह महाराणा वि० सं० १९८७ जेठ वदि ११ ई० सन् १९३० ता० २८ मई को गद्दी विराजे। इनका जन्म वि० सं० १९४० फाल्गुन वदि १० ई० सन १८८४ ता० २२ फरवरी को शिवरती की हवेली हुआ। बाल्यावस्था में इनको हिन्दी, अंग्रेजी संस्कृत की शिक्षा दी गई परन्तु वि० सं० १९५६ ई० सन् १८९९ में इनको रीढ़ की तकलीफ हुई, जिससे भारी परिश्रम उठाना पड़ा। लाखों रुपयों का दान-पुण्य स्वर्ण तुलादान किये गये। ईश्वर की कृपा से आप को आराम हुआ।

परन्तु एक पैर में इतनी तकलीफ हो गई कि स्वतंत्रता से चलना फिरना बंद हो गया।

जोधपुर महाराजा की आपकी बहिन से शादी हुई उसका जलसा जोधपुर महाराज ने जोधपुर में किया। उसमें आपका निमंत्रण किया इसलिये यहां से अपने पिता के साथ वि० सं० १९६६ में कृष्णगढ़ गये। वहां से महाराणा हरद्वार-जयपुर गये और आप जोधपुर गये। महाराजा ने मर्यादा के अनुसार आपकी पेश्वाई की। तोपों की सलामी आदि करके बराबरी का स्वागत किया।

लार्ड हार्डिंग वाईसराय वि० स० १९६९ ई० सन् १९१२ में उदयपुर आये। तब महाराणा बीमार थे इसलिये वाईसराय को स्वागत. भोजन सब आप ही ने किया।

वि० सं० १९७२ में अपने पिता के साथ हरद्वार देहरादून ओंकारनाथ गये। और देहरादून में वाईसराय लार्ड चेम्सफोर्ड से मुलाकात की।

विश्वव्यापी युद्ध में राज्य से सरकार को सहायता दी उसमें आप ने भाग लिया। इससे सरकार ने आपको के० सी० आई० ई० बनाया। और आप हरद्वार दिल्ली गये तब तगमा लार्ड चेम्स फोर्ड ने दिया। उस समय " चेम्बर ऑफ प्रिन्सेज नरेन्द्र मंडल हो रहा था। इसको देखने के लिये आपको वाईसराय ने बुलाया और आपकी कुर्सी वाईसराय से

थोड़ी दूर हो सगाई। राज्य कार्य एक्जीक्यूटिव व ज्यूडाशियल आप देखते ही रहते थे परन्तु वि० स० १९७८ ई० सन् १९२१ में वृद्धावस्था के कारण महाराणा ने मुख्य मुख्य अधिकार अपने अधिकार में रखकर सारे अधिकार आपको दिये। अधिकार मिलते ही आपने न्याय-सुधार किया। मिस्टर ट्रेंच को बुलाकर राज्य में नया सेटलमेंट जारी किया, मि० आयर्न्स को बुलाकर मारवाड़ जंकशन की तरफ रेल का काम जारी किया। महाराणा इन्टर मीडीयट कॉलेज बनाया, म्युनिसिपल्टी कायम की, शहर में बिजली की रोशनी की, नोबल स्कूल जारी किया, मादक प्रचार सुधारक सभा और शिशु हितकारिणी सभा कायम की, भामट का ज्यूडिशियल प्रबंध आदि कई सुधार कर प्रजा का दुख दूर कर संतोष दिया।

बिजोल्या की रियाया ने उपद्रव किया। वहां राजपूताने के एजेंट गवर्नर जनरल ओनरेबल मिस्टर हॉलेंड ने जाकर समझाया और बाद सेटलमेंट किया उसकी देखा देखी बेगम की रियाया ने भी सिर उठाया वहां फौज भेजकर शान्ति की।

आपने गद्दी विराजते ही अपने स्वर्गवासी पिता की यादगार में १ लाख रुपये नोबल स्कूल मे–राजपूतों के उन

लड़कों के लिये जो खर्चा वरदास्त नहीं कर सकते वोर्डिंग में दिये उसी में २५ हजार फिर पीछे से दिये। सूरजपोल वाहर अपने पिता की यादगार में २ लाख रुपया खर्च कर सराय वनाई, लगभग १॥ लाख रुपया देकर ब्राह्मणों के लिये श्रीफतहभूपाल संस्कृत पाठशाला व वोर्डिंग कायम किया और अपने सिंहासनारूढ़ होने की खुशी में १५ लाख रुपया जागीरदारों की वकायत माफ की, किसानों की छोटी छोटी कितनी लागते माफ की, कृषि स्कूल खोला और राय वहादुर पण्डित सर सुखदेव प्रसाद को अपना मुसाहिव आला मुकर्रर करके राज्य प्रवंध में नया सुधार किया केप्टन फील्ड को वुलाकर फौज का सुधार किया। सारी मेवाड़ में जनरल पुलिस कायम की, उमरावों को ज्यूडीशियल पावर देकर कलमवंदी का सुधार किया। चाकरी की एवज नकद वांध कर दशहरे व जन्म-उत्सव पर १५ व ३ दिन की चाकरी रखी। मेवाड़ में जंगलात का प्रवंध किया, खानों का महकमा कायम किया। आपके सुप्रवंध से खुश होकर गद्दी वैठने के छ महीना वाद ही सरकार ने आपको जी० सी० ऐस० आई० वनाया। और भोमट का सव प्रवन्ध जो, १०० वर्ष से गवर्नमेंट के अधीन था पीछा राज्य के सुपुर्द कर दिया आप जी० सी० एस० आई० का तमगा लेने दिल्ली गये। और वहां से लौटते हुए आगरा, फतहपुर सीकरी, कोटे होकर उदयपुर आये। आपके गद्दी विराजने पर कोटा, जयपुर, जोधपुर, और

किशनगढ के महाराजा मातमपुरसी के लिये उदयपुर आये।

आपके इतिहास में लिखने योग्य इस जमानह में यह है कि आपके पिता को विद्यमानता ही में आप हरद्वार महोदई अमावस्या के मेले पर गये वहां चादी का तुलादान कर आपने मद्य पीना छोड़ दिया। और जो विदेशी लोग पिता के समय में आश्रय पा रहे थे सबको उसी तरह पालन कर रहे हैं। और दौरे में बाहर जाते हैं वहा अपने पिता के समान स्त्रियों को एक अन्नी देते हैं। सरदार पासवानों को पातिवे पर भोजन कराते हैं। आपका प्रबन्ध ऐसा है कि मनुष्यों को यही मालूम होता है कि फतहसिंह जी का ही राज्य है।

भारतवर्ष की शासनप्रणाली में सुधार करने को राउन्ड टेबल कोन्फ्रेन्स विलायत में हुई। उसकी दूसरी कमेटी हुई तब सरकार ने आपके मुसाहिब आला सर सुखदेवप्रसाद को निमन्त्रण किया। उन्होंने वहा उदयपुर, जयपुर, जोधपुर तीनों राज्यों की तरफ से भाषण किया और शिमले नरेन्द्र मडल की कमेटी होकर विचार हुआ तब भी सर सुखदेव प्रसाद तीनों राज्यों का प्रतिनिधि हुआ विलायत में क्या उत्तर देना भाषण करना इसकी सलाह के लिये जयपुर महाराजा सवाई मानसिंह उनके मिनिस्टर अटल जी व जोधपुर के मिष्टर यग उदयपुर आये और सलाह कर गये। वि० स० १९८८ में लार्ड विलिंगडन वाइसराय उदयपुर आये और

विलिंगडन हॉस्पिटल की नींव डाली। इसी वर्ष फाल्गुन कृष्णा में नरेन्द्र मंडल के मौके से कुछ पहले वाईसराय से मिलने जाने का विचार था उस वक्त फाल्गुन कृष्णा ३० को आप की माता का देहान्त हो गया इसीलिये होली बाद जाना हुआ। इन दिनों में नरेन्द्र मंडल की कमेटियां हो रही थीं सब रईस वहां थे जोधपुर, कच्छ, जामनगर, कोटा, ध्रांगध्रा, आदि रईस आपसे मिलने आये। और १६० वर्ष से महाराणा अरिसिंह का चूक करने के कारण बूँदी के साथ मेवाड़ का व्यवहार बंद था और वैर चला आता था। इस वक्त कोटे महाराव जो आपके बहनोई हैं उनके विशेष आग्रह करने से बूँदी महाराव का कुसूर माफ कर आप मिले। वहां से लौट कर अजमेर आये वहां मेयो कालेज की कमेटी के आप प्रेसीडेण्ट थे लड़कों को इनाम दिया कालेज फंड में १ लाख रुपया दिया। अगले वर्ष भी आप ही प्रेसीडेण्ट मुकर्रर हुए।

अपने पिता के समान आपको भी तामीरात का बहुत शौक है। चित्तौड़ स्टेशन पर नया भूपाल महल बनाया। उदयपुर के महलों में सुधार कराया बागौर की हवेली में देशी गेस्ट हाउस बनाया। अंग्रेजी महमानों के लिये आनन्द-भवन बनाया। तालाब में जगनिवास जगमंदिरों का जीर्णोद्धार कराया, चित्तौड़ के बड़े कीर्त्तिस्तंभ का पुराने तर्ज का गुंबज नया बनवा कर जीर्णोद्धार कराया इस महाराणा कुंभा के बनवाये हुए कीर्त्तिस्तंभ की मरम्मत कराने के लिये

महाराणा साहब ने गवर्नमेन्ट हिन्द के बडे इञ्जीनियर को बुलाकर किस प्रकार मरम्मत की जावे राय ली क्योंकि इसमें सब देवताओं की मूर्त्तियां हैं खुदाई का काम बहुत बढ़िया है, कुतुबमीनार आदि दूसरे मीनार नीचे नींव से चौडे और ऊपर सिरे पर पतले हैं, परन्तु यह नीचे से छोटा और ऊपर फैला हुआ इस ढंग का एक ही है। गवर्नमेन्ट के इञ्जीनियरों ने इसके गिर्द लोहे के बगड लगाना तजवीज किया परन्तु मेवाड के मुरडा हीरालाल ने इसको उतार कर ठीक वैसा ही पहिले माफिक बना दिया। सूरजपोल बाहर नया महाराना कालेज ४ लाख खर्च कर बनाया। इस प्रकार महाराणा राजसिंह के बनाये हुए सर्वऋतु विलास तथा राजनगर के पहाडों के महलों का जीर्णोद्धार कराया, फीव्ड क्लब बनवाया। महासत्यों में अपने पिता की छत्री बनवाई और माता की छत्री का भी कार्य्य शुरु किया ६ वर्ष में ही लगभग १ करोड के ऊपर खर्च किया। और मावली से मारवाड तक रेल बनवाने में ७० लाख खर्च होगया पूरी होने तक १ करोड हो जायगे। इनकी माता चावडो जी ने उदयपुर स्टेशन पर ५० हजार रुपया लगाकर सराय बनाई। और १ लाख रुपया अलग रख कर जगदीश के मन्दिर में सदाव्रत जारी किया।

इनका यज्ञोपवीत संस्कार वि० सं० १९६४ में बडी धूमधाम से हुआ। प्रथम शादी वि० सं० १९६६ में मारवाड में आऊवे के ठाकुर प्रतापसिंह की बहिन से हुई परन्तु तीन

महीने बाद ही उनका देहान्त हो जाने से वि० सं० १६६७ में दूसरी शादी जयपुर में अचरोल के ठाकुर केसरीसिंह की लड़की से हुई। और तीसरी शादी वि० सं० १६८४ में मारवाड़ में खोडाल्ये के ठाकुर शिवनाथसिंह की लड़की से हुई।

आपके राज्यकाल में उदयपुर नगर में सब प्रकार से उन्नति हुई फतहसागर के पास फतहपुरा आबाद हो रहा है वहां विद्याभवन स्कूल बना है और इमारतें तरक्की पा रही हैं। भीलवाड़े में भूपालगंज आबाद हुआ और भी जगह २ उन्नति होती जाती है।

नाथद्वारे के गोस्वामी गोवर्द्धनलाल के लाल बाबा दामोदरलाल ने गत वर्ष वि० सं० १८८६ में नैनीताल जाकर दिल्ली की एक रंडी हंसा से शादी करली। इस पर सारे भारत की वल्लभ संप्रदाय पुष्टि मार्ग में भारी आन्दोलन होकर आपके पास प्रार्थनापत्र आये। नाथद्वारे की प्रजा ने हुल्लड़ मचाकर हंसा को निकाल दिया। और दामोदरलाल को सुधारने के लिये महाराणा से प्रार्थना की महाराणा ने गोस्वामी गोवर्द्धनलाल और उसके पुत्र दमोदारलाल को उदयपुर बुलाकर उनसे इकरार लिखवाया कि आयंदा हंसा से संबन्ध न रखें आदि। परन्तु गोकुल में अपने बालक पुत्र की बीलमा के बहाने से दामोदरलाल ने महाराणा से रुखसत हांसिल की और पीछा दिल्ली हंसा के पास चला गया। और कोशिश करने लगा कि हंसा को लेकर नाथद्वारे आवे। महाराणा ने

इश्तहार जारी कर दिया कि "बगैर महाराणा की इजाजत के दामोदरलाल मेवाड में न आने पावे।" इसपर गोवर्द्धन लाल गोस्वामी उदयपुर आया और महाराणा से प्रार्थना की महाराणा ने फरमाया कि हसा का छोड देवे तो भलेंई आने को इजाजत हो सकती है इसपर उसने अपने सलाहकार प० रमाकान्त मालवीय और मेवाड पुलिस के आई० इ० जी० पी० राठोड लक्ष्मणसिंह का रानीखेत दामोदरलाल का समझाने के लिये भेजा परन्तु वह हसा को छोडने पर रजामन्द न हुआ। इससे सन्तोष न हुआ तब गोवर्द्धनलाल खुद दिक्ष। होकर शिमले गया और दामोदरलाल को भी वहा बुलाया परन्तु अचानक गोवर्द्धनलाल का वहाँ देहान्त होगया। इस समय महाराणा ने नाथद्वारे पर प्रबन्ध कर बम्बई आदि सब जगह तार दिला दियां कि दामोदरलाल की कोई हुन्डी नहीं सकारें और वैष्णवों को हुकम दिया कि उनके प्रतिनिधि उदयपुर आकर अपनी सम्मति पेश करें। बम्बई, मन्द्रास, कलकत्ता अहमदाबाद आदि समस्त भारत के वेष्णवों के १६ प्रतिनिधि उदयपुर आये महाराणा ने गोवर्द्धनलाल के पौत्र गोविंदलाल जिनकी उमर लगभग ६ वर्ष की है (दामोदर लाल का पुत्र) नाथद्वारे की गद्दी पर गोस्वामी मुकर्रर करने का हुकम देकर दो आदमी राज की तरफ से वहा मुनसरम मुकरर कीये और एक वर्किंग कमेटी जिसमें दो राज के आदमी और ६ वैष्णव मुकर्रर कर नाथद्वारे का प्रबन्ध करने का हुकम दिया।

इन्होंने अपने पिता तथा महाराणा प्रतापसिंह का यश विख्यात करने स्मरण दिलाने के लिये बड़ोदे से फोलादकर और बम्बई से माथरे को बुलाकर चांदी पत्थर और ब्रोंज की मूर्तियां बनवाईं और शिव निवास महल, विक्टोरिया हॉल में रखी। और चित्तौड़ फतहप्रकास महल, उदयपुर में नई सराय फतहसिंह मेमोरियल में रखना तजवीज किया। और अपना बस्ट सहेलियों की बाड़ी में व नई सराय में दोनों के साथ रखना तजवीज किया।

नैपाल के वजीर महाराजा सर भीम शमशेर ने जंगबहादुर के पोते मोदजंग को यहां से नैपाल बुलाया और उसके साथ महाराणा के लिये एक हाथी, गैंड़ा, खुरखरी, कस्तूरी, महानारायण तैल जंगबहादुर के समय के बने हुए तुहफे पत्र के साथ भेजे। महाराणा ने भी पीछे मोद जंग और ददवाड़्या करणीदान के साथ यहां से दो घोड़े मय सोने के सामान के, एक तलवार, गुलाब का इत्र, एलबंब उदयपुर तस्वीरों का, अपनी चांदी की छोटी मूर्ति, फोटो आदि भेजी। भीम शमशेर के मरने पर उनके भाई जुध शमशेर हुए। उन्होंने भी पत्र व्यहार जारी रखा।

गत वर्ष में जोधपुर महाराज उमेदसिंह उदयपुर आये फिर यहां से चित्तौड़ गये वहां १४ दिन में चित्तौड़ व कुवाखेड़ा जिला में १४ शेरों का शिकार किया।

मेवाड में छोटे बडे कई मन्दिर हैं वहा लाखों रुपयों का जेवर है। इन महाराणा ने सबकी दुरस्ती कराई। श्री एकलिंगजी के कुँवरपदे में व गद्दी बैठने बाद बहुत से आभूषण भेट किये और अभी लगभग ४ लाख की सुवर्ण की हीरों से जडी हुई जलहरी और चांदी के घोर घट भेट किये।

यह बडे दयालु हर वक्त अपनी प्रजा की उन्नति चाहने वाले और जहा तक सभव हो प्राचीन मर्य्यादा पालने वाले राजा हैं। इस वक्त संसार की गति के साथ प्रायः सब राजा लोगों ने प्राचीन ठाट छोडकर नया ढग इख्तियार कर लिया है परन्तु इन्होंने तो अपना राजसी ठाट न छोडा। जहा कहीं बाहर जाते हैं स्पेशल गाडी से अपने पिता के समान २५० तीनसौ हमराहियों के साथ जाते हैं सफर में अपने पिता के समान सबको पात्ये पर जीमाना व स्त्रिया गायन करें उन्हें अन्नोयें देना जारी रखा है। यह बड़े श्रद्धालु हैं अभी गत फाल्गुन में दिल्ली गये वहा अपने जन्मोत्सव पर वाईसराय लार्ड विलींगडन और लेडी विलींगडन को अपने यहा बुलाये। दिल्ली से हरद्वार जाकर स्वय कुशावर्त पर अपने पिता और माता का श्राद्ध किया। आपके राज्यकाल में राज्य की बड़ी उन्नति की आशा है ईश्वर आपको दीर्घायु करे।



मेवाड़ के इतिहास की प्रसिद्ध लड़ाईयां



८ महारावल बापा काल भोज वि० सं० ७९१ ई० सन ७३४	राजा भान भोरी से चित्तौड़ लिया।
१३ खुमान दूसरे	बगदाद के खलीफा अलमामूँ को चित्तौड़ पर शिकस्त दी।
३५ सामन्त सिंह	गुजरात के राजा अजयपाल को शिकस्त दी नाडोल के कीतू चौहान ने सामन्त सिंह से आहड़ व मेवाड़ का राज्य छीन लिया।
३६ कुमार सिंह	कीतू चौहान से मेवाड़ पीछा लिया।
३९ जैत्रसिंह वि० सं० १२८० ई० सन् १२३२	सिंध की तरफ से आने वाले खयास खां को शिकस्त दी दिल्ली के सुलतान शमशुद्दीन अलतमश ने मेवाड़ पर हमला किया नागदा व आहड़ दोनों बरबाद हुए परन्तु सुल्तान को शिकस्त दी।

वि० सं० १२९९ ई० सन् १२४२	गुजरात के राजा त्रिभुवन नारायण को शिकस्त दी। नाडोल पर चढाई कर उसको बरबाद किया मालवे पर चढाई कर फतह किया और अर्थूणा बागड में मिलाया।
वि० स० १३०५ ई० सन् १२४८	दिल्ली के सुलतान नासिरुद्दीन महमद को शिकस्त दी।
४१ समरसिंह वि० स० १३५९ ई० सन् १२९९	दिल्ली के बादशाह अलाउद्दीन खिलजी के भाई उलग खा ने मेवाड पर चढाई की उसे शिकस्त दी।
४२ रतनसिंह वि० स० १३६० ई० सन् १३०३	दिल्ली के बादशाह अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड पर हमला कर किला ले लिया। यह चित्तौड का मशहूर पहला पद्मिनी का शाका हुआ।
४५ महाराणा अजयसिंह	इनके हुकुम से इनके भतीजे १४ वर्ष की उमर के हमीर सिंह मूंजा वाले छाका का सिर काट लाये।

४६ हमीरसिंह वि० सं० १३६८ ई० १३२६	चित्तौड़ का किला लिया महमूद तुगलक को सीगोली में शिकस्त देकर कैद किया मीणों से बूंदी जीत कर हाड़ा देवीसिंह को दी।
४७ खेत्र सिंह	हाड़ों से मांडलगढ़ लिया मालवे के सुलतान अमीशाह (दिलावर खां) को और ईडर के राव रणमल को कैद किया। बाकरौल (हमीरगढ़) के पास हुमायूं को शिकस्त दी।
४८ लाखा	बेराटगढ़ को बरबाद कर मेरों को सजा दी और मेरवाड़ा जीत कर बदनौर बसाया नागरचाल (शेखावाटी) को विजय किया गयासुद्दीन तुगलक को बदनौर के पास शिकस्त दी और काशी, प्रयाग, गया में हिन्दुओं पर से कर छुड़ाया।
४९ महाराणा मोकल	नागौर का फिरोज खां फौज लेकर चढ़ आया जोताई मुकाम

	पर लड़ाई हुई महाराणा को हार हुई फीरोज खां से दूसरी लड़ाई जावर में हुई फीरोजखां को शिकस्त दी।
५० महाराणा कुंभा वि० सं० १४४६ ई० १४३७	सारंगपुर में लड़ाई हुई सुलतान महमूद भाग कर माड़ू गया। महाराणा ने पीछा कर माड़ू घेर कर सुल्तान को कैद किया इस यादगार में चित्तौड़ पर बड़ा कीर्तिस्तंभ जयस्तम्भ बनाया। सिरोही पर फौज लेकर डोडिया नरसिंह को भेजा उसने सिरोही जीत कुछ इलाके मेवाड़ में मिलाये।
वि० सं० १४६८ ई० १४३६	बूंदी व सारा हाड़ोती गागरण तक जीता।
वि० सं० १४६५ ई० सन् १४३८	मंडोवर लिया यह १५ वर्ष तक रहा।
वि० सं० १४६६ ई० सन् १४४२	हाड़ोती विजय को उधर ही महाराणा को खबर मिली कि महमूद मालवा के बादशाह ने

कुभलगढ़ पर हमला किया किला दृढ़ था न ले सका, केलपाड़े में बाण माता जी की मूर्ति तोड़ी महाराणा एक दम इधर आये मांडलगढ़ के पास लड़ाई हुई महमूद हार कर मंदसौर गया। वहाँ भी महाराणा ने पीछा किया तब मांडू भाग गया।

वि० सं० १५०३ ई० सन् १४४६

में महमूद ने फिर मांडलगढ़ पर हमला किया शिकस्त खा कर भाग गया।

वि० सं० १५१२ ई० सन् १४५५

में महमूद ने मंदसौर ले लिया और मांडलगढ़ पर हमला किया बनासनदी पर लड़ाई हुई वहाँ उसकी शिकस्त हुई।

वि० सं० १५११ ई० सन् १४५५

में महमूद मेवाड़ पर आया और शाहजादे गयासुद्दीन को रणथंभोर भेजा हार हुई।

वि० सं० १५१२ ई० सन् १४५५

महाराणा ने शम्सखां की मदद पर नागौर पर हमला

	कर कब्जा कर लिया, मुजा-हीदखां को निकाल कर शम्सखां को वहां बिठाया वहीं गुजरात के सुल्तान कुतबुद्दीन ने महाराणा पर हमला किया पर शिकस्त खाकर जाना पडा।
वि० स० १५१३ ई० सन् १४५६	में सुल्तान कुतबुद्दीन खुद कुंभलगढ पर आया और आबू पर फौज भेजी दोनों जगह हार हुई।
वि० स० १५१३ ई० सन् १४५६	माडू के सुल्तान महमूद ने माडलगढ पर कब्जा कर लिया आबू के देवडों ने बगावत की। महाराणा ने नरसिंह डोडिये को फौज लेकर भेजा उसने सजा देकर देवडों को सीधे किये और आबू पर महल और तालाब बनाये।
वि० स० १५१४ ई० सन् १४५७	मालवा और गुजरात के दोनों बादशाहों ने मिलकर एक साथ दोनों ने मेवाड पर हमला किया गोडवाड में लडाई गुज-

रातों फौज से हुई पहले तो मेवाड़ी फौज को कुंभलगढ़ में लौटना पड़ा परन्तु पीछा हमला कर गुजरातियों को शिकस्त दी। सुनते ही महमूद मालवी मांडू चला गया।

वि० सं० १५१५ ई० सन् १४५८ — महमूद ने चित्तौड़ पर हमला किया परन्तु हारकर लौटना पड़ा उसके शाहजादे गयासुद्दीन ने मगरा व भीलवाड़े पर हमला किया परन्तु केसूँदी का किला लेकर लौट गया।

वि० सं० १५१८ ई० सन् १४६१ — महमूद ने (मेवाड़) आहड़ में डेरा किया शाहजादे को मुल्क लूटने भेजा और आप कुँभलगढ़ गया पर नाकामयाब होकर लौट गया, बूंदी हाड़ा मांडा और साडां ने उपद्रव किया महाराणा ने बूँदी छीन कर सजा दी और फौज खर्च लेकर माफी दी।

वि० सं० १५२४ ई० सन् १४६७ — नागौर में गोवध होने लगा महाराणा ने चढ़ाई कर किले

को बरबाद कर मसजिदें लुटवाईं मुसलमानों को मारकर गायें छुडाईं वहा से हनूमान की मूर्त्ति लाये। और कुम्भलगढ़ हनूमान पोल पर स्थापित की।

५१ उदयकर्ण वि० स० ५३० ई० सन् १४७३

रायमल ने जावर व दाडिमपुर पर उदयकर्ण को शिकस्त देकर मेवाड पर कब्जा कर उदयकर्ण को निकाल दिया।

५२ रायमल वि० स० १५३० ई० सन् १४७३

माडू का बादशाह गयासुद्दीन उदयकर्ण के लडके सहसमल की मदद पर चित्तौड पर चढ़ आया परन्तु शिकस्त खाकर गया। इस शर्मिन्दगी से गयासुद्दीन ने सेनापति जफरखा को फिर भेजा माडलगढ पर लडाई हुई वह हार कर भागा महाराणा ने मालवा पर चढाई की खेराबाद पास लडाई हुई मुसलमानों को शिकस्त दे महाराणा ने दन्ड लिया।

वि० सं० १५६० ई० सन् १५०३	मांडू के सुलतान नासीरुद्दीन ने चित्तौड़ पर हमला किया। गंभीरी नदी पर लड़ाई हुई सुल्तान हार कर पीछा मांडू गया।
५३ सांगा संग्रामसिंह वि० सं० १५७४ ई० सन् १५१७	इब्राहीम लोदी दिल्ली के बादशाह ने मेवाड़ पर चढ़ाई की हाड़ोती की सरहद पर खातोली के पास लड़ाई हुई इब्राहीम लोदी भाग निकला उसका शाहजादा कैद हुआ इस लड़ाई में महाराणा का बायां हाथ कट गया और घुटना लंगड़ा हो गया।
१५७५-१५१८	इब्राहीम लोदी ने फिर महाराणा पर फौज भेजी धौलपुर के पास लड़ाई हुई मुसलमान भागे महाराणा ने बयाना तक पीछा कर कुछ मालवे का हिस्सा लेलिया। चंदेरी के गौड़ राजा ने सिर उठाया महाराणा ने जगमल पंवार को भेजा वह

	चदेरी के राजा को सजा दे कैद कर लाया।
१५७२-१५१५	में ईडर के राव रायमल को ईडर पर बिठाया।
१५७६-१५१६	माडू के सुलतान महमूद ने महाराणा के मातहत मेदनीराय पर चढाई की महाराणा मेदनाराय की मदद पर गये गुजरात के बादशाह की फौज भी माडू के सुलतान की मदद पर शरीक थी गागरुन के पास लड़ाई हुई महाराणा महमूद को कैद कर चित्तौड लाये।
१५७७-१५२०	ईडर के राव रायमल की मदद पर महाराणा ने गुजरात पर चढाई की अहमद नगर को लूटा मसजिदें गिराई बीसलनगर को लूटा इस पर गुजरात के सुल्तान मुज्जफर ने १ लाख सवार देकर मलिक अय्याज को भेजा। मालवा

का सुल्तान महमूद भी इससे आ मिला मंदसौर से १२ कोस नाहसे आये महाराणा भी वहां पहुँचे मलिक अय्याज महाराणा से सुलह कर लौट गया। इन महाराणा ने रीवां के बघेलों को फतह किया।

१५८३-१५२७ बाबर से लड़ने को महाराणा रवाने हुए बयाना का किला लिया कनवा में बाबर की फौज को शिकस्त देकर २ मील पीछा कर बाबर के झंडे बाजे छीन लिये। सुलह की बातें शुरू हुई मगर बखेड़ा होने से न हुई।

१५८४-१५२७ लड़ाई पीछी शुरू हुई मगर सलहदी के दुश्मन से मिल जाने से चैत्र सुदि १४ ता० १७ मार्च को महाराणा की हार हुई।

५४ रतनसिंह: मालवे पर चढ़ाई की सारंगपुर

पहुँचे गुजरात के बहादुर शाह ने मालवे के सुल्तान महमूद को कैद कर लिया। और खरजी की घाटी में गुजरात का सुलतान बहादुरशाह महाराणा से मिला और महाराणा को ३० हाथी कई घोडे और १५०० जरदोजी खिलअत साथ वालों को दिये।

५५ विक्रमादित्य १५८९-१५९२ — गुजरात के बादशाह बहादुर शाह ने चित्तोड पर चढाई की उसको कुछ देकर सुलह कर लौटाया।

१५९२-१५९५ — बहादुरशाह ने फिर चित्तोड पर हमला किया भारी लडाई हुई यह चित्तोड का मशहूर दूसरा शाका हुआ बहादुर शाह ने किला लेलिया। मंदसौर पास हुमायू (दिल्ली) से बहादुरशाह हार कर भागा तब मेवाड वालों ने पीछा चित्तोड ले लिया।

५६ उदयसिंह वनवीर १५९७–१५४०	उदयसिंह ने कुंभलगढ़ से चढ़ाई कर मावली, नाणा में वनवीर की फौज को शिकस्त दे कर चित्तौड़ घेर लिया और इसी साल चित्तौड़ पर कब्ज़ा कर लिया वनवीर भाग गया इसके कुछ अर्से बाद यह महाराणा गुड़े जाकर मारवाड़ के राव मालदेव की सगाई की हुई कन्या की शादी कर लाये। मालदेव ने कुंभलगढ़ पर हमला किया पर हार कर गया।
वि० सं० १६१२ ई० सन् १५५५	अजमेर के पठान हाजीखां को मदद दी परन्तु बाद बेसमझी से बिगाड़ होने पर हरमाड़े के मुकाम पर लड़ाई हुई महाराणा की हार हुई।
वि० सं० १६१६ ई० १५५९	उदयपुर राजधानी कायम हुई।
वि० सं० १६२४–१५६८	अकबर ने चित्तौड़ का किला लिया ६ महीने घेरे रहा यह तीसरा मशहूर शाका हुआ।

	लगभग ३६००० मनुष्य मारे गये।
५७ प्रतापसिंह प्रथम— वि० स० १६३३ सन १५७६	हल्दी घाटी की मशहूर लड़ाई हुई अकबर के सेनापति आमेर के कुँवर मानसिंह की शाही फौज को भगा कर महा राणा लड़ाई में से निकल आये। अकबर बादशाह खुद गोगुन्द आया और महाराणा पर फौज भेजी मगर शिकस्त खाकर आई ६ माह तक बाद- शाह इधर रहा आखिर लौट गया। महाराणा ने शाही थानों पर हमला कर उठा दिये। फिर बादशाह ने फोज भेजी पर कामयाबी न हुई और महाराणा ने (खानखाना) मिर्जाखा की औरतों आदि को गिरफ्तार करली।
वि० स० १६३५ ई० १५७८	शाहबाजखा ने कुमलगढ़ लिया। शाहबाज खा के लौटने पर महाराणा ने मालवे पर

	फौज भेज कर लूटा मेवाड़ में से शाही थाने पीछे उठा दिये।
१६३७–१५६०	इसी अर्से में डूंगरपुर-बाँसवाड़े पर महाराणा ने फौज भेजी सोम नदी पर लड़ाई हुई दोनों को मातहत किया।
१६३७–१५८०	शाहबाजखां फिर मेवाड़ पर आया और थाने बिठा गया।
१६४०–१५८३	राजा जगन्नाथ कछवाहा शाही फौज लेकर मेवाड़ में आया कामयाबी नहीं हुई।
१६४३–१५८६	चित्तौड़ और मांडलगढ़ को छोड़ कर महाराणा ने सब मेवाड़ पर कब्जा कर लिया।
" "	मानसिंह और जगन्नाथ का बदला लेने के लिये आमेर के इलाके पर चढ़ाई कर महाराणा ने मालपुरा लूटा।
५८ अमरसिंह प्रथम १६५३–१५९७	महाराणा ने मेवाड़ में शाही थाने को उठाने की तैयारी की इस पर बादशाह अकबर

खुद उदयपुर की तरफ आया महाराणा ने जगह २ मुकाबला किया। और बादशाही परगने लूट कर पहाड़ों में चले गये। बादशाह शाहजादे सलीम और कुँवर मानसिंह को अजमेर में छोड़कर दक्षिण में चले गये शाहजादा भी थाने बैठा कर आगरे की तरफ गया।

वि० सं० १६५७ ई० १६००	महाराणा ने ऊठाला पर हमला कर यहा का गढ लिया बाद बागोर, माडल वगैरह के थाने उठाते हुए मालपुरे गये। वहा लूट कर मालपुरे से पीछे उदयपुर आये। मिर्जा शाहरुख को मेवाड की तरफ भेजा।
वि० सं० १६६२–१६०५ ई०	जहांगीर ने तख्त पर बैठ कर शाहजादे परवेज को मेवाड पर भेजा शाहजादे ने चित्तौड पर सगर को राणा बनाया और आप उदयपुर बढा।

१६६३-१६०६ — में शाहजादे परवेज पर ऊंटाला और देवारी के बीच महाराणा ने हमला किया शाहजादा भागकर अजमेर गया।

१६६५-१६०८ — महावतखां मेवाड़ में आया ऊंटाले के थाने पर रावत मेघसिंह ने धोखा देकर हमला किया वह भाग गया और मेघसिंह ने उसका सामान लूट लिया यह सुन मेवाड़ में से सब थानेदार भाग गये। सिर्फ चित्तौड़ मांडलगढ़ के रह गये।

१६६८-१६११ — अब्दुलाखां मेवाड़ में आया उससे भी कुछ न हुआ। कुँवर कर्णसिंह ने नाडोल के थाने पर हमला किया। गुजरात से शाही खजाना आगरे जा रहा था उसको लूटने के लिये कुँवर गये पर खजाना निकल गया था कुँवर पीछे आरहे थे रास्ते में थानेदार भाटी गोविंददास

ने कुँवर पर हमला किया खूब लड़ाई हुई बाद कुँवर पहाड़ों में लौट आये दोनों तरफ के बहुत से मारे गये।

वि० १६६८ ई० १६११ — राणपुरा की घाटी में अब्दुल्ला ने राजपूतों पर हमला किया। राजपूतों ने बुरी तरह से उसको हराया।

१६७०-१६१३ सन — बादशाह खुद अजमेर आये और शाहजादा खुर्रम को मेवाड़ में भेजा वि० १६७१ में कुँवर

वि० सं० १६७१ — कर्णसिंह ने मालवे में सिरोंज तक हमला किया मगर आखिर में १६७१-१६१५ में सुलह

१६७१ १६१५ — हुई कुँवर कर्णसिंह शाहजादे के साथ दिल्ली गये चित्तौड़ व कुल मेवाड़ महाराणा के कब्जे में आई।

५६ कर्णसिंह — शाहजादा खुर्रम अपने बाप शाहजहां से बागी होकर उदयपुर आया उसको जग मन्दिर में शरण रखा।

६० जगतसिंह प्रथम वि० १६८५ ई० सन् १६२८	में देवलया के रावत जसवंत-सिंह को उदयपुर बुलाकर चम्पा बाग में मरवाया डूंगरपुर पर फ़ौज भेजकर बरबाद किया। सिरोही पर फ़ौज भेजकर सजा दी इलाका लूटा नाना वालीस का इलाका छीन लिया। बांसवाड़े पर फौज भेज कर मुल्क को बरबाद किया और २ लाख जुर्माना लिया।
६१ राजसिंह प्रथम वि० स० १७११ ई० सन् १६५४	शाहजहाँ ने मोलवी सादुल्लाखां वज़ीर को भेजकर चित्तौड़ के किले की मरम्मत गिराई।
१७१५-१६५८	महाराणा ने दरीबा, मांडलगढ़, बनेड़े, शाहपुरे, जहाजपुर, सावर, फुलिया, केकड़ी, पर कब्जा कर जुर्माना लिया मालपुरे पहुँचे। वहां ९ दिन तक लूट की टोड़ा पर फौज भेज जुर्माना लिया। टोंक, सांभर, लालसोट, और चाटसू पर हमला कर जुर्माना लिया।

१७१६-१६५९	बासवाड़े पर फोज भेज जुर्माना लिया १ लाख १० गाव देशग्रण लिया। देवल्ये पर फौज भेजी ५० हजार रुपया ७ हाथी जुर्माना लिया डूँगरपुर को भी मातहत किया।
१७१८-१६६२	गोकुल में औरंगजब के जुलम से निकले हुए श्रीनाथजी का मेवाड़ में बुलाया द्वारकानाथ जी आदि भी आये। जोधपुर के महाराज अजीतसिंह को मेवाड़ में शरण रखा।
१७१९-१६६२	मेवल के पहाड़ी भीलो ने सिर उठाया उनकी पाल बरबाद कर सजा दी उस इलाके को जागीरो में सरदारों को दिया। सिरोही पर फौज भेजकर १ लाख रुपया और ७५गाव लिये।
वि० १७३६ १६८० सन्	में औरंगजेब ने मेवाड़ पर चढ़ाई की। हसन कुलीखा को उदयपुर भेजा कामयाब न हुआ

पीछा लौट गया। बादशाह खुद देवारी आया माहाराणा ने हमला कर भगाया डेरे वगैरह छीन लिये अकबर को छोड़कर बादशाह चित्तौड़ रवाना हुआ।

अकबर ने उदयपुर के मन्दिरों को नुकसान पहुँचाया। चीरवा के घाटे पर झाला प्रतापसिंह और भदेसर के वल्लों ने हमला किया, शाही हाथी छीने हसनकुलीखां को गोराणा की नाल में खूब पीटा। कुँवर भीमसिंह ने सूरत तक गुजरात को खूब लूटा, १ बड़ी ३०० छोटी मसजिदें गिराईं कुँवर जयसिंह ने चित्तौड़ के पास शाहजादे अकबर पर हमला कर हाथी, घोड़े नक्कारे डेरे छीन लिये वह भगकर अजमेर गया। राठौड़ गोपीनाथ कुँवर भीमसिंह ने नाडोल के थाने

	पर हमला किया। ठाकुर सावलदास राठौड़ ने अजमेर का रास्ता रोक कर रुहेलाखां पर हमला किया लड़ाई हुई। रुहल्लाखां भागकर अजमेर गया।
६२ जयसिंह वि० १७३८ ई० सन् १६८१	में शहजादे आजम से सुलह हुई
६३ अमरसिंह द्वितीय वि० १७५६-१७६६	डूंगरपुर, बाँसवाड़ा देवल्या पर फौज भेजी सोमनदी पर लड़ाई हुई बाद जुर्माना लेकर मातहत किया जोधपुर और जयपुर के महाराजा को फौज देकर उनके इलाके पीछे दिलाये।
६४ संग्रामसिंह द्वितीय वि० सं० १७६८ ई० १७११	हुरड़ा के पास खारी नदी पर रणबाजखां से लड़ाई हुई बांदनवाड़ तक शाही फौज को पीछी हटाई यहां रणबाजखां मारा गया। रामपुर पर फौज भेजकर कब्जा किया आधा इलाका खालसा किया और

आधा राव गोपालसिंह को दिया। ईडर पर फौज भेजकर महाराजा अजीतसिंह (जोधपुर) के लड़के अणदसिंह रायसिंह को कैद कर उदयपुर बुलाये फिर पालपोला पहले के राजा की संतान को ईडर अहमद नगर, रायसिंह, अणदसिंह को दिया और कुछ इलाका मेवाड़ में मिलाया।

६५ जगतसिंह द्वितीय वि० सं० १७९२ ई० सन् १७३५

शाहपुरे पर चढ़ाई कर राजा उमेदसिंह से १ लाख रुपया जुर्माना लिया। भाणेज माधोसिंह को जयपुर की गद्दी बिठाने के लिये राज महल की चढ़ाई में महाराणा की हार हुई ईश्वरसिंह ने सेंधिया को मदद पर बुलाया।

१८०७—१७५०

महाराणा ने हुलकर को बुला कर, जयपुर पर फौज भेजी ईश्वरसिंह जहर खाकर मर गया। माधोसिंह को जयपुर

	की गद्दी पर बिठाया। फौज खर्च ८० लाख की एवज में रामपुरा हुल्कर को दिया।
६६ प्रतापसिंह द्वितीय– ६७ राजसिंह द्वितीय– १८१३–ई० १७५६	शाहपुरा के राजा उमेदसिंह ने बनेड़ा छीन लिया उस पर फौज भेजकर बनेड़ा पीछा राजा रायसिंह को दिलाया।
६८ अरिसिंह तृतीय १८१५–१७६१	माधवराव सैंधिया से लड़ने को फौज उज्जैन भेजी इस लड़ाई के अन्त में महाराणा की हार हुई।
वि० १८२६ ई० सन् १७६९	माधवराव सैंधिया ने उदयपुर के घेरा लगाया सैंधिया को ६० लाख रुपया देकर सुलह की इनमें ३३ लाख नकद जेवर जवाहरात दिये बकाया की एवज जावद नीमच आदि इलाके गिरवी रखे। टोपला गाव में टोपल मगरी के पास महापुरुषों और बागी सरदारों

को शिकस्त दी। महाराज बार्गासिंह ने गोड़वाड़ पर से रतनसिंह का कब्जा उठाया। महाराणा ने जोधपुर महाराज को नाथद्वारे फौज रखने की शर्त पर गोड़वाड़ दी। अब फौज की जरूरत न होगी तो गोड़वाड़ पीछी ले लेना परन्तु गोड़वाड़ पीछी न आई। गगार में महापुरुषों को शिकस्त दी। आटुण पर फौजकशी कर सजा दी। खारी नदी पर समरू से लड़ाई हुई परन्तु किसनगढ़ के राजा समरू को महाराणा के पास ले आया। महाराणा अमरगढ़ गये वहां शिकार में बूँदी के युवराज अजीतसिंह ने धोखे से महाराणा को घुड़दौड़ में बर्छे से मार डाला।

६९ हमीरसिंह द्वितीय

माधवराव सेंधिया को बुलाकर बेगम के रावत को सजा

दिलाई संधिया ने बेगम के
राजत से रतनगढ, सांगोलो,
आदि फौज खर्च के एवज
गिरवी रख लिये । कुँवर
भीमसिंह ने चित्तोड़गढ़ के
पास संधिया के जमाई चेर
जीताकपीर को शिकस्त दी।
महाराणा ने रीछेड़ के पास
फितूरी रतनसिंह के मददगार
बागी सरदारों को शिकस्त दी।

७। भीमसिंह वि० १ ० १८४८ ई० १७८७ — मैं महाराणा की फौज ने मरहटों से गये हुए इलाके ले लिये। परन्तु हडक्या खाल की लड़ाई में महाराणा की हार हुई और मरहटो ने इलाके पीछे ले लिये।

१८४६-१७६२ — कुंभलगढ़ पर कब्जा कर फितूरी रतनसिंह को वहां से निकाला।

१८५०-१७६४ — डूँगरपुर बांसवाड़ा प्रतापगढ़ पर चढ़ाई कर ३ लाख रुपया तीनों से अलग २ जुर्माना

लियो । प्रतापगढ़ से धरयावद
का ठिकाना पीछा लिया ।

१८५८-१८०२ ई० — जसवंत राव हुलकर मेवाड़ में आया नाथद्वारे आया ३ लाख रुपया गोस्वामी से जुर्माने का लिया । मन्दिर को लूटने लगा महाराणा ने फौज भेजकर श्रीनाथ जी को उदयपुर बुलाये । बाद घसार ले गये
६५ ज
सं० १
अमन होने पर पीछे नाथद्वारे गये ।

वि० सं० १८५८ ई० सन् १८०२ — चूंडावतों ने वालेराव को कैद कर लिया उसको छुड़ा ने के लिये जालिमसिंह झाला ने वेजा के घाटे की तरफ से हमला किया. पांच दिन तक
६८
लड़ाई हुई, वालेराव को छुड़ा कर जालमसिंह ने फौज खर्च के एवज जहाजपुर ले लिया ।

१८६६-१८०६ — नवाब अमीरखां उदयपुर आया उत्पात किया फिर अपने

	दामाद जमशेदखां को यहां छोड़ गया यह जमाना जमशेद गिर्दी के नाम से मशहूर है।
१८६८-१८१२	नवाब दिलेरखां लूट मार करता हुआ आया कुँवर अमर सिंह चित्तौड़ थे वहा उन्होंने उसे शिकस्त दी।
१८७४-१८१८	ओनरेबल ईस्टइंडिया कम्पनी से अहदनामा हुआ मेवाड़ में अमन हुआ। कप्तान टाड को फौज लेकर मेरवाड़े पर भेजा उन्होंने सरकार की फौज से मिलकर इन्तजाम किया। कप्तान काफ को मगरा, भोमट में भेजा वहां उन्होंने इन्तजाम किया।
७१ जवानसिंह	
७२ सरदार सिंह वि० सं० १८९५ ई० सन् १८३८	भोमट में उपद्रव हुआ खेरवाड़े में छावनी कायम कर भीलकोर पल्टन भर्ती की गई।

७३ स्वरूपसिंह वि० सं० १९१४ ई० सन् १८५७	भारतवर्ष में गदर हुआ महाराणा ने नीमच से आये हुए ४० अंग्रेज़ों को जगमन्दिर में पनाह दी। और पोलिटिकल एजंट कप्तान सावर को फौजी मदद दी कप्तान सावर ने नीबाहेड़ा पर कब्जा किया वह मेवाड़ के सिपुर्द हुआ तीन वर्ष बाद सरकार ने पीछा टोंक को दिलाया। गदर के समय फौज भेजकर कोटा के महाराव को मदद दी।
७४ शम्भूसिंह	
७५ सज्जनसिंह वि० सं० १९३३ ई० सन् १८७६	नाथद्वारे के गोस्वामी गिरधरलाल को उसकी सर्कशी के कारण खारिज कर उसके लाल बाबा गोवर्द्धनलाल को नाथद्वारे का गोस्वामी बनाया।
७६ फतहसिंह	
७७ भूपालसिंह	



॥ श्री ॥

(शुद्धि-पत्र)



इस पुस्तक में कई अशुद्धियें रह गई हैं। उन सभों को शुद्धि-पत्र में इस समय न देकर केवल वे ही शब्द दिये गये हैं जिनका सम्बन्ध नहीं जुड़ता अथवा अर्थ में गड़बड़ी होती है। दूसरे संस्करण में यह त्रुटि निकल दी जायगी। पाठकगण इस समय क्षमा करें।

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	कैफियत
धापा	थापा	१	७	
का	को	"	१५	
श्यामदास	श्यामलदास	२	५	
हुकुम	हुक्म	"	७	
कपतान	कप्तान	"	१८	
घनास	रनास	७	४	
तानदा	तामदा	६	१२	
उच्य	उच्च	१०	४	
धाजी	याजी	"	५	
हिन्दुआसूर्य्य	हिन्दुआसूर्य	"	६	
रापें	रापे	"	८	

७३ स्त्र	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
१६१४	वेटी	बेटी	१२	१०
	टाडं	टॉड्	"	११
	कनकसैन	कनकसेन	"	१२
	सौराष्ट्र	सौराष्ट्र	"	"
	वल्लभा	वल्लभी	"	१३
	शिलादित्य	शीलादित्य	"	१७
	अंवाभवानी	अंबाभवानी	"	१८
	नागदित्य	नागादित्य	१३	१०
	सॉप	साँप	"	१८
	वहता	बहता	१४	५
७४	हारोत	हारीतराशि	"	६
७५	मुकावला	मुकाबला	"	१७
६०	वढ	बढ़	"	२०
	ना ादि	नागदे	१५	८
	सन्यस्त	सन्यास	"	९
	ऐकलिंगजी	एकलिंगजी	"	११
७६	वढा	बढ़ा	"	१२
७७	का	के	"	१४
	गुरू	गुरु	"	१८
	गुंसाईं	गुसाईं	१५	२०
	मोजोला	भोजेला	"	२२

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	कैफियत
यही	यह	१६	७	
भर्तृ	भर्तृभट्ट	"	११	
अलभाम्	अलभामू	"	१७	
अहाडा	अहाड	१७	३	
सन् ७६१	सन् ६६१	"	५	
अन्हिलवाडा	अनहिलवाडा	"	८	
सोलखियों	सोलंखियों	"	१०	
चालुक्य	चोलुक्य	"	१३	
जागीरी	जागीर	"	१४	
राज्यपीपला	राजपीपला	"	१६	
शुचिवर्म	शुचिवर्मा	१८	३	
नरवर्म	नरवर्मा	"		
कीर्तिवर्म	कीर्तिवर्मा	"	"	
योगराज	योगराज	"	"	
वैरीसिंह	वैरिसिंह	"	३	
घ	०	"	१०	
शिशोदे	शीशोदे	"	२	
ए	गुए	१६	२	
शिशोदिया	शीशोदिया	"	७	
आर	और	"	१२	
डूगरपुर	डूँगरपुर	"	१७	
समन्तसिंह	सामन्तसिंह	"	१६	

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
संमरसिंह	समरसिंह	१९	२०
पितृक	पैत्रिक	२०	५
जैत्रसिं	जैत्रसिंह	"	११
अलतमश	अल्तमश	"	१६
शहावुद्दीन	शहाबुद्दीन	२२	४
महावल	महारावल	"	७
पद्मनी	पद्मिनी	"	११
रूपवान्	रूपवती	"	"
वहादुरी	बहादुरी	"	१५
किवाड़	किवाड़	"	१८
सूवेदार	सुबेदार	२३	२
गभीरी	गंभीरी	"	३
प्रतिविंव	प्रतिबिंब	"	१५
आदमा	आदमी	"	१७
वाहर	बाहर	"	२०
वलिदान	बलिदान	२४	२१
ख्याति	ख्यात	२५	१०
वाणमाता	बाणमाता	"	१४
सजनसिंह	सज्जनसिंह	२६	५
महारणा	महाराणा	"	१३
केशरी	केसरी	"	२०

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	कैफियत
मुठोल	मुदोल	२७	१	
दाडाया	दौड़ाया	"	७	
गोफन	गोफण	"	११	
लवाजमें	लवाजमें	२८	३	
तग	तग	"	६	
गाडवाड	गोडवाड	"	१२	
तुगलग	तुगलक	२६	२	
रणथमोर	रणथमोर	"	५	
दुदाद	दुदाड़	"	६	
छधन	छप्पन	३०	७	
माहू	शाहू	"	"	
दिल्ली फौज	दिल्ली की फौज	"	१३	
रास्त	रास्ते	३१	६	
रावासह	रावसिंह	"	७	
रढमल	रढमल	"	१४	
अउजा	अउआ	३२	५	
देवल्ये	देवलिया प्रतापगढ़	३३	२	
पास षानिबा	पासबानिया	"	११	
मेराव	मेरा	"	१२	
बघेला	बाघेला	"	१४	
३ शिव	३ शिवा के दुवावत	"	१६	

७३

१६१

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
२ क्षेमकर्ण	क्षेमकर्ण के वंश में देवलिया परतापगढ़	३३	१६
का	को	,,	२०
हुए	हुए	३४	५
क	के	३५	६
तव	तव	,,	११
डोलिया	डोडिया	,,	२०
मागरूण	गागरूण	३६	१
७४ रहाडोती	हाडोती	,,	२
७५ साभाग्यदेवी	सौभाग्यदेवी	,,	७
६० लूणत	लूणा	,,	२०
ता	तो	३७	६
वाणामाता	वाणमाता	,,	७
शमस्खां	शम्सखां	,,	२२
मद्दाराणा	महाराणा	३८	४
कुतुबुद्दीन	कुतबुद्दीन	,,	५
साना	खानो	,,	१०
साडा	सांडा	३९	१४
गोबध	गोवध	,,	१९
लगढ़	कुम्भलगढ़	४०	५
लेविन	लेकिन	,,	,,

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	कैफियत
का	०	४०	२०	
सहयता	सहायता	,,	,,	
के	का	,,	२१	
आमेर	आमेर	,,	२२	
वि० सं० १६२५	वि० सं० १५२५	४१	४	
मामदेव	मामादेव	,,	५	
जेतसिंह	जैतसिंह	,,	८	
छेत्रसिंह	खेत्रसिंह	,,	,,	
मडवीक	मंडलीक	,,	१०	
एकलिंगमहालय	एकलिंगमाहात्म्य	,,	१२	
हिंदुसुरत्रण	हिन्दु सुरत्राण	,,	१७	
विरुद्ध	विरुद	,,	२१	
पत	पद	४२	१	
देवडो	देवड़ों	,,	,,	
कोरे दिया	को देदिया	,,	२	
खेमकर्ण	खींमकर्ण	,,	७	
जयमल	रायमल	,,	११	
बीकानेर माडू	बीकानेर से मांडू	,,	१४	
-उदयकर्ण इस पर राजी हो गये।	०	,,	१७	
देव का	देव की	,,	१८	

	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	दै.नियत
७३ १६१					
	नादरमगरे	नादरमगरे	४३	१२	
	तुरत	तुरंत	४५	१	
	निष्फिक	वेफिक	४६	१	
	काटल	कांटल	,,	४	
	जावर	जावर गांव	४७	५	
	को	०	,,	१७	
	कुसूर	कसूर	,,	२०	
	अंचला	आंचल	४८	१३	
	म	में	,,	१६	
	विश्वाश	विश्वास	,,	१८	
७४	उडप्पा	उडंग्या	५०	३	
७५	परवतसर	पर्वतसर	,,	६	
६०	दी	लोदी	,,	२१	
	चैत्रवदी	चैत्रवदी १	५१	८	
	निजाम मुलमुल्क	निजामुलमुल्क	,,	११	
७	मैंदनीराय	मेदनीराय	,,	१८	
९	आघाराज्य	आंधाराज्य	५२	६	
	अप्पाज	अय्याज	,,	२२	
	वरवाद	वरबाद	५३	२	
	चम्पानेर	चांपानेर	,,	६	
	वावर	वाबर	,,	१०	

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	कैफियत
चाद्आ	चाद्खा	५३	१५	
इब्राहाम खा	इब्राहीम खा	,,	,,	
छुके	छुक्के	,,	२०	
तो पखाने	तोपखाने	५४	८	
मिल	मिला	,,	१३	
लोधी	लोदी	५५	२	
मेडतिया	मेडतिया	,,	४	
मणिकचद्र	माणिकचद्र	,,	६	
मेवानी	मेवाती	,,	१४	
मेडल्या	मेडत्या	,,	१७	
रोव	रोब	५६	४	
चदेरी	चदेरी	,,	५	
मीरायाई	मीराबाई	५७	८	
नेमहा राणा	ने महाराणा	,,	१६	
ये	यह	५८	२	
इतने	इतना	५६	६	
वीकाखोह	बीकाखोह	,,	१०	
घारी	धारी	,,	१२	
सलु वर	सलूँबर	६१	१	
बीजोरया	बीजोल्यां	,,	३	
देपुराने	देपुरा ने	,,	१६	

७३

	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	कैफियत
६६१					
	तोपखान	तोपखाना	६२	१२	
	०	की	,,	२१	
	के	उनके	,,	,,	
	नागरेचणजी	नागरेचाजी	६३	१७	
	भादों	भादों	,,	२०	
	कटारगड़	कटारगढ़	६४	५	
	न	ने	,,	६	
	शक्तिासह	शक्तिसिंह	६६	२	
	ड़ेगे	लड़ेंगे	,,	१४	
७४	सुर	सुरंग	६७	८	
७५	इखतियार खां	इख्तियार खां	,,	१०	
६०	मेरसद	में रसद	६८	१३	
	कर	करने	,,	१४	
	आर्थात	अर्थात	,,	१६	
	डाले	डालीं	६९	१०	
७	साहि । खान	साहिब खान	,,	१४	
५	शराक था	शरीक थी	,,	१५	
	हाकर	होकर	,,	१६	
	हाथि ।ों	हाथियों	,,	,,	
	०४७४॥	६७२॥	,,	,,	
	आंबेर	आंबेर	७०	३	
			,,	१०	

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ पंक्ति	दिप्पणी
पिडवाडा	पिंडवाडा	७८ ७	
थे करते	करते थे	,, २१	
पिडोला	पीछोला	७२ १४	
जाहाजपुर	जहाजपुर	७३ ११	
का	की	,, १८	
कमनोर	कमलोर	७४ ८	
दाया	होर्थी	,, २४	
इतिहासिक	ऐतिहासिक	७६ २३	
लिखा	लिखी	,, ,,	
ग्याल	ग्याल	७७ ६	
कोल्याय	कोल्यायी	,, २८	
पिंडव	पिंड०	७८ १२	
गैब्यवों	गैवदो	८० १८	
हम	० ०	८०	
सरीरा जाल	सलीलाजोल	८४ ३	
न्या लियर	ग्वालियर	,, ११	
राटोड	राठोड़	,, १४	
नामवदा पूर्ण	नर्मदापूर्ण	१८	
मारवाड	मारवाड	८४ १८	
पदनावर	बदनावर	८६ ३	
का	को	,, १०३	

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	कैफियत
र जा	सज़ा	८६	२२	
वहावड़	चावंड	,,	,,	
चामुडा	चामुंडा	८७	२	
महाराण	महाराणा	,,	४	
मेवाड़ा में	मेवाड़ में	,,	१९	
अगर		८८	१२	दुबारा छपगया
मगाऊ	मंगाऊँ	,,	१३	
वायण	बयण	,,	१६	
दिसां	दिस	,,	१७	
ऊत	उत	,,	,,	
इन	इण	,,	१९	
कमद	कमध	८९	२	
सह	सह	,,	४	
वेणा	वेण	,,	५	
च ढ़ाइयों	चढ़ाइयों	८९	१६	
कुवरानी	कुँवरानी	९०	८	
ने	०	,,	१८	शिवाय छपगया
ऊप२	ऊपर	,,	२२	
स्वगवास	स्वर्गवास	९२	१	
जी	जीतो	९२	११	
चोंड़ावत	चूँड़ावत	९३	३	

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ पंक्ति	कैफियत
उडाने	उठाने	६३ ६	
किवाडे	किंवाड	„ ११	
वार	पवार	६४ ४	
फिवाड़े	किवाड	„ १०	
परन्तु	परन्तु	„ „	
मिजा	मिर्जा	६५ ८	
नेमहावत खां	ने महावतखा	„ १८	
याने	थाने	„ „	
उडाला	ऊँडाला	„ १६	
भाद्राजूल	भाद्राजन	६७ १	
जिसभे	जिसमें	„ २	
अब्दुलखां	अब्दुल्लाखां	„ ४	
मन्भनदास	मन्मन दास	६८ ८	
परवेजा	परवेज	„ १३	
भा	भी	„ ११	
भाणसारगदेनोत	भाण सारगदेवोत	„ १५	
घघोरे	घघेरा	६६ ८	
यिकट	फिकर	„ ११	
खुर्म	खुर्रम	१०० ५	
घारदा	थारदा	„ १६	
थामत	कीमत	„ २२	

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
पीछे	पीछा	१०२	११
ेग	वेगूँ	,,	१२
चोटी	छोटी	१०३	१५
छत्रशाली	चत्रशाली	,,	१५
एक लिंगगढ़	एकलिंगगढ़	,,	१६
इन्हाने	इन्होंने	,,	२०
शर्कशी	सर्कशी	१०४	१७
फौज	फौज ने	१०५	२
सोरूँजी	सोरों	,,	१४
छुप्पन	छपन	,,	७
जगननाथ पुरी	जगन्नाथपुरी	१०७	२
शाहजांह	शाहजहां	१०८	१५
सादुलाखां	साहुलाखां	१०९	४
६० रुपये	६००००) रुपये	,,	१०
लालसाट	लालसोट	,,	१२
ईकार	इकरार	,,	१४
वदि ६५	वदि ६	११०	१
सिसादिया	शीशोदिया	,,	३
बस.वड़े	बाँसवाड़े	,,	१२
हरीसिंह	हरिसिंह	,,	,,
मिलन	मिलने	,,	१६

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ पंक्ति	कैफियत
मीडर	माडर	,, १८	
का	को	,, ,,	
अंगीकार	स्वीकार	,, २२	
पुष्टी में मार्ग	पुष्टि मार्ग में	१११ ४	
पैसे	जैसे	,, १०	
शत्र	शत्रु	११२ ५	
आसोटीया	आसोट्या	,, २१	
चापा पासणी	चापासणी	११३ ३	
जाजया	जजिया	,, १०	
नरदीन	नूरदीन	११४ १७	
का	की	,, १८	
निकले	निकल	११५ ८	
कहना	करना	११६ १०	
टिपारे	पिटारे	११७ ६	
मोवड	मेवाड	११८ ६	
हुली	अली	,, १८	
लिया	ली	११६ ,,	
कँयर	कुँवर	१२० १७	
गंगादास	गगदास	१२१ ५	
बेगू	बेगूं	,, ७	
[illegible]	सिरोपाव	१२३ १	

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ पंक्ति	कैफियत
उदपुर	उदयपुर	,, ५	
यह	यह बात	,, १४	
यनेड़ा	चनेड़ा	१२४ २	
मोजम	आजम	,, १४	
किर	फिर	,, १६	
शजादा	शाहजादा	१२५ ६	
जसनगर	जयनगर	१२६ १	
घूडावत	चूँडावत	१२७ ५	
नवलसिहोत	नवलसिंहोत	१३० १३	
माहसिंह	महासिंह	१३१ ५	
छट्टूद	छट्टूँद	,, २०	
३ पैदल	३ हजार पैदल	१३२ ३	
करार	इकरार	,, ४	
का	को	,, १२	
अघड़	अगड़	१३३ ४	
खाओदी	खासओदी	,, ६	
सोसामा	सीसारवां	,, ८	
कर्नाली	करजाली	,, १०	
सैय्यर	फरुख़ सैय्यर	,, १४	
केसव	के सब	१३४ २	
इक्ट्ठे	इकट्ठे	,, ६	

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	कैफियत
का	को	१३५	१६	
खींचमदिर	खीचमदिर	१३६	६	
चीनीयें	चांनियें	१३७	१०	
सणवाड	सनवाड	१३८	९	
अतराक देन	अनरा फदेन	१३९	७	
जय आपा	जयआपा	१४०	५	
वि० स०	वि० स० १८१३	,,	१५	
रामपरा	रामपुरा	१४१	२१	
५ लाप	५१ लाप	१४२	७	
कान्ज	कन्जे	,,	८	
[illegible]वोर	पवोरे	१४३	१८	
[illegible]ायत	रावत	१४४	६	
सिधिया	संधिया	१४६	५	
छाउकर	छोंदकर	,,	१८	
[illegible]ोर	[illegible]	,,	१९	
[illegible]	[illegible]	१४७	१	
[illegible]	[illegible]	,,	[illegible]	
[illegible]	[illegible]		१८	
[illegible]	[illegible]	,,	२०	
[illegible]	[illegible]	१४९	८	
[illegible]	[illegible]	,,	१७	

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	कैफियत
मेगसिंह	मेघसिंह	१५०	२	
सींगोला	सींगोली	,,	५	
मेवड़	मेवाड़	१५१	८	
वकशो	वक्शी	१५३	१	
नकूॅफ	नकूम	,,	६	
जा	जो	१५४	२	
पींछे	पीछी	,,	२	
निकलने	निकालने	,,	१०	
क	के	१५५	६	
लकर	लेकर	,,	१२	
सवंध	संवंध	,,	१६	
वध	वांध	,,	२०	
शाहपुर	शाहपुरे	१५६	६	
घसार	घसर	,,	१६	
मत	सूल	१५७	१५	
दवैं	देवैं	,,	१८	
हलकर	होलकर	१५८	१	
दरम्यान	दरमियान	,,	८	
न	ने	,,	१०	
उदयपुर चढ़-आया	उदयपर पर चढ़-आया	,,	१०	

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ पंक्ति	पंक्तिया
का	फो	१५८ १८	
क्या	आया	,, १६	
[illegible]	[illegible]	१७६ ८	

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	कैफ़ियत
भीलकार	भीलकोर	१६१	७	
वृन्द्रावन	वृन्दावन	१६२	,,	
स्वरूपसिंह	स्वरूपसिंह को	,,	१५	
बीकानेर	बीकानेरी	,,	१६	
सपदार	सरदार	,,	२०	
लंघन	लंघन	१७४	१	
आराज्या	आरज्या	,,	७	
एजट	एजेन्ट	१७५	१	
फौज	फौज ने	१७६	२	
ओप दी	ओफ़ दी	,,	७	
समाध	समाधी	,,	१५	
एजा	एजां	१७७	५	
शार्दूलासिंह	शार्दूलसिंह	१७८	२२	
शम्भूसह	शम्भूसिंह	१७९	२	
कौंसिल	कौंसिल	,,	४	
म	में	,,	६	
	मंजूर	,,	८	
	झिलोला	,,	९	
का	को	,,	१०	
का	को	,,	११	
हागये	होगये	,,	१२	

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	कैफियत
हाकर	होकर	१७६	१२	
बद	माद	,,	१४	
ठिकना	ठिकाना	,,	१७	
हालसिंह	दलसिंह	१८०	३	
बबारे	बंदोरे	,,	६	
घोरकाल	घोर अकाल	,,	११	
हैं	है	,,	२०	
हैंसियत	हैसियत	१८१	४	
ल सतान	नि सन्तान	१८२	१३	
मगवाया	मगवाया	१८३	१६	
पच	पट्टा	१८४	५	
६५	६५ हजार	,,	,,	
धूमें	धूमें	,,	१५	
मिलकार	मिलकर	१८५	८	
कैशर	केसर	,,	१८	
मार्फत	मारफत	१८७	१४	
तगमा	तमगा	१८८	३	
बोहेडे	बोहडे	१८६	४	
रतन	रत्नसिंह	,,	६	
माडलगढ	माडलगढ़	,,	१७	
जाधपुर	जोधपुर	१६०	६	

अशुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
भीलकार	य वड	यह वड़े	१६०	६
वृन्द्रावन	का	को	,,	१०
स्वरूपसिंह	मुसाहवा	मुसाहवों	१६१	८
बोकानेर	।प्रस	प्रिंस	,,	१७
सपदार	लेन्सडऊन	लेन्सडाऊन	,,	२१
लंघन	कमाडून चीफ़	कमान्डून्चीफ़	१६२	१
आराज्या	मुर्ति	मूर्ति	१६३	१०
पजट	जुविलीं	जुविली	,,	१२
फौज	गवनमेन्ट	गवर्नमेन्ट	,,	,,
ओप दी	जा	जो	,,	१३
समाध	वोल्टर	वाल्टर	,,	१४
पजा	डाईमनु	डाईमन्	,,	१५
शार्दूलसिंह	एजी० जी०	ए० जी० जी०	१६४	१
शम्भूसिंह	गोवर्द्धनविलाश	गोवर्द्धनविलास	,,	१२
कौसिल	पड़पाते	पड़पोते	,,	१६
म	हआ	हुआ	१६५	१०
मजूर	स्वधीनता	स्वाधीनता	,,	११
जिलाला	हा गया	होगया	,,	१२
का	दा वर्ष	दो वर्ष	,,	१५
का	पावन्द	पाबंद	,,	६
	नंवर वैठने	नंबर पर बैठने	,,	१०
	राज्यावास	राजियावास	,,	२१

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	कैफियत
लवाज में	लवाजमें	१६७	८	
नहा	नहीं	,,	,,	
छुटर	छुट्टर	१६८	५	
आया	आये	,,	८	
का	को	,,	१५	
निमत्रण	निमत्रित	,,	१७	
रूलींग	रूलिंग	१६६	३	
रवानह	रवाना	,,	१२	
घरने	करने	२००	४	
१ लाख	१५ लाख	,,	१०	
जी० सी० ओ०	जी०सी०वी०ओ०	,,	१६	
देती	देते	२०१	६	
फरीयाद	फरियाद	,,	८	
जाना	जाने में	२०२	१५	
हा	हो	,,	१६	
बीमारी	बिमारी	२०२	२०	
अतिशयोक्त	अतिशयोक्ति	,,	२२	
उदयपुर	उदयपुरी	२०३	१४	
जाला	जाली	,,	१५	
म	में			
को	के			

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
इन महाराणा नें	ये महाराणा	२०४	८
को	की	,,	१०
तृत्रीयँ	तृतेरियें	२०५	१०
वनवा	वनवाई	,,	१२
चलेगये	चलगये	२०६	१०
आपका	आपको	२०८	५
पेश्वाई	पेशवाई	,,	८
की	का	,,	१२
वि०	वि० सं०	२०९	२
मीडीयट	मिजियट	,,	८
म्युनिसिपाल्टी	म्युनिसिप्लिटि	,,	९
ज्यूडशियल	ज्यूडिशियल	,,	१२
बाद	बाद में	,,	१६
स्वगवासी	स्वर्गवासी	,,	१९
बरदास्त	बरदाश्त	२१०	१
श्री फन्हभूपाल	श्री फतहभूपाल	,,	५
धार	सुधार	,,	११
डल	मंडल	२१२	२
काटा	कोटा	,,	६
मुरड़ा	मुरड़िया	२१३	७
९ बर्ष	९ वर्ष	,,	१३

अशुद्ध
भीलकार
वृन्दावन
स्वरूपसिंह
बीकानेर
सपदार
लंघन
आराध्या
पजट
फौज
ओप द्वी
समाध
पजा
शार्दूलसिंह
शम्भूसिंह
कौसिल
म
मजूर
जिलाला
का

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	कैफियत
जारी किया		२१३	१६	इसका संबंध ऊपर के पेरिग्राफ से है।
दामोदरलाल	दामोदरलाल	२१४	११	
गास्वामी	गोस्वामी	२१५	३	
का	को	,,	४	
वैष्णवा	वैष्णवों	,,	१४	
मान भोरी	मानमोरी	२१८	१	
खुमान	खुम्माण	,,	३	
घालेघा का का	घालेघा का	२१६	२०	
दो	दी	२२०	१७	
हाडाती	हाडौती	२२१	१६	
मिला	मिली	,,	२०	
माडा	मांडा	२२४	१७	
हनूमान	हनुमान	२२५	१३	
वग्ड	वागड	,,	२१	
मेदनाराय	मेदनीराय	२२७	८	
में	में से	२३०	१६	
पोछे	पीछे	२३३	१४	
उदयपुर बड़ा	उदयपुर की	,,	२१	
बहुत से मारे गये	बहुत से			

अशुद्ध
भीलकार
वृन्द्रावन
स्वरूपसिं
बीकानेर
सपदार
लंघन
आराज्या
पजट
फौज
ओप दी
समाध
पजा
शार्दूलसिंह
शम्भूसिह
कौसिल
म
मजूर
जिलाला
का

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
वल्लाँ	वल्ल	२३८	१०
भगकर	भांगर्कर	,,	२०
रुहेलाखां	रुहलाखां	२३९	५
चांदनावड़	चांदनवाड़	,,	१६
फाज	फौज	,,	,,
सिपुद	सिपुर्द	२४६	८

